

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180573

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 83/P14C Accession No. G.H. 1137

Author प हाडी ।

Title चलचित्र । १५।

This book should be returned on or before the date last marked below.

चलचित्र

पहाड़ी

मुद्रक
आर० डी० श्रीवास्तवा
शारदा प्रेस, प्रयागं

मनोवैज्ञानिक उपन्यास

प्रकाशक

प्रकाशगृह, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण : १९४१

मूल्य १)

लेखक की अन्य रचनाएँ :

कहानी-संग्रह :

सफ़र	१॥)
अधूरा-चित्र	१)
छाया में	१)
यथार्थवादी रोमांस	१)

उपन्यास :

सराय	२)
गुनगुन	१)

यह उपन्यास मैंने सन् १९३६ ई० में लिखा था । प्रकाशन की
अड़चनों के कारण आज पाँच साल बाद छप रहा है ।

आज तो रोज़ ही नए-नए उपन्यास पाठकों के हाथ में आ रहे
हैं, मेरा ख्याल है कि यह पुराना उपन्यास भी उनको एकदम बहुत
पुराना नहीं लगेगा ।

लखनऊ

नाग पंचमी '८१.

पहाड़ी

अनुज शारदा को :
जिसे एक दिन मौत ने ढक लिया !

व्यक्ति की सहूलियत की माँग कभी कम नहीं होगी। रोज़ ही आकांक्षा, आशायें और दिल में कुछ न कुछ पाने का तक्राज़ा तो रहेगा ही। तभी मजबूरी में इन्सान अपने को सन्तुष्ट साबित करता है। यही है ज़िन्दगी का कारोबार और उसका धन्धा ! जिसके आगे आज तक कोई भी बिना विद्रोह नहीं टिका है। तब मनुष्य कितना ही अपने को मनावे बुझावे, रोज़ की दिनचर्या में सीमित भर, जीवन कोरा ही उसे मिलेगा। इसीलिए वह पंगु और असमर्थ है। करें क्या। यह दिमागी भगड़ा कभी अकारथ नहीं गया। उसको अपनाये बिना, उत्साह भी बाक़ी नहीं बचता है। यह सब तत्वहीन, अविधान धारणा सर्वदा चालू रहेगी। व्यक्ति तो जीवन-जंक में अटक जाता है। उसका आखिर कितना अपनत्व है। यह तो बनिया के तराजू वाला रोज़गार है। जहाँ दुःख, पीड़ा और भावुकता की बातों से जल्दी जल्दी जीवन तोलना आदमी सीख लेता है। इस ज़रूरत को अपेक्षित गिन, इन्कार कदापि नहीं कर सकता। तो व्यक्तित्व उठ जाता है। उसकी छाया के नीचे मनुष्य उपकार का सवाल पेश करेगा। अपनी उलझन में सबसे सरोकार वाली अनुभूति छीन लेगा। 'बाक़ी' फिर भी उसे नहीं मिलता। अपनी भूल और अवज्ञा का निपटारा कब, कोई कर सका है। तब अकारण दुनिया भर में फैलने की चाहना ग़लत है। वह अपनी ज़रूरत नहीं। न आज, भविष्य के लिए रुकावट का कोई बाक़ी हथियार है। किसी धारणा के

प्रति मोह और लोभ उठाना, इसीलिए अपने को खोलना है। और इस तरह प्रदर्शन करने की प्रवृत्ति, अपना मूल्य कम कर देती है। यह सब-सब जानते हैं। दुनिया की बड़ी आबादी में भीड़ भी है, अकेले रहने के लिए मनुष्य अपनी उदारता को फिर न जाने क्यों बिसार देता है। उसकी ख़्वाहिश अपनी निजी होती है। जिस पर अधिक राय जान लेने का ख़याल उसे रहता भी नहीं है। इस हालत पर अपना-अपना दरजा है। जिसका निवारण कभी होगा नहीं। और कुछ.....

महेश ने इन्टर-क्लास के डिब्बे के भीतर पाँव रखा, तो ठिठक गया। रेलवे का वह स्टेशन कुछ ख़ास बड़ा नहीं था। वह बड़ी देर से निरुद्देश्य खड़ा, गाड़ी का इन्तज़ार कर रहा था। प्लेटफ़ार्म की व्यवस्था पर सोचता। कितनी सुन्दर सजावट थी। उधर चाय का स्टाल, फिर छोटा पोस्ट ऑफिस, स्टेशन मास्टर का कमरा, टिकट घर, आदि-आदि सब छोटी-छोटी तज़्जियों से चिन्हित थे। कुली और फेरीवालों की एक घनी तादाद थी। क्रदम-क्रदम पर क्रानून की ओर आकर्षित करनेवाले पोस्टर टँगे थे। कुछ पोस्टर कहीं रङ्गीन विज्ञापन का सवाल भी हल कर लेते। नीचे था लोहे की पटरियों का जाल जहाँ कभी खटर-खटर की आवाज़ होती रहती। ऊपर कुछ हट कर एक बड़ा पुल था, जो पटरियों के ऊपर सिंदूरी रङ्ग में पुता, भारी लगता। उस पुल पर अभी भी आदमी खड़े, तमाशा देख रहे थे। उधर कुछ दूर आँखों की पकड़ में लोको की इमारत आती। वहाँ बहुत धुआँ फैला हुआ था। उसने उन लोहे की पटरियों वाली, समानान्तर दूरी को माँपा। आगे-आगे वह बढ़ गयी थी। बड़ी दूर आगे वह खुद छिप जाती। उसके बाद भी आबादी वाले शहरों का ध्यान आता। वह दूरी एकाएक दिल को भेद लेती

कितनी बड़ी है यह दुनिया। जिसका भूगोली-विस्तार किताब की तरह सीमित नहीं। जहाँ एक छोटे से नक्शे में बिन्दु लगा कर, शहर साबित हो जाते हैं। एक बारीक रेखा नदी का रूप ले लेती है। सागर-महा-

सागर रङ्ग भरने से बन जाते हैं। और मोटी काली रेखा पहाड़ों की ऊँचायी निर्धारित करती है। इस तरह जो किताब अपने समीप लगती है, फैल कर वही अचरज सौंपते नहीं चूकती। वह ज्ञान अपने को उठाता है। जैसे कि आदमी और उसकी आदमियत का मुकाबला भी इसी तरह होगा। लेकिन उस स्टेशन के बाद !

और उस छोटे डिब्बे में एक युवक बैठा था और पास ही एक युवती बच्चे को गोदी से लगाये लेटी हुई थी। कभी ज़रा आँखें खोल लेती। फिर उनको अंधमूँदी कर, बिलकुल सो-सी जाती। वह बहाना उचित लगता। तब कुली ने सामान भीतर लगा दिया। वह कुछ देर शून्य दृष्टि से देखता रहा। मानो कि स्टेशन पर बिखरी सारी चीज़ों को अपने में सँवार कर रख लेने की क्षमता उसमें हो। चढ़ते-उतरते मुसाफ़िरों का कोलाहल, फेरीवालों की आवाज़। वह फेरीवाले हर एक को सौदा बेचने को तैयार थे। अपने बेचने के सारे पहलुओं से खरीदार को बहाना बना लेने का मौक़ा देना नहीं चाहते थे। उनकी ऊँची आवाज़ भीतर दिल में फैलकर, एक मोह उस वस्तु के लिए उभार देता था। तब महेश तो नीचे खड़ा का खड़ा सब बातों की परवाह बरतना सीख लेने की धुन में था। किसी तरह जैसे कि वे सब लोग कठपुतली की तरह उस चौड़े-चौड़े पत्थर बिछे, प्लेटफार्म पर अपना धन्धा निभा रहे हों। जिसकी चर्चा कोई हितकर भी नहीं है। वह क्या देख रहा था, समझ नहीं सका। गाड़ी जब चलने को हुई चुपचाप वह डिब्बे में बैठ गया। फिर पटरियों के जाल की चीरती हुई वह गाड़ी आगे निश्चिन्त बढ़ती चली गयी। वह छोटा स्टेशन पीछे शून्य में-सा खो गया था। जहाँ नज़र छेद नहीं पाती थी।

एक सभ्य श्रेणी के लोग कैसे इस दरजे में सफ़र करते हैं। अधिक देर तक परिचय का मोहताज भी कोई नहीं रहता। तब उन लोगों के बीच बातें जारी हो गयीं। साधारण परिचय के बाद मालूम हुआ कि

उसका साथी मनोहर अभी-अभी बी० ए० पास कर एम० ए० में पढ़ रहा है। विश्वविद्यालय के साधारण हाल-चाल की सीमा से बढ़ कर समाज-शास्त्र, राजनीति व और विषयों की ओर बातों का रुख अब हो गया। महेश की नई नौकरी थी। उसके अपने अनुभव ही कोई कम दिलचस्प न थे। ठीक बातों के बीच दोनों कभी-कभी हँस भी देते थे। वह हँसी उस कमरे के भीतर गूँज उठती। और कोई मुसाफ़िर वहाँ नहीं था। और तकल्लुफ़ बरतना कभी महेश की आदत नहीं रही। वह युवती जमाही ले, कभी जाग-सी पड़ती, फिर सावधान हो आँखें मूँद, नींद की अवहेलना न कर सोने की फ़िक्र में थी। और महेश जान गया कि वह युवती अपने पति के पास जा रही है। मनोहर उसका देवर है। उसका स्वामी दफ़्तर में नौकरी करता है। परिचय का अधिक ख़याल उसे नहीं रह गया। इस अधिकार की उपेक्षा भली लगी। वह क्यों अपने बचाव के लिए उनकी बातों को कुरेदता फिरता। यह तर्क ठीक नहीं है। वह मनोहर ख़ास बातें न करता था। वैसे करनी जैसे उसने नहीं सीखी। साथ में अपने में वह कुछ बातें भी कर कभी-कभी कुछ समझ लेने के लिए, महेश की ओर देर तक देखता ही रह जाता था। महेश को उन सब की कोई अधिक परवाह नहीं थी। वह वैसे उस पर अनुचित बोझा डालना भी ठीक न समझ चुप बड़ी देर तक रह जाता। और गाड़ी चल ही रही थी।

महेश अभी-अभी कॉलेज की दुनिया से बाहर निकल नौकरी करता है। अपने लायक़ प्रयाप्त पैसे उसे मिलते हैं। दुनिया का कोई भी फ़रेब उसे पसन्द नहीं है। उसका सरल जीवन है। जहाँ सहज ही वह निभ जाता है। उसके बाहर हाथ फैला, अब अधिक जान-पहचान वाली ज़िम्मेदारी का आर्डर वह नहीं रख गया है। निपट खाली जीवन है। उसमें प्राण डालने की चिन्ता उसे कभी नहीं घेरती है। उसकी अपनी सारी ज़रूरतें पैसे से पूरी हो जाती हैं। वह भी जानता है कि सब कुछ

पैसे पर निर्भर है। आप है, नौकर, ऑफिस का दायरा और साँभ को दोस्तों की एक बड़ी तादाद के बीच चुपके-चुपके चलता है। सब कुछ पूर्ण भले ही न हो, क्लिहाल कोई खास कमी मालूम नहीं पड़ती है। न किसी भावुकता के लिए मन में बेचैनी और छुटपटाहट ही बाक़ी बची है। वैसे कभी तो निराशा जीवन में फैल धुँधली पिछली यादगारों को बख़ेरने लगती है, रोगी वह अपने को समझने लगता है। कुछ अज्ञेय चाहनायें दुर्बल मन को पकड़ लेती हैं। यह अवस्था देर तक नहीं टिकती है। दिल साफ़ हो जाता है। कोई भय व्यर्थ डराता भी नहीं। अपने भीतर कहीं कुछ पीड़ा खा जाती है। जिसे वह टटोलता नहीं है। अपनी सामर्थ्य जैसे कि भरोसा मानना ही, उसकी आग़िरी सीख थी। हर गाँव में नज़्दोकी रिश्ते की एक चाची है। अपना सगा यदि दुनिया में किमी को साबित करना ज़रूरी है, तो वह उस सूची में आजाती है। वह रिश्ता अख़रता नहीं है। वैसे रोज़ कभी-कभी यार दोस्तों के रंगीन स्वत आजाते हैं। उनका प्रभाव देर तक टिका नहीं रहता। उनका वेग क्षणिक एक उफ़ान उसके दिल में लाकर, बुझ जल्दी जाता है। उनका कोई खास महत्व भी नहीं है। अपने में सीमित उसका छोटा परिवार है। उसमें बाहर भाँकने का अवसर नहीं मिलता। उसकी अपनी लाइब्रेरी है। वहाँ किताबें हैं। या दैनिक और मासिक-पत्रों के भीतर वह बैठा रहेगा। एक मिनट की फ़ुरसत नहीं। एक क्षण भी फ़िज़ूल नहीं जाता है। ऐसे आदमी कभी अपने दिमाग़ और दिल से खेलते हुए भी नहीं चूकते हैं। बेकार वक्त इसके लिए निकलते अधिक देर नहीं लगती है। तब महेश ने भी विद्रोह पाला है। उसे भी निराशा घेरती है। उसको भी बौद्धिक रोगों का शिकार होना पड़ता है। वह पीड़ा भी अनुभव कर लेता है। वह इससे कदापि इनकार नहीं करेगा। यह सब अक्सर जोक की तरह चिपट उसे छुटकारा नहीं देना चाहता है।

एक अवस्था के आने पर व्यक्ति सोचता है कि वह अब क्या

करेगा। जीवन भी परिवर्तन का भूखा है। मौसमों के बदलने के साथ साथ व्यक्ति की भावुकता भी पिछलती है। यह इन्सान उम्र के आते-आते स्वाभाविक कई आदतों को साँप की केचुली की तरह फेंक, अपने को नई आदतों से ढकने का इरादा कभी नहीं भूलता है वैसे एक अन्दरूनी आग सबके दिलों में सुलगती है। व्यक्ति के मानसिक विकास पर वह निर्भर है। पैनी बुद्धिवाले अपने को अधिक उत्तेजक पाते हैं। जब कि और लोगों में यह बात नहीं। महेश इससे बरी नहीं। अब उसका दिल कमज़ोर होता जा रहा है। कभी वह महसूस करता है कि, कोई खट खट खट कर, उसके दिल पर हल्की-हल्की चोटें लगा रहा है। तो फिर अनायास दिल की धड़कन में किसी की आहट मिलती है। अधिक जानकारी न होने पर भी, नासमझ वह नहीं। सारा बर्त्ताव, पूरा-पूरा समझता है। अज्ञात किसी नारी के लिए उसके दिल में जगह बनती जा रही है। और किसी नारी का अज्ञेय स्वर, एक आकृति बना, उसके जीवन ढाँचे के बीच, चुपके छुप जाना चाहता है। वह उस नारी को पहचानता है। वह तो नारी-मात्र की सहायता से बनी 'एक नारी' है। नारी की तरह ही..... ख़याल मन में फैला कर, वह जाल बुनता है — अब गृहस्थ बनेगा। ताकि ऑफिस से मलिन लौट, थका जब वह आवे, कोई आसरा देखता रहे। उसका भार ले ले बार-बार सवाल पूछ सहरा दे, नया जीवन प्रदान करदे। और अपनी सहानुभूति में खड़े होने, उसे मजबूर कर दे कि, वह भाग नहीं सके। उसकी पीड़ा को अपने नारी-आँचल से ढक, छुपा ले। वह कुछ भगड़ा नहीं करेगा, तकरार नहीं बढ़ावेगा। उसकी सब बातें मंजूर कर वहीं-वहीं पड़ा हुआ रहेगा। अपना वह हाल वह स्वीकार न जाने रोज़ कर आगे उस पर अधिक क्यों नहीं सोचता है। इस तरह जैसे कि वह सारी जानकारी के बीच, अपने को भूलना स्वीकार कर कुछ कहता नहीं है। अपनी हालत पर वह जैसे कि दवा नहीं चाहता हो, फिर भी.....।

तो, वह महेश नौकरी करता है। किन्तु उसके ऑफिस की दुनिया बहुत कड़वी और तीखी है। वहाँ कुछ भी सही नहीं। वहाँ रहते-रहते आत्मा को रोशनी बुझ गयी है। उसके और नौकरी के बीच बहुत सारी रुकावटें हैं। मन का सारा उत्साह तभी चूक जाता है। वहाँ का दुनिया-दारी वाला व्यवहार बहुत परेशानी बढ़ाता है। आज वह अब सब कुछ सह लेता है। नौकरी करता है, कारण कि वस्तु पर ही मनुष्य का मूल्य और आदर निर्भर है। उतना ही वास्ता उसका भी नौकरी से है। अपने मतलब को समझ, वह अपने प्रति उदार नहीं। उसके जीवन-पत्रों पर इसी लिए कोई स्वास चिन्ह नहीं हैं। वह सब कोरे-कोरे पड़े हैं, उनको रंगीन बनाकर पेश करने की कृतई कोई फ़िक्र उसे नहीं है, रुपये से सब शारीरिक सुख देय बन जाते हैं। फिर भी मानसिक उपचार का हेतु वह नहीं बन पाता है। अपने व्यक्तित्व को नौकरी में मिटाकर सब कुछ खो, वह बार-बार चौंक कर कभी न जाने क्यों अपने को टटोलने लगता है। अपने को वह दफ़्तर की मशीन का एक काँटेदार पहिया मान लेता है। जो उसके बाद भी मिल जावेगा। स्वास क़ीमत उसकी नहीं है। मज़दूरी पर और आदमी मिलते भी अधिक स्वास देरी नहीं लगती है। तब आदमी क़ीमती जानवर नहीं है। वह तो अवसर परिस्थितियों के साथ सस्ता और मँहगा बनता है। महेश बहुत सारी बातों पर सोचता है, उनपर विचार और तर्क भी करता है। अपनी राय भी उसकी होती है। उसकी अपनी धारणाएँ हैं। वैसे किसी तथ्य पर वह नहीं पहुँच पाता। यह जानकर कि, घन्टे, मिनट, सेकिंड करके दिन तो गुज़र ही जायेंगे। बाकी बचेगा एक काला धब्बा ! जिस पर उसके अपने नाम के लिखे अक्षर भी नहीं चमकेंगे। यह सब किसी एक कसौटी पर ही परखा जाता है। वैसे वास्तव को कितना ही धोलें, सत्य मिटता नहीं है। पंगु बनकर जीवन चल सकता है। यह कुछ आश्चर्य नहीं। लूले, लँगड़े, अंधे, सब दुनिया के बीच भीख माँगकर ही जीवित रहते हैं। उनका विवेक उनको

दुदकारता नहीं है। वही उनका धन्धा है जिस पर उनको शर्म नहीं लगती है। अपना-अपना रुख और जज़्बात का सारा सवाल है। नहीं आदमी 'वैलन्स' नहीं पाता। बिना इसके उसको दुनिया में खड़े होने की कोई भी सहूलियत नहीं थी। पैसे की ईमानदारी पर आदमी कभी ठीक खड़ा नहीं रहा। वह ईमानदारी कभी तुलना नहीं रही है। अन्यथा धन को खड़्के में गाड़ कर रखने वाले साहूकार और भीख माँग कर पैसा जमा करने वाले कौड़ी में इतना भारी अन्तर नहीं दीख पड़ता। दोनों में कोई वैसे फ़र्क नहीं है। एक अपनी पंगुता का उपहास बनता है, तो दूसरा सवल होकर, अपना रोज़गार चलाता है।

और उसकी चाची बूढ़ी है। दूर, बड़ी दूर, गाँव में रहती है। माँ की हैसियत से महेश को बचपन में उसने पाला है। उस बुढ़िया का समूचा ख़ाका उसे याद है, बहुत बूढ़ी वह तो है। उससे हर महीने रुपया पा, स्नेह पुलकित हो कई आशायें वह भेजती है। देवी-देवताओं के फूल, और रोली भी चिट्ठियों में भिजवा देती है। साथ में आस पास के गाँवों की सयानी लड़कियों का ज़िक्र रहता है। उनका सही-सही हवाला, अच्छा ख़ानदान, स्वास्थ्य, शिक्षा-शिष्टाचार व कई और ज़रूरी बातों की चर्चा होती है। सब कुछ दुहरा-तिहरा कर अनुरोध किया जाता है कि, अब देर करनी अनुचित होगी। अच्छे लड़कों को देर तक कारा नहीं रहना चाहिए। गाँव के हर घर में बहू आ गयी हैं। गाँव का कोई अपर-प्रायमरी पासशुदा लड़का, इस सबको लिखने का भार ले लेता है। सब-कुछ मोटी क़लम से टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में लिखकर भेजता है। शिक्षा के साथ तन्दुरुस्ती के नुस्खे भी होते हैं—तू अच्छा रहा कर। अपनी हिफ़ाज़त करनी चाहिए। नौकरी पर टक लगाया कर, अब तू पक्की नौकरी पर लग गया है। बहू.....!

बार-बार बहुत कुछ वह लिखती है, अपने अशीर्वादों की सहायता से बहू का गुणवती होना भी जैसे कि उसे मालूम हो। और सारे भविष्य

की तक्रदीर सन्मुख रखना अब उसका कर्तव्य बाकी बचा है। सब जानकर भी महेश चिट्ठी का ठीक-ठीक जवाब नहीं देता। चाची को नाबुश करने की चाहना उसकी नहीं। फिर भी सँभल कर चिट्ठी का जवाब देगा। गाँव का ढेर सारा हाल-चाल पूछेगा, फिर अधिक चर्चा न कर, आज्ञाकारी अपने को स्वीकार कर अधिक बातों को टाल दिया करता है। अब इसीलिये चाची का उत्साह अधिक इस ओर नहीं। कभी बुढ़िया डरती है कि, महेश मेम लाकर, उसका सारा भ्रान्दानी रुतवा कहीं कम न कर दे। यह आशंका वह पेश करने में भी चूकती नहीं है। महेश पढ़कर हँसता है। चाची को इन बातों पर वह बार-बार चिढ़ाने कुछ न कुछ लिख कर भेज देगा। अब चाची बहू की लालसा के प्रति उदासीन रहने लगी है। महेश के हट के आगे उसका कोई वश नहीं चलता है। यही ताना वह चिट्ठियों में लिखकर भेजेगी। फिर भी अपने उस गाँव से आई चिट्ठी पर महेश की ममता है। वह पूरी चिट्ठी पढ़ कर, चाची की ख्याली तस्वीर आँखों के आगे ला, बचपन वाली दुनिया में काफ़ी एक अरसे वाला जीवन दुहरा लिया करता है। उसको इसमें बहुत सुख मिलता है।

वह 'बहू' शब्द उसे बहुत प्यारा लगता है। महेश इस बात से इन्कार नहीं करता है। बार-बार नारी के इस रूप पर अटक, कुछ सोचना शुरू कर देगा। और इसी तरह बड़ी देर तक, अपनी उलझन में रह जाता है। अपने मन लायक ढाँचा कभी गढ़ने लगता है। कई-कई लड़कियों की सूरते याद आतीं। सबका उसके जीवन से मेल नहीं मिलता। बहुत सी बचपन की जान-पहचान वाली लड़कियाँ अब, अलग-अलग गृहस्थों में थीं। तब क्या वही इस तरह रहेगा। समाज का कोई नियम उस पर लागू नहीं हो सकता है। वह जैसे कि स्वतन्त्र अपनी इच्छा का ही हो। कैसे रोज़ कई दुनिया में खड़ी लड़कियाँ आँखों से ढक जाती थीं। वह सब खूब सलोनी लगती। और उसके मन से नारी के आदर वाली

जगह भर जाती थी। कभी वह लड़कियों के एक फिरके से आँख-मिचौनी खेलने लगता। डर तभी जाता कि, सुन्दर उन नारी गुड़ियाओं में क्या वह एक को छूँट कर उसकी सहानुभूति पा सकेगा? यदि बाहरी सुन्दरता ही मिली, तब क्या वह करेगा। अपनी ज़िन्दगी के बीच कब हर एक को जगह दी जा सकती है। यह वह नहीं चाहता। अब अपनी अस्वस्थता की वजह हर एक से बात-बात में भगड़ा क्यों वह मोल ले लेना चाहे। अपने पहचान की, एक अपनी चीज़ उसे चाहिए। इस उदारता का वह कृतज्ञ है। अपनी बनाई आदत से वैसे दुःख मोल ले, वह सारा असह्य भार सँवार लेगा। किसी को अपने जीवन का बोझा सौंप कर, भँभट मोल लेनी उसे आज नहीं जँचती है। नारी को अपने नज़दीक पा लेने की चाहना इसीलिए अक्सर, उपेक्षा और अवज्ञा में मिट जाती है। कुछ हासिल न होकर, किसी भी नतीजे पर वह नहीं पहुँच पाता। क्या बाक़ी भी बचे!

म्युनिस्पेल्टी की सड़कें हैं। वहाँ आँखें खोल कर चलना वह जानता है। वहीं मोटरें चलती हैं। घोड़ा-गाड़ी, और ताँगे भी रहते हैं। शहर के एक ओर कम्पनीबाग़ है, तो आगे माल रोड। दुनिया के कुछ लोग हैसियत वाले हैं। कुछ किसी से भी सरोकार नहीं रखना चाहते हैं। बात-बात में फैसला करना भी ठीक नहीं होगा। असाधारण वह व्यवहार लगता है। यदि लोग बड़े हैं, उनकी अहमता कोई उपाय न बन सकेगी। और कोई छोटा है, तो उसकी अपनी नीति है। अमीर हों चाहे ग़रीब, भले या बुरे—दुनिया का कारोबार किसी न किसी तरह चलता ही रहता है। मुक़ाबला करना तो एक विडंबना है। उसमें सहलता नहीं। उससे छुटकारा पाना ही हितकर है। आखिर अपना मूल्य, अपनी दृष्टि में कोई भी कम करना नहीं चाहता है। इसे अनुचित विवेक कौन मान सका। महेश नागरिक के अधिकारों की तरह हर एक बात सोचा करता है। उनको अपनी पैनी दृष्टि से वेध-वेध कर कुछ अन्दाज़ लगाना, सीख रहा है।

रोज़ाना चर्चा के बीच कभी-कभी, पीठ पीछे चुपके-चुपके पत्नी की मुस्कुराहट न जाने कैसे वह पा लेता है। यह अब कोई नया अनुभव नहीं रह गया है। उस अज्ञेय पत्नी से कई सवालों के समाधान की फ़िक्र उमे है। फिर भी वह अपने को अकेला ही पाता है। सब जैसे कि मृगनृणा ही हो। कुछ कमी तब जीवन में महसूस होती है। वह जैसे कि अचल है। और चारों ओर से उसको कूड़ा-करकट के ढेर ने ढाँक लिया है। वह हिल डुल नहीं सकता। तब गृहस्थी यदि एक कोरे 'ग्राफ-पेपर' की तरह होती, व्यक्ति ठीक तरह से उस पर प्रयोग कर लेता। वहाँ शतरंज की चालें चल कर, सारा ज्ञान जमा करते कुछ अधिक देर भी नहीं लगती। बुद्धिवान हर एक इन्सान को होना ही चाहिए। बिना इन सबके काम नहीं चल सकता है। वह भी छोटे-छोटे भगड़ों को निपटाने वाला ज्ञान सीख, बलवान अपने को बनाने की धुन में है। इस तरह समस्या को हल करने वाले पहलुओं पर विचार किया करता है। तो भी गृहस्थी लक्षण पर ही सीमित नहीं है। उसके माध्यम वाला ज़रिया, खेल की तरह नहीं। और न इसे अग्राह्य वास्तविकता कह कर टाला जा सकता है। गृहस्थी का अपना एक दरजा और व्यापार है। एक निपटारा आपसी वहाँ होता है। जो कि मान्य है— उस समझौते की तरह, जिस पर अपनी निजी राय देने के अधिकार से मनुष्य जाति कभी वंचित नहीं रही।

महेश को एक दिन चाची की चिट्ठी मिली। अपने सारी ज़िम्मेदारी के पहलू पेश कर, उस गृहस्थी के भार लेने वाली, आदि कथा से आज तक वाला पूर्ण विवरण, गद्गद् शब्दों में किया हुआ था। तब महेश कितना छोटा था। उसकी माँ एकदम मर गयी। उसका अन्तिम अनु-रोध था कि महेश आदमी बने। यह भी सुझाया था कि पास के गाँव वाली लड़की की माँ अब अधिक इन्तज़ार नहीं कर सकती है। वह लड़की की माँ से करीब-करीब रिश्ता तय कर चुकी। वह अब हो जाना चाहिए। नहीं वह कै दिन सयानी लड़की को उसके भरोसे रोक सकते हैं।

लड़की के गुणों की चर्चा कच्चे अक्षरों में किसी नवसिखिया ने टूटे, कटे-फटे अक्षरों में लिखकर भेजी थी। महेश ने कोई जवाब नहीं दिया। अपने इस अधिकार पर अब वह चुप रहना सीख गया था। कुछ थोड़ी वचन की याद आती। कभी मेले से लौट कर, रात भर, उस परिवार में वह टिका था। वह लड़की वहीं देखी थी। तब यह मालूम थोड़े ही था कि, वह उसके योग्य निकलेगी। बहुत धुंधली वह याद थी। कुछ भी साफ़ न दीखती। न वह उसे चमकाने का पक्षपाती ही था। और अपनी गृहस्थी का अधिक ढकोसला न कर, वह अपने जीवन को ठीक ठीक तोल कर चला रहा था। अपनी बुद्धि पर विश्वास कर, यह निश्चित पाता कि वह ठीक है। किसी को उसकी व्यक्तिगत बातों से सरोकार रखना उचित नहीं है। न उसे अधिक परवाह कर लेने का वक्त ही है। वह फकड़ ज़रूर है, पर सस्ता बिल्कुल नहीं है। न वह अपना मूल्य कम करने का पक्षपाती ही है। अपने चारों ओर फैली भीड़ के प्रति उदासीन रहना सीखकर, अधिक वह नहीं सोचता है, कि भविष्य क्या होगा। यह उत्साह कदापि उसे नहीं है। न वह अपनी आदमियत को घिसकर दुनियादारी में शामिल होने की ओर चिन्तित है।

इस तरह अपनी देखभाल वाला सवाल हल कर, इन्सान अपने चारों ओर एक दीवाल खड़ी कर देता है। इस तरह कि, अपनी बातों को चीर-फाड़ कर, वहीं उनको देख सके। दुनिया के प्रति उन्मुखता बरत, सावधान पग-पग पर फिर रहता है। और बुद्धिवाद चारों ओर इस तरह रोग की भाँति फैलता जा रहा है, कि उसकी चपेट में हर एक आ जाता है। महेश उसको समझ कर, हर बात में पक्का बनता चला गया और आज कहीं अपने लिए वह लोभ नहीं बटोरता है। जैसे कि यह दुनिया और उसमें फैली धारणाओं को वह कागज़ पर बनी पेनसिल की लकीरों की तरह मिटा सकता है। वह सबल है ही।

काली-पूजा की छुट्टी खत्म हो गयी । महेश अपने एक दास्त के पास इन दिनों चला गया था । कल ऑफिस खुलेगा । वह डिब्बे में बैठा हुआ, मनोहर से बातें करता रहा । मनोहर की बातों के बीच में एक अड़चन लगती थी । बार-बार वह सोई हुई भाभी को इसीलिए देख लेता जैसे कि लिहाज़ बरतना ज़रूरी हो । उस युवती को नींद नहीं आयी थी । वह आँखें मूँदे पड़ी थी, पड़ी ही रही, कि बेबी रो उठा । वह भी खुद आँखें मलती जाग पड़ी । मनोहर ने एक और बर्थ से गिरी दरी उठाकर, सँवारते, थिछादी । युवती ने ऊनी चादर बच्चे को उड़ा दी और थपथपाकर सुलाने लगी । भारी-भारी सिसकियाँ लेकर, बेबी फिर सो गया । युवती ने अब खिड़की से बाहर देखा ही था कि, कोयले का कोई कण आँख में बैठ गया । मनोहर देखकर सावधानी से पूछ बैठा, “निकल गया है ।”

“नहीं, अभी तो यहाँ करक रहा । ”

“कहाँ” । मनोहर उठ बैठा । भाभी के पास जाकर, एक सर्जन की तरह आँखों की पलकें उठाकर, रुमाल पर कोयले की कण निकालने की कोशिश की, फिर भी आँखें दुखती रहीं । आँसू बहते रहे ।

महेश अब बोला, “आँखें मलिये नहीं । नुकसान करेगा । पानी से धोकर देखिये ।”

युवती चुपचाप उसकी आज्ञा को मानने को तैयार हो गयी। फिर मनोहर ने कोशिश की। आँखों का दुखना बन्द हो गया। युवती अब सँभल गयी, अपनी इस उच्छृङ्खलता के लिए लाज से भर, बेबी के पास लेट गयी। आलस्य ने घेर लिया। आँखें छुत पर फैला दीं। या अनायास वह, उन दोनों की ओर देखने लगती थी। अर्थहीन उस दृष्टि की परवाह किसी ने नहीं की। और सच ही उसने आँखें मूँद लीं। महेश सब कुछ देखकर भी चुप ही रहा। युवती को फिर भी नोद नहीं आई। वह आँखें खोल चारों ओर देखने लगती थी। वे आँखें जब महेश की पकड़ आतीं, तो वह हिचक के मारे संकुचित हो जाता था। वह मनोहर की भाभी जैसे कि उसकी भी कोई सगी थी। उस बेबी की माँ को, वह जैसे एक अरसे से पहचानता हो। अपने भीतर स्वयं वह कोई भी निर्णय देने को तैयार नहीं था। न उसने परवाह ही इसकी की।

महेश ने अब सिगरेट-केस निकाला। एक सिगरेट खुद निकाल, मनोहर को भी सौंप दिया। मनोहर ने नहीं ली। भाभी की ओर इशारा कर, वह सहम सा गया। महेश माना ही नहीं। दोनों ने सिगरेट सुलगा लीं। महेश धुआँ खिड़की से बाहर फूँकने लगा। वह खिड़की से बाहर देख रहा था। कुछ सोचा नहीं। भीतर की ओर उसने दृष्टि फेरी कि युवती पर नज़र पड़ी। वह मुस्करा रही थी। अपना भीतरी कुतूहल वह छुपा नहीं सका। हँस पड़ा। मनोहर उस तीव्र हँसी को पाकर, चौंका। तभी गाड़ी एक स्टेशन पर खड़ी हो गयी थी। वह युवती जग कर ही मनोहर से पूछ बैठी, “यहाँ गाड़ी कितनी देर ठहरेगी।”

“शायद दस मिनट।” महेश बोला और स्टेशन से बाहर देखने लगा। वहाँ खूब चहल-पहल थी। वह सब फीकी लगी। वह उस नारी—मनोहर की भाभी की मुस्कान पर सोच रहा था। मनोहर को सिगरेट पीते पकड़, मूक-समाधान था उसका; मुझसे छुपाने और भूठ बोलने से क्या फायदा है। मैं तो सारी करतूतें जानती हूँ। पीते हैं, पिया करं।

चोरी ठीक नहीं होती। मैंने मना ही कब किया है। ऐसा थोथा आदर मुझे पसन्द नहीं।

उस युवती ने तब तक, मनोहर से बाल्टी में पानी मँगवा लिया था। खुद कटोरदान निकाला। महेश ने घड़ी देखी, साढ़े नौ बज गए थे। इस बीच युवती ने खाने का सामान खाली बर्तन पर लगा दिया। एक किनारे बैठ कर, महेश चुपचाप 'इबसन' की मोटी किताब खोले, पढ़ने लगा। उसके नाटकों में आधुनिक-नारी का पुराने आदर्शों के प्रति भारी विरोध मिला। जैसे कि आज की नारी स्वयं जिस तरह चाहे, गृहस्थी का निर्माण कर, उसे तोड़ भी सकती है। पति उनकी दृष्टि में समाज का एक पुरुष-मात्र है। गृहस्थी की आधुनिक-रूपरेखा पर, बुराईयों की और तीव्र इशारा, वे करती हुई मिलेगी। आदर्शता जैसे छिप सकती है, और बुराई को फैलाना ही चाहिए। आदर्शता का ढकोसला वैसे सब कुछ ढक लेता है। 'इबसन' उस सारी बुराई को खोल कर पेश करते हुए, अपनी राय देता है। समाज को स्वयं चलने देने की हिदायत उसने दी है। वह निर्माण पर विश्वास करता है। इस तरह कि काट-छाँट कर फिर नई नींव पर गृहस्थी की संस्था कायम की जावे। तब पुरातन से चलते कानूनों में भी तब्दीलियाँ होनी चाहिए। वे कड़े नहीं मिलेंगे। उन पर अपना अधिकार साबित करना अनुचित बात है। तो रोज़ का नया-नया असर भुलाया नहीं जा सकता है।

“कुछ खा-पी लो। किताबों से पेट तो भरेगा नहीं।” मनोहर बोला।

महेश ने किताब पर से आँख उठा कर, उसे देख, कहना चाहा— मुझे भूख नहीं है, कि किसी ने फुर्ती से उसके आगे खाना परोस दिया। मावधानी बरतने पर भी हाथ की चूड़ियाँ बज उठीं।

तब बोला महेश, “किताबों को खाकर भी एक ज़माना काटा है। खाना तो उन दिनों जरूरी नहीं लगता था।”

“इम्तहान के दिनों में न !”

“नहीं, उसके अलावा, बचपन में जासूसी उपन्यास पढ़ते-पढ़ते नींद और भूख की फ़िक्र नहीं रहती थी।”

“बात है सच।”

“वैसे जासूसी उपन्यास भी थके दिमाग़ को ताज़ा बना देते हैं। उनकी सनसनी पैदा करने वाली घटनाएँ, शरीर को स्वस्थ करने के काम भी आती हैं। हृदय से उनका निकट का सम्बन्ध होता है।”

वह युवती तो बातों में बाहर सोच रही थी, खाने वालों पर कि, वे कब खाना शुरू करेंगे। अब महेश भी चुपचाप खाना खाने लग गया। ज़रा कोई चीज़ चुकती, फिर और पड़ जाती। उसे मना करने का मौक़ा ही नहीं मिलता था। आख़िर वह कितना खाता। अभी-अभी चाय उसने पी थी। फिर स्टेशन पर छुटाँक भर चिलगोज़े भी वक्क़ काटने की लिए वह साफ़ कर चुका था। मन भरा हुआ था। भूख़ न थी। वह युवती फिर भी अपनी सारी नारी-अनुभूतियों को सँवार, उस पर अपना ध्यान लगाये थी, जान नहीं—पहचान नहीं, कौन जाने आगे कभी मिलना भी होगा या नहीं। वह मनोहर की भाभी है। मनोहर अधिकार-पूर्वक उस गृहस्थी में रहता है। महेश तो कोई नाता रिश्ता नहीं माँगता है। उस युवती के अन्न खिलाने की कृपा का भी कृतार्थ है। ज़िन्दा रहने को अन्न खाना निहायत ज़रूरी है। उसके बिना आदमी का कोई काम नहीं चल सकता है। यह खाना, जो कि वह युवती देन-सी सौंपती अपना हक़ इसे समझे हुए थी! उससे जीवन का सन्तोष मिल जाता। नारी उदारता में अड़चन और परदा अधिक नहीं बरतती है। खाना कैसा है न, जान कर, पूछना चाहती है, उसकी मूकता सुभाती—खालो, अच्छा ही होगा। और बिना किसी लिहाज़ के खा रहा था। ना नहीं कर सका। खाना परसने के साथ, नारी-गुण भी समझता जाता। प्रति दिवस की संज्ञा में उसे यह प्राप्त नहीं है। नौकर चाह कर भी, ऐसी स्वच्छता और पवित्रता कहाँ लाता है? यह सब काम तो यह नारी-जाति चिरकाल से

निभाती आ रही है। इस पर अहसान नहीं मानती है। पति के घर आने के साथ-साथ इसे भी लिए आती है। वह युवती कुछ मूक सी थी, पर जड़वत नहीं ! उसमें अपना एक जीवन था। उसका वह परमना, एक बेकली पैदा नहीं करता था। यह लड़कियाँ कैसा यह स्नेहवाला स्वभाव, बचपन वह से साथ रखती है। उसके लिए कंजूसी बरतना नहीं जानती है। जिसका निर्णय करना एक भेद सा, बाकी बचता है। अपने किसी लाभ की चिन्ता भी उनको नहीं घेरती है।

महेश ने खाना खा लिया। हाथ भी धोए। फिर दूसरे स्टेशन पर तीन बीड़े पान के ले लिए। मनोहर ने अपनी भाभी को पान दिया। वह चुपचाप चबाने लगी। महेश को अपने इस मान से बेहद खुशी हुई। यह सब पाकर, उसने अपने को धन्य समझा। उधर देखने की चाहना, उत्साह न रह सकी। वह उसे दबा गया। अपने असमर्थ मन को न रोक सकने पर जब उधर देखा, वह युवती चुपचाप न जाने क्या गुनगुना रही थी। जैसे कि अपनी स्वतंत्रता का सच्चा अधिकार रखती हो। और किसी को उससे वास्ता रखना ठीक नहीं ! वह मतलब को नहीं जानती है। इसके लिए अधिक चुप भी वह नहीं रहेगी। अपनी ओर महेश को ताकते पकड़, एक बार वह सिमट, चुप हो गई। और महेश के दिमाग में बात उठी, उस युवती का भी कोई नाम होगा। क्या नाम हो सकता है ? दो-तीन अक्षरों को मिलाने पर साधारण नाम बन जाता है। उसका व्यक्तित्व तब व्यक्ति अपने पर लागू करते कुछ नहीं हिचकता। मनोहर उस नाम को ज़रूर जानता होगा। न भी जानता हो ? स्वामी कभी नाम पुकारता होगा क्या ? अब वह महेश के आगे कोई भी नाम नहीं रखती है। कम से कम महेश जानकार नहीं है। उसके आगे वह अधिक हिचक भी नहीं बरत रहा है। बचपन की यही उसकी सीख है। अपने उस वातावरण वाली शिक्षा को भुलाना कोई आसान काम नहीं।

अब फिर बेबी नींद से जाग पड़ा। माँ ने दूधवाली शीशी निकाली और दूध पिलाने लगी। बच्चा दूध पी रहा था। वह चुस-चुस-चुस, पीता ही रह गया। माँ के साथ खेलना अब उसने शुरू किया। थककर माँ की गोदी से चिपट गया। कुछ देर बाद नींद आ गई थी। सब कुछ खिलवाड़ पहचानकर भी वह बार-बार न जाने क्यों असमंजस में पड़ जाता था। क्या वह यह नहीं जानता कि, यह सब-कुछ आदमी को निभाना पड़ता है। यह लड़कियाँ माँ बन कर अपना उत्तरदायित्व निभाती हैं। फिर भी पिता कहलाने वाले दल का भी एक दरजा है। अपना परिचय यदि वे दुनिया भर को देते नहीं फिरते हैं, उनकी एक जगह तो है ही। अपने अधिकारों की पूरी-पूरी रक्षा करना वे जानते हैं। अलग जैसे कि वह उनसे नहीं है।

बच्चे को थपथपाती करुणा सोच रही थी—महेश पर। कब उसने एम० ए० पास कर लिया। उम्र कोई बड़ी नहीं। नौकरी अब करता है। उसकी बातें जानदार हैं। सब कुछ सुन लेने का लोभ नहीं हटता है। वह मनोहर से अँगरेज़ी में बात कर रहा था। मनोहर यदि टोक कर न कह देता कि, भाभी उस विद्या को जानती हैं, तो वह इतनी सावधानी नहीं बरतता। वह चुप नहीं हो जाता। उसे बातें करने में थकावट नहीं लगती है। यह मनोहर क्यों सब कुछ कहने पर उतारू हो गया। उसका क्या स्वार्थ था। नहीं तो वह बहुत बातों पर अपनी साफ़-साफ़ राय कहने में चूकता नहीं। वह शादी करेगा। उसके लायक लड़कियों की भी कोई कमी दुनिया में नहीं है। जब शादी करेगा, सारी फक्कड़पन वाली बातें, निपट जावेंगी। तब सारी दुनिया का नया भाव मालूम होगा। हर एक पहले यही सोचता है। लड़कियों की तरह गृहस्थी का ख्याल उनके मन में कभी नहीं उठता है। जब फँस जाते हैं, सीखने में अधिक देरी नहीं लगती है। इस महेश को भी तब अपना तर्क बदलना पड़ेगा। हर एक युवक का पहले यही मत होता है। आगे उसकी राय बदल जाती है। यह

नामुमकिन है, कि समाज और गृहस्थी से अलग रह कर, वह भागा-भागा फिर, अपनी सारी ज़िन्दगी काट ले। कम से कम उसे यह विश्वास नहीं होता है। वैसे लड़कों का काम शुरू में ऐसा ही फ़तवा पढ़ना है। उसके पति रोज़ ही क्या ऐसा तीव्र-कटाक्ष नहीं फेंकते हैं कि, वही आफ़त है। नहीं वे तो ठीक थे। इन लोगों के इस दावे को नारियाँ आजीवन सहती रहेंगी। इसके लिए विद्रोह की भावना गुलत होगी। पुरुष तो सरल होते हैं। अपना स्वाभाव उनका है। उसे बरतने, व्यवहार में अधिक न कह कर, स्वीकार बात भी कर लिया करते हैं।

करुणा स्वामी को भूल, महेश पर अपना मोह अनजाने फैलाने लग गयी। क्यों व्यर्थ वह महेश पर सोच रही थी। खुद उसकी समझ में बात नहीं आयी कि कहाँ तक वह अपना दावा ठीक-ठीक निभा रही है। यही है क्या उसका नारी-धर्म, इस युवक से उसका सिर्फ़ कुछ घन्टों का ही सम्बन्ध है। फिर भी महेश लगा कि, जल्दी भूल जाने लायक लड़का नहीं है। वह असाधारण युवक लगा। जिसके पास जाते कहीं भी हिचक नहीं होती है। वह बच्चे को हृदय से चिपकाये थी। आँखें खुद ही मुंद भी जातीं। नींद आने लगी। महेश के रेखा-चित्र, और उसके चारों ओर फैले विचारों को, पति और बेबी के भार से ढक, वह चुपचाप सो गयी। उधर मनोहर भी ऊँघता—ऊँघता नींद में भर गया था।

महेश अब लाचारी, पुस्तक के मार्फ़त जीवन और उस पर लागू होने वाली परिस्थितियों को तोलने लगा। हृदय के भीतर एक अजीब कम्पन उठती, उससे छुटकारा मिलना असाधारण बात थी। कोई उपाय भी नहीं सूझ पड़ा। क्यों वही चिन्तित था। सामने ही वह युवती सा रही थी। मुँह खुला हुआ था। वह सुन्दरता निखरी, फैली हुई थी। उसके प्रति ईर्ष्या उठने लगी। वह थी अनुचित बात। स्वार्थ ही सारा न्याय नहीं करता है। पति के अलावा उस युवती का, एक बच्चा है।

और बेबी छाती पर दुबका सो गया था। बच्चे के दिल की हल्की-हल्की धड़कन, उसकी गहरी-गहरी सांसों से खेल रही थी। एक भारी उत्साह में वह अपने स्वामी के पास जा रही है। वहाँ पहुँच कर, बच्चा अपने स्वामी की गोद में मौपले कहेगी—लो जी तुम भी इसे पालना सीखो—जानते नहीं, पिता अब हो। कुछ दुनिया की बातें भी सीख लेनी ठीक लगती हैं। भला इस तरह कैसे काम चलेगा—इस मज़ाक पर पति मुस्कुरा जावेगा। अपनी ज़िम्मेदारी भी महसूस करेगा। और चुपके बच्चे को अपनी से ले लेने को हाथ पसारेगा। बच्चा माँ की गोदी नहीं छोड़ सकता है। वह अनजान व्यक्ति के पास क्यों जाने लगा, पिता मन मार चुप रहेगा।

माँ बच्चे को सुला देगी। पति अब चाहेगा कि, एक बार बच्चे को चूमले। यह लोभ हटाए नहीं हट सकता है। 'नहीं नहीं। यह क्या कर रहे हो। देख लिया तुम्हारा प्यार करना। यह भी अनंदाज़ नहीं है कि वह सो रहा है। कल रात भर ठीक नींद सपने में कब आयी थी। सोए बच्चे का प्यार !'

पति मन मार कर, हुकम मान लेगा। वह और क्या कर सकता है। बच्चे को देखकर उसे भारी खुशी होगी। फिर उस माँ को भी अपमान लेनी पड़ेगी। 'यह बच्चा कैसी सागरी है। ज़बान पर भी अतिवाचक आस। माँ भारी फकी है।' खिली लगती है। वह बच्चे पर हाँपती है। 'अब वह माँ बननी, तो वह पिता का घर का पाया है।' बच्चा बेजिम्मेदारी अतिवृत्ति कर रहे हैं। न उनको जीवने के आनंद का भरोसा है। सिंजारा है। 'कुतूहल कोई भी बच्चा नहीं। गहरी एकता में ही है।' वह बेबी छोड़ो सो मैं, नाके हाथों से भी छोड़ो छोड़ो भी रोता है। और फिर भी आँखों से नहीं देखते हैं कि किसी माँ को भी मरना पड़ सकता है। 'यदि मैं उन छोटी-छोटी आँखों में मुस्कान पिला जाऊँ तो किन्हीं माँ की आँखा के पिता को खिलने का अवसर आता है।' माँ की आँखों

चाहे। बच्चा माँ के अधीन है। बच्चे को पा, वह दुनिया भर को भूल जाती है। अपना सुख-दुःख इस बच्चे को अर्पणकर, मैल भी मन में जमा नहीं करती। बच्चे की हँसी में वह खुद भी खेलती है। अपना सारा बचपन वाला ज्ञान, बच्चे पर निछावर कर दिया है।

पति, मिस्टर.....नौकरी करते हैं। उनके बारे में अधिक कोई भी ज्ञान उसे नहीं है, वे गृहस्थ हैं। यह युवती उनकी पत्नी है और इस युवती पर उसकी अपनी कोई भी राय नहीं है। उसपर कुछ कहने और सोचने का अधिकार तक उसको नहीं है। कह कुछ वह नहीं सकता। वह मनोरथ की भाभी है। मनोरथ सो गया था। सोचा महेश ने, वह भी उसे कुछ कह सकता है। पत्नीत्व के बन्धन के बाद नारीको आश्रय का डर बाक़ी नहीं रह जाता है। उसकी ममता, उसके प्रति मनोरथ से कम नहीं थीं। अन्यथा सिगरेट पीते पकड़ कर उससे क़्यों बात का साभा करने वह उतरी थी। समाज रोज़ ही रिश्ता छाँटता है। ज़रा पहचान के बाद अपने मन का व्यक्ति सर्वदा से निकट चला आता है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। गृहस्थी के भीतर, कई-कई रिश्ते हैं। जिनका आदर चिरकाल से करती चली आती है। वह पालन भंभट नहीं। बेबी है, पति है, देवर, और भी घर में नज़दीक के नाते वाले होंग़े। चारों ओर इसी तरह जान-पहचान वालों का जाल फैला रहता है। तब यह गृहस्थी भी ठीक-ठीक चलती है। देश में लाखों गृहस्थ हैं। उसके भीतर का रोज़ाना हाल अधिक मालूम नहीं होता। वहाँ संकुचित अवस्था है। और उस पर बाहर वालों की राय ले लेने को उत्साहित कोई नहीं।

महेश रात्रि से उस निस्तब्ध वातावरण में अपने विचारों के साथ उलभ-उलभ रहा था। सामने वह ज्ञात युवती सोयी थी, जिसे अब कुछ-कुछ वह पहचान लेता है। खिड़की से बाहर खटर-खटर की आवाज़ सुनाई पड़ती थी। गाड़ी की गति को व्यक्ति की उलभन से कोई मतलब नहीं रहता है। न वह सजावट ही कोई है। आदमी तो अपने विचारों को

न पकड़ सकने पर लाचार साबित अकसर हुआ है। लेकिन वह खिड़की से बाहर देखने लगा। अन्धकार के भिलमिले में पेड़ पौधे, खेत, छोटे-छोटे गाँव पीछे-पीछे छूटते जा रहे थे। सब गाँवों में एक अभिभूमित चुप्पी फैली हुई थी—बिल्कुल सुनसान था। सब लोग सोये हुए थे। कभी वह भी झपकियाँ लेने लगता था। आँखें मुँदतीं। नींद वैसे फिर हट ही जाती थी। वह आवेश से अलग था।

कि महेश ने सामने देखा, ओढ़ने की चादर नीचे गिर गयी थी। तेज़ हवा चलने लगी। सोचा उसने कि, उठा कर ठीक तरह उड़ा क्यों नहीं देता है। क्या वह उस युवती से डरता है। उसके बाद, बेबी को ठण्ड लग जावेगी। मन में असमंजस पैदा हुई। एक हल्ला और पीड़ा फैली। वह उठ खड़ा हुआ, चुपचाप चादर उठाली। धीरे-धीरे उड़ाने लग गया। मुँह ढक देने का साहस उसे नहीं हुआ। उस चेहरे पर उसकी आँखें फैल गयीं। गालों की नीची सतह पर, काला-सा सुन्दर छोटा तिल था। ओठों की रेखाएँ पान से रंगी थीं। यह सारा रंग, उसकी आँखों में फैलने लगा। सारे विचार दिल में पीड़ा फैलाने लगे। वह चौकन्ना हुआ। जहाँ आदर है, वहाँ समझौते का प्रश्न होता है। फिर भी कुछ ख्यालों को ज़िन्दा रख उठा कर सौंपना, अनुचित बात है। यह विचार तो फैल जाते हैं। किन्तु बाहर दुनिया और समाज चुपचाप सो रहे हैं। वह उनसे अब अलग हैं। अपनत्व की रक्षा का एक पहलू मन में बेचैनी पैदा कर रहा था। उसका भीतरी मन सिकुड़ने लग गया। वह सोचता ही रहा :

उसका अपना एक अलग जीवन है। वह ऑफिस ! दुनिया भर का उसका हिसाब-किताब। उसी वातावरण में धूमकेतु की तरह एक चिट्ठी रेखा कभी कोई खींच देता था। वहीं लुभावनी नारी का अन्दाज़ उसे लगता था। वही था उसका अनुभव। आज दंग अब वह रह गया। वह युवती अचल सोयी थी। नारी के प्रति बटोरी स्थिर भावनाओं से

वह कितनी भिन्न थी। रोज़ वाली धारणाएँ ग़लत लगतीं। सपने और मृगतृष्णा के अस्तित्व से अलग, यह सब कुछ व्यवहार था। किन्तु रोशनी में कीड़े मुँह पर गिर पड़ेंगे। वह भीतर अपनी रुकावट पर चुप नहीं रह सका। दलील की। मुँह को ढकते-ढकते, हाथ उस युवती के गालों से अनजाने छू गया। युवती जग गयी। वह अवाक् खड़ा-का-खड़ा क्षण भर रह गया। उस युवती ने अपनी पैनी आँखें सावधानी से उस पर गड़ा दीं और फिर मूँद लीं। अब वह आँखें मलते-मलते उठ बैठी। वह भारी थका हुआ-सा अपनी सीट पर लौट कर, बैठ गया। अपने को धिक्कारते हुए गाड़ी में बाहर देखने लगा। मलिनता मन को घेरने लगी। भारी भुंभुलाहट अपने प्रति उठी। अपने से धृणा-सी उस अकरतव पर हो आयी। वह न जाने क्या सोचती होगी। चादर गिर गयी थी, कुछ होता। वह क्यों अपना अहसान सौंपने तुला। मनो-रथ को जगा लेता। अपने पवित्र लोभ के बंटवारे की वह ठीक जगह भी थोड़े ही थी। वह ज़रूर उसे पापी समझ रही होगी। नीच और दुष्ट तो वह है ही। बाहर काली रात थी। वह उसमें अपने को समाप्त कर देना चाहता था। उपाय मिला नहीं।

युवती तो बैठी की बैठी थी। कुछ स्वास मोचा भी नहीं। हाथ के छू जाने से नींद खुल गयी थी। वह चादर उड़ा रहा था। दिल में और कोई बात नहीं उठी। ठीक ही हुआ। बच्चे की रक्षा ज़रूरी थी। खुद उठी, बच्चे को ठीक तरह सुलाया। पीठ पीछे गिड़की पर हाथ टिका कर, सिर रख लिया। नींद उसी हालत में आई थी। कच्ची नींद फिर भी बार-बार टूट जाती। ज़रा ऊँघ कर, चौंकती आँखें खोलने लगी। अपने को संभाल जैसे कि रही हो। कुछ सोच कर उसने मनोहर को जगाया। वह जग पड़ा उससे पूछा, “क्या बज गया होगा।”

मनोहर के पास घड़ी कब थी। महेश बांगा बना, आँखें मूँदे हुए था। उसने पूछ डाला, “क्या बज गया है।”

महेश ने सरलता से ही आँखें खोलीं और बोला, “चार बज कर पच्चीस मिनट हुए हैं।”

युवती अब बोली, “गाड़ी कै बजे पहुँचती है।”

“आठ के करीब।”

“चिट्ठी पर लिख दिया था न कि स्टेशन पर चले आवें।”

“नहीं। बेकार फ़ज़ीता होता।”

“नया मकान कैसा है? पिछले साल तो जाड़ों में बड़ी तकलीफ़ रही। न ठीक-सा चौका था, न दालान।”

“अब के तो खूब पसर की जगह है।”

“यूनीवर्सिटी के पास है न।”

“पिछले मकान से कम फ़ासला है।”

महेश का ध्यान बातों की ओर नहीं था। उसका उनसे मतलब क्यों होता। उसे नींद आ रही थी। मनोहर ने देखा और तकिया सोंप दिया। उसने तकिया लिया, उसकी सजावट देखी। उसको मन में समेट कर सो गया।

गाड़ी चली जा रही थी। मनोहर भी ऊँघने लगा। युवती अब फिर सो गयी थी। मनोहर को भी नींद ने घेर लिया। एकाएक गाड़ी की गति धीमी हुई। और कुछ देर बाद एक अजीब आवाज़!

तब तीनों सोए हुए थे। आपस में जैसे कि उनको अब अपने-अपने उत्तरदायित्व का पूरा-पूरा ज्ञान था। इसी तरह जैसे यह दुनिया है, और उसमें चलने के लिए सरोकार थोड़ा-बहुत बरतना ठीक होगा। महेश हां, चाहे मनोहर या वह युवती—कल के लिए अधिक जानकारी किसी को क्यों हाने लगी। मौन की तरह, यह नींद भी समाज के क़ानूनों की रक्षा नहीं करती है। उसकी दृष्टि में भी सब बराबर-बराबर हैं। न किसी की अवज्ञा का सौदा वह सँभालने चिन्तित मिलेगी। उसकी दृष्टि में सारी सृष्टि के जीवित जीव एक हैं। कोई उससे अलग नहीं था।

एकाएक रेल की तीक्ष्ण सीटी सुन कर महेश की नींद टूट गयी । गाड़ी चली जा रही थी । वह पैना स्वर बार-बार दिल को बेध रहा था । उसने खिड़की से बाहर, पारदर्शक काँच से देखा । कुछ नहीं, किसी घने जङ्गल को गाड़ी पार कर रही थी । फिर-फिर वही स्वर ! गाड़ी की चाल भी धीमी होती उसे लगी । वह चुप रहा कि, एकाएक भारी धक्का उसे लगा । आगे एक बारगी अँधेरा हो गया था । कुछ भी अपने चारों ओर वह नहीं देख सका । कितना ही मनोहर और उसकी भाभी का हाल जानना चाहता—सब व्यर्थ ! उसकी आँखें मुँद गयीं । वह.....

युवती लुढ़की । गद् से नीचे फर्श पर गिर पड़ी । बच्ची का ध्यान आया । उसकी ओर उठना चाह कर भी उठ नहीं सकी । चुपचाप पड़ी रही— पड़ी ही । सारी व्यवस्था जैसे कि उसके हाथ में नहीं थी । फिर...

मनोहर तो बेहोश सोया था । वह अपनी नींद में मस्ती से सोये रहने का आदी है । फिर भला तीसरा पहर भी खत्म हो गया था । सुबह की मीठी नींद । एक बार उसने आँखें खोलने की शायद चेष्टा भी की, अमफल ही रहा । और.....

शोर-गल, चीत्कार..... गाड़ी पटरी से उतर गयी थी । दूर दुनिया में सोये हुए लोगों को यह विपत्ति कैसे मालूम होती । एक बड़ा अरसा बीत गया । अजीब सा तमाशा हो रहा था । चीखना, रोना चारों ओर भय फैला कर उस जङ्गल के घने वातावरण को चीर-फाड़ डालना चाहता था । फिर वही स्वर, दर्दनाक आवाज़ । चारों ओर धुआँ ही धुआँ ! वक्त कट रहा था, किसी को उसका अन्दाज़ नहीं रहा । मिनट-मिनट बीतते चले गये । उनकी परवाह का किसी को ध्यान कैसे होता । वक्त भी व्यक्ति के जरूरत के साथ गति प्रदान करता है । उससे अलग नहीं ।

तो इस मनुष्य जाति का खेल कठपुतली के खेल की तरह है । व्यर्थ अपना भारी जाल ये लोग संसार में फेंकते हैं । अपनी विडंबना कहीं

किसी भी वक्त धोखा दे जाती है। इससे किसी का भविष्य भिन्न नहीं। जिस तरह भाग्य को ठुकराने वाली जाति भी एक दरजे में बन गयी है। वैसे ही व्यक्ति का बौद्धिक विकास चालू होता जा रहा है। और भाग्य को विश्वास मानकर चलना भी सर्वदा हितकर नहीं होगा। वह भाग्य व्यक्ति के जीवन का सही आधार भी नहीं है। उसके साथ यदि परिस्थितियाँ न हों, वह कुछ नहीं। आदमी परिस्थितियों की दासता स्वीकार कर लेता है। अन्यथा इतनी निराशा आज संसार में नहीं फैल जाती। अवसर को ठीक तरह निभाकर उसे अपराध साबित करना ठीक नहीं। व्यक्ति को अपने बल का भरोसा होना ज़रूरी है। उसकी शक्ति के आगे सब निर्बल हैं। यदि दैविक अहमता तब भी उसे कुचल डालती है, वह बिल्कुल ही कसूरवार नहीं।

घटना, घटना के बल पर उठती है। उसकी मज़बूती इसीलिए अकाट्य लगती है। यह घटनायें रोज़ाना उठेंगी। और अपना अस्तित्व स्थापित करते इनको अधिक देर नहीं लगती है। आज-आज, कल-कल, परसों-परसों—सारे शब्दों का आडम्बर ही नहीं। उनका आपस में एक समझौता है। दुनिया की दृष्टि उस ओर क्या है, यह अधिक लोग नहीं सोचते हैं। इसी तरह एक बड़ी तादाद वाली बातें दुनिया में सदा से होती चली आयी हैं। इसके लिए मानसिक दुर्बलता मोल लेकर आदमी अपने को व्यर्थ ही मिटा डालना चाहता है। तब... ..।

करुणा की आँखें खुलीं । देखा कि बच्ची रो रही है । अपने चारों ओर देखा । बेबी को पाकर बहुत खुश हुई । उसे गोदी में उठा कर ममभी वह जीवित है । सिर भारी हो रहा था । गला घुटने लगा । वह लाइनों के बीच में बैठकर सुप्ताने लगी । बार-बार भारी भय से काँप उठती थी । यह सब कुछ आँखों पर क्या हो गया । कुछ दूरी पर मनोहर पड़ा हुआ दीखा । साहस बढोर, डरती—डरती वह उसके पास पहुँची । देखा कि उसके सिर से खून वह रहा था । वह बहुत घबड़ाई । फिर अपने को सँभाला । बच्ची को छाती से चिपकाये रही । पुकारा, “मनोहर !”

मनोहर चुपचाप पड़ा हुआ था । पड़ा ही रहा ।

उसे हिलाकर आँखें फाड़-फाड़ कर देखती रह गयी । और ज़ोर से चिल्लाई, “मनोहर ! मनोहर !!”

मनोहर ने कुछ भी नहीं सुना ।

फिर एक और बार उसने मनोहर को हिलाया । माथे पर हाथ फेरते उसे जगाने का व्यर्थ प्रयत्न किया और सहम उठी । भारी कँपकँपी सारे बदन पर फैली । उसी सिहरन में सवाल अपने से पूछा,—क्या वह मर गया है ? सच ही वह बेचारा निर्जीव पड़ा हुआ था । उसने फूट-फूट कर रोना चाहा, किन्तु आँखें भीतर-ही-भीतर उमड़ कर रह गये । चाहकर, वह नहीं रो सकी । इतने बड़े दुःख के पड़ने का आज तक कोई

अन्दाज़ उसे नहीं था । न उसकी सत्यता से विश्वास कर लेने उसका मन गवाही देता । उसका खून से लथपथ सिर, उसने अपनी गोदी में ले लिया । कई मिनट अवाक् वैसे ही बैठी रही । कुछ सूझा नहीं । मन खाली हो गया था । स्वयं वह भी चूकने लगी । उसने समझा कि वह भी मर रही है । अब चन्द मिनट के बाद, सब खेल निपट जावेगा । उसकी आँखें मुँद रही थीं । आखिरी एक बार हिम्मत बटोर उसने आँखों को पूरा फैला डाला । क्षण भर सामने टकटकी लगाकर देखती रही । और कुछ ही दूरी पर महेश पड़ा हुआ था । उसको ऊपर से कुछ चीज़ों ने दाब लिया था । उसे होश पूरा-पूरा आ गया । मनोहर को एक ओर रख, बच्ची को भी वहीं छोड़ गयी । बेबी रोने लगा । उसकी कुछ भी परवाह नहीं की । और महेश के पास पहुँच गयी । चीज़ें एक ओर हटायीं, देखा कि मुँह से खून वह रहा था । नाक पर हाथ लगा महसूस किया कि वह जीवित है । उसकी कमीज़ के बटन खोल डाले । छाती पर हाथ रखने पर विश्वास हो गया कि प्राण बाक़ी हैं । अब वह संभल गयी । सामने मनोहर का निर्जीव शरीर देख कर सोचा—इतना ही उसका जीवन था । अब उसे पढ़ाई की कोई फ़िक्र नहीं घेरगी । न वह चुटकी लेगा; नहीं पुकारेगा—भाभी ! भाभी !! संसार और उसका सच्चा हाल वह जान गयी । उस शरीर की ममता और आदर का पूरा-पूरा ज्ञान अब वह अच्छी तरह समझी ।

बच्ची रो रही थी । मनोहर मरा पड़ा था । वह महेश के ऊपर अपने आँचल से हवा करने लगी । अपनी साड़ी के छोर से वह उसका खून पोंछते बार-बार चिन्तित हो उठती थी । अब वह उसकी सगी और परिचित बन, वही बर्ताव बरत रही थी । कर्तव्य के आगे अपने और पराये किसी का भी सवाल बाक़ी नहीं रह गया । तो वह युवक जीवित है । और यदि वह भी मर गया! नहीं नहीं । उसे ज़िन्दा रहना पड़ेगा । उसके जीवित रहने के लिए वह चिन्तित है । मनोहर मर ही

गया है। वह अब पगली है। उस युवक और बेबी का गला घोट, वह खुद भी क्यों नहीं मर जाती है। वह फिर उसे होश में लाना चाहती थी। आंचल से हवा करने लगी। कौन जाने कि उसका आबदाना बाक़ी हो। कुछ भी लाज-शरम नहीं। न समाज की फ़िक्र है। वह सब इस आपत्ति में एक ढोंग लगा। यदि वह उसे बचा सकेगी, उसके जीवन की एक हवस पूरी होगी। भगवान से भी वह उसकी रक्षा के लिए आंचल पसारने तैयार है।

और बड़ी देर बाद महेश ने आँखें खोलीं। वह युवती डरी, चाहा कि हट जावे। लेकिन महेश ने आँखें मूँद ली थीं। जड़-सी वह वैसे ही बैठी रही। किसी बात की चिन्ता अब उसे नहीं थी। अबसर ने सारी लाज धो डाली। अब कुछ वैसे उसका अपना नहीं था। सब कुछ तो परिस्थिति के सुपुर्द कर दिया। धीरे-धीरे महेश में पूर्ण चेतनता आयी। आँखें खोलकर वह समझ गया कि मौत को धोखा देकर, वह जीवित है। अब कुछ शक नहीं था। वह युवती उसकी रक्षा कर रही थी। नहीं वह कभी का मर गया होता। लेकिन बेबी और मनोहर।

“बेबी कहाँ है।” उसने पूछा।

युवती ने सामने उँगली से दिखलाया।

और देखा महेश ने कि वह अंधकार से एक ओर बैठी चुपचाप खेल रही थी।

“और मनोहर !”

युवती चुप रही।

“मनोहर कहाँ है ?”

कुछ भी जबाब न पा वह भयभीत हो उठने लगा। अपना भार न सँभाल सका। भारी चोट लगी थी। उत्तेजित होना ख़तरे से ख़ाली नहीं था। आँखों के आगे एकबारगी अन्धकार छा गया। उस युवती की गोदी में वह असहाय बेहोश होकर पड़ा रहा। युवती अपनी हालत को

जानकर, असमंजस में पड़ गयी। वह अकेली अकेली क्या करे। यह क्या हो गया है। उसके आँसू बहने लगे। टप, टप, टप कर, वे महेश के चेहरे को धोने लग गये। भारी-भारी सिसकियों और हिचकियों के साथ वह बड़ी देर तक, फूट-फूटकर रोती रही। वही जैसे कि नारी का आँखिरी बल है। और बड़ी देर से रुके आँसू, अब बहने लगे। कि महेश की आँखें खुलीं। वह उठ बैठा। उसने वे सूजी आँखें पढ़ लीं। उठकर सामने देखा—सच ही मनोहर की लाश थी।

धीरे-धीरे वहाँ पहुँचा। मनोहर को टटोल-टटोलकर देखता रहा। हताश लौट युवती से समाधान करते कहा, “मनोहर मर गया है।”

युवती ने जवाब नहीं दिया।

“वह तो मर गया है!” तपाक से वह फिर बोला।

करुणा फिर रोने लगी। उस पुरुष के आगे भी उसने अपने को सँवार लेने की फ़िक्र नहीं की। मन में बात बैठी कि सब सच ही है। मनोहर ज़िन्दा नहीं है। वह शरीर वैसा ही है, सिर्फ़ प्राण उड़ गये हैं। प्राण ही जैसे कि असली थे। शरीर की कुछ कीमत अब नहीं है। वह तो वहीं पड़ा का पड़ा हुआ रहेगा।

अब रिलीफ़-ट्रेन आ पहुँची थी। सुबह भी हो गई। कुछ लांग मनोहर के पास आये। उसे टटोला और स्ट्रेचर में रख लिया। महेश उठा। उनके पास जाकर बोला, “उसे पड़ा रहने दो। वह बड़ा अभागा है। अबके ही बी० ए० पास किया था। अब उसे कहाँ ले जावोगे। वह मर गया है! उसे बेकार न ले जाओ। जितनी देर वह शरीर हमारा आगे पड़ा रहे, पड़ा रहने दो। हम उसे खूब देख लेना चाहते हैं।

वे लोग जाने लगे। महेश चाहता था कि वह मनोहर की लाश छीन ले। वे किस हक़ से उसे ले जा रहे हैं। वह चिल्लाया, “उसे मत ले जाओ।”

कि उसे चक्कर आ गया। वह चक्कर खाकर, वहीं चुपके लेट

गया। युवती तो खड़ी की खड़ी ही थी। पास आकर, उसे सँभाल लिया। वह क्या करे। मनोहर को वे लोग ले ही गये थे। मनोहर को वह उस घर में पाँव रखते ही पहचान गयी थी। इस वक्त स्वामी पास नहीं है। उल्टे एक युवक का भार, उसने अपने ऊपर ले लिया है। सोचा, वह इस महेश को खोवेगी नहीं, इसे बचा लेगी। हवा करने लगी। फिर महेश के चेहरे के बीच कभी-कभी मनोहर की आकृति बीभत्स हँसी हँसती लगती थी। कोई उसके कान में कहता—क्यों भाभी ! यह कैसा मोह है ! तब वह चौंक उठती। उलझन में कुछ सोचती कि, महेश आँखें खोलता हुआ पूछ बैठता, “अब आपका क्या इरादा है ?”

वह अपने में सवाल दुहराती-तिहराती रह गयी।

“आपके प्रति को स्टेशन पर से तार भेज दिया जावेगा।”

वह कुछ नहीं बोली। दिमाग काम नहीं कर रहा था। बहुत घबड़ा गयी। तब सोचती भी क्या। मनोहर अपने साथ सारी उसकी शक्ति भी ले गया था। वह बहुत थक गयी थी। सब विचार चूक रहे थे।

तब उठकर महेश बोला, “आपको डरने की कोई बात नहीं है। मैं आपको आपके स्वामी के पास पहुँचा दूँगा। वहीं मैं भी रहता हूँ, पर आप जानती ही हैं। कोई खास दिक्कत नहीं होगी।”

युवती ने अड़चन नहीं डाली। सब स्वीकार कर लिया।

डॉक्टर आया था। उसने महेश को देखा। चोट कात्ती लगने पर भी चिन्ताजनक बात नहीं थी। पट्टी बाँध कर, दवा दी। महेश कुछ स्वस्थ लगा। वहीं करुणा की गोदी में सिर रख लेटकर आराम करता हुआ, बड़ी देर तक पड़ा रहा। इस नारी के सहारे पर, अपने जीवन को उत्सर्ग करने वाली दान की बात, वह किसी तरह न भूल सका। इसी तरह जैसे कि अपाहिज और रोगियों की रक्षा करना इनका धन्धा हो। समीप एकाएक चली आती हैं। वक्त पहचानने के बाद जैसे कि,

और कुछ नहीं चाहिए। सारा ज्ञान इनको स्वयं आ जाता है। कभी आँख खोलकर वह करुणा का चेहरा पढ़ लेना चाहता। वह उदास लगती—भारी चिन्तित। उस मनोहर का विछोह असाधारण नहीं था। तब भी कड़ा जी किए, वह अपने को मज़बूत बनाये हुए थी, कि चटकेगी नहीं। वह बेबी चुपचाप वहीं एक ओर सो गयी थी। वह चुपचाप आँखें मूँद कर, दुनिया में फैली धारणाओं को काट-छाँट रहा था, कि कितनी सही हैं, और कौन-कौन ग़लत !

कुली आ पहुँचे थे। महेश ने उनको अपना व करुणा का सामान सौंप दिया। मनोहर का सूटकेस वहीं पड़ा हुआ रह गया। कोई कुछ भी उस बात पर नहीं बोला। तभी युवती ने पूछा, “मनोहर !” और फूट-फूटकर रोने लगी।

महेश ने समझाया, “सुनो, भाग्य बड़ी चीज़ होती है। उसके आगं किसी की नहीं चलती है। नहीं तो यह घटना क्यों हो जाती। न मनोहर हमारे बीच से इस तरह खो जाता। उसकी आखिरी देह तक से हमारा कोई वास्ता अब नहीं है। यह है आदमी की हालत !”

अपना समूचा सहारा देकर, करुणा महेश के साथ-साथ चलने लगी। और वे गाड़ी पर बैठ गये थे। महेश लोट गया। रेल के अधिकारियों ने पूछा, “आपका नाम।”

“महेश।”

“पता।”

उसने पता लिख दिया।

“यह युवती !”

“मेरी रिश्तेदार हैं।” बिना किसी हिचकिचाहट के वह बोल बैठा।

“आपका कोई साथी मरा तो नहीं है ?”

“नहीं।”

युवती ज़रा चौंकी। बात समझ में नहीं आयी। वे लोंग तब तक

चले गये थे। महेश के मुँह को वह ताकती रह गयी। गाड़ी चलने लगी थी। अब महेश सावधानी से बोला, “यह भी हम लोगों को देखना बदा है। अब सुनो, मेरा मकान है। वहाँ आपको शायद हिचक होगी। वहाँ और कोई नहीं है। मैं हूँ और मेरा नौकर। तब आपको जहाँ आप कहें, मैं छोड़ दूँगा। आपके स्वामी को ढ़ढ़ना ही मुझे है। तब जैसा आप उचित समझें !”

“आपके यहाँ जा सकते हैं।” वह बिना किसी एहसान के बोली।

कुछ देर न जाने क्या सोचता हुआ, महेश बोला, “आप कोई फ़िक्र न करें। दुःख तो रोज़ ही आदमी पर पड़ता है। हम लोग ही कब इस घटना के लिए तैयार थे। इसी तरह आदमी की ज़िन्दगी, सहूलियत पर नहीं टिकी है। विपत्ति तो जीवन का आपेक्षिक घनत्व है। दुःख सही भी है। सुख तो बच्चों का खिलवाड़ है। जहाँ ठीक पहचान नहीं होती है, वहाँ अपना कोई सरोकार स्थापित नहीं हो सकता है। इस हालत पर, कुछ विचार कर, परेशानी बढ़ानी हितकर नहीं है।”

गाड़ी चलने लगी। चलती रही। उतनी भारी घटना के बाद, जीवन और प्रतिदिवस के सम्बन्ध में कहीं भी कोई अन्तर नहीं आया। महेश लेटा ही हुआ था। करुणा उसके चेहरे को देखकर बार-बार सिहर उठती थी। वह कैसा प्रतीक था—उसके जीवन का ! जिसको मार्फ़्त बनाकर, वह कुछ अपनी निजी राय ज़ाहिर नहीं करती है। उसके बारे में जितना थोड़ा सा ज्ञान उसे था, उसे अपेक्षित मानती है। उस पर कुछ अधिक सोच कर, दुःख बटोरने से भी लाभ नहीं था। वह महेश तो सोया हुआ था। जैसे कि वह उस बेबी की तरह ही बेबस हों। वह युवती जिस तरह चाहे, उसकी रक्षा करने का पूरा-पूरा अधिकार उसे है। वह कुछ भी बात इन्कार नहीं करता है। और गाड़ी चल रही थी। उसे जैसे कि चलना-चलना ही था। इतने सारे जीवित मुसाफ़िरों का भार अब उस पर था। सब बीमार थे। वह उनकी रक्षा का पक्ष मेंमाल रही थी। जो

छूट गये, उन पर मोह अब थोड़ा सा बाकी था। उनका ध्यान, पीड़ा ज़रूर पहुँचाता था, और किसी भी ध्यान के हेतु वह नहीं थे।

अब गाड़ी ठीक स्टेशन पर पहुँच गयी। महेश और करुणा उतरे। महेश ने ताँगे पर सामान रखवाया। उसे युवती के पति के घर का पता मालूम होता, तो वह उसे वहीं सौंप आता। अब तो थी मजबूरी। दफ़्तर ही में उनसे मुलाकात हो सकती थी। यह दोनों ठीक-ठीक जानते थे। और ताँगा महेश के मकान पर पहुँच गया था।

मकान के भीतर जाते हुए युवती को भारी भिन्नक मालूम हुई। यह क्या हो गया था। मन मार कर चुप रही। उसका कुछ भी अपराध नहीं। और रास्ता ही कौन सा था। ठीक तरह वह भीतर बैठ गयी। वहाँ रहना ही अब उसे था। महेश ठीक तौर पर कपड़े बदल जब बाहर जाने लगा, वह बोली, “ऑफ़िस में वे मिल जावेंगे। साथ लेते आना।”

महेश ने सारी बात स्वीकार की। फिर वह ताँगे पर बैठ गया। उसकी समझ में यह समस्या और पहेली बूझी नहीं। मनोहर की भाभी उसके मकान में टिकी है। कैसा आश्चर्य था वह ! वह उसके स्वामी को उसे जल्दी ही सौंप, सारे भार से निपट जावेगा। वह ताँगे में बैठा हुआ चला जा रहा था !

महेश के चले जाने के बाद, अब करुणा अकेली रह गयी। नौकर उसको देखता हुआ, चुपचाप खड़ा ही था। कुछ पूछना चाहकर भी वह चुप रह गया। सोचता रहा, बाबू जैसे कि वह एक को कहता है, ऐसा ही कोई सम्बोधन वह करुणा के लिए ढूँढ़ लेगा। बहुत अकल लड़ाई, पर हार गया। बहुत विचार करने के बाद पूछ डाला, “आप कहाँ से आयी हैं।”

“बाबू जी के घर से, “करुणा मुस्कारते हुए बोली।

“आप उनकी क्या लगती हैं।”

“कुछ भी नहीं।”

यह कहकर, वह मनबुझाव करने लगी। गवाही दिल ने नहीं दी। तब क्या वह ऐसे ही इस घर में आकर टिक गयी है। वह गलत बात है। महेश उसके लिए कोई गैर नहीं है, और यदि महेश साथ नहीं होता, तो वह वहीं अपने प्राण गँवा चुकी होती। वह जीवन से निराश हो चुकी थी। महेश को निकट पाकर उसे जीने का उत्साह हुआ। आप्रत में जीवन को तोल लेने, हल्का बाट ही काफ़ी होता है।

महेश नौकर को दस रुपये का नोट, सौदा-पत्ता लाने के लिए दे गया था। ताकि घर में कोई तकलीफ़ न हो। बहुत कुछ तय करने के बाद, नौकर ने अन्दाज़ लगाया कि वह उनको बहूजी कहेगा। और इसीलिए उसने पूछा डाला, “कुछ तो नहीं आवेगा।”

“क्या” करुणा बोली ।

“बाबूजी कह गये हैं कि कोई तकलीफ आपको न हो ।” कह, नोट दिखला दिया । और साबित किया कि, जो हुक्म वे देवेंगी, वह चटपट बजा लावेगा ।

करुणा ईंजी चेयर पर लधरी थी । चारपायी पर बच्चा निश्चित सोया हुआ था ।

अब फिर नौकर बोला, “कोई काम तो नहीं है ।”

“नहीं ।” कहती हुई करुणा उठी । सामने आतशखाने पर धरे आइने में अपने को देखा । मंत्रमुग्धा सी देखती रही । थकी नहीं । डरी नहीं; अपने को देखती-देखती ही रही । तभी लगा कि मनोहर की प्रति-छाया मग्नौल उड़ा रही है । वह उद्भ्रान्त हो उठी । सन्न खड़ी की खड़ी रही । मनोहर की लाश आँखों के आगे उठने लगी । वह मनोहर अब कहाँ होगा ! भय से सारे बदन पर कँपकँपी फैल गयी । क्या वह मनोहर अब फिर लौट कर आवेगा ? आकर फिर कहेगा—भाभी, भाभी ! चलो न घूम आवें । आप तो बड़ी आलसी होती जा रही हैं । साथ ही भाभी के आदर का ख्याल भी उसे रहता था । पहले तो वह, मज़ाक़ और चुटकियाँ चुपके सह लेता था । अब जवाब दे दिया करता है । उस दिन नुमायश में ही कह रहा था—देख न भाभी, काली साड़ी, लाल बॉर्डर वाली है । आपको कैसी लगी । ठीक है या नहीं । तभी तो कुछ तय होगा, नहीं तो…………।

वह नुमायश में कभी भी चुप नहीं रहा करता था । वह वहाँ घूम रहे थे । कि एक युवती उनके पास से गुज़री । उसके साथी आगे बढ़ गये थे । वह पुकार रही थी—जीजा जी ! जीजा जी !!

मनोहर तभी हँसता हुआ बोला था—आपकी देवरानी हो जाय तो अच्छी जँचे । क्या राय है । कुछ तो निर्णय करना ही पड़ेगा । ऐसा

मौक़ा कब-कब मिलता है। शादी के बाद ताला मुँह पर लगा दिया जाता है। आज तो अपने मन की पसन्द छाँट कर सकता हूँ।

—वही शहर था आज। वे सब बातें केवल यादगार-सी बाक़ी हैं। आज वह बहुत दुःखित है। मनोहर अब बहुत दूर हट गया था। आज कोई भी मिथ्या अभिमान किसी के पास बाक़ी नहीं था। कल तक मनोहर जीवित था। एकाएक ऐसे चूर-चूर हो जावेगा, यह किसी ने भी नहीं सोचा था। अब वह जीवन के अंधकार में विलीन हो गया है। वहाँ से बुला, लौटा लाने की ताक़त किसी में भी नहीं है। किसी के वश की बात भी वह नहीं है। वह खुद लाचार और परवश थी। वही व्यक्ति का हाल एक दिन होगा। मौत सारे अपराधों को क्षमा कर देती है। उसकी दृष्टि में सब बराबर हैं। वहाँ बड़ा-छोटा कोई भी नहीं।

अब वह सँभली। अपने चेहरे को देखा। पीछे हट गयी। ऐसा लगा कि कोई उसका गला घोट रहा है। वह मनोहर के हाथ थे। वह क्यों इस तरह परेशानी बढ़ा, उलझाने तुला है। वह चीख़ न सकी। साँस घुटती-घुटती जा रही थी। बस वहीं फ़र्श पर थक कर बैठ गयी। आँखें मूँद लीं। खोलने का साहस नहीं हुआ। कुछ देर बाद अपने में आयी। आँखें खोलीं। खड़ी हुई। समूची अपने को देखा। उसकी सारी धोती पर खून के दाग़ थे। कहीं-कहीं वे काले पड़ गये थे। ‘मनोहर का खून—महेश का!’ वह अपने में गुनगुनाई। और धक से वहीं पर बैठ गयी। बड़ी देर तक बैठी की बैठी रही। अपने होश में नहीं थी। भ्रम हो रहा था। अजीब सा स्वर वह सुनने लगी। फिर वह उठ बैठी और आइने के आगे खड़ी हुई। अपने चेहरे को देखा—सुफ़ेद पड़ गया था। चौककर मन्थर गति से बाहर चली गयी। बाहर नौकर कमरा साफ़ कर रहा था। उससे पूछा ‘तेरा नाम क्या है?’

“भोला।”

“तू कब से इनके साथ है।”

‘पाँच महीने हो गये ।’

आगे कुछ न पूछ, वह चुपचाप अन्दर चली गयी । बड़ी उद्विग्न हो रही थी । बच्ची रोने लगी । उसने उसे गोदी में ले लिया और पुचकारने लगी । कुछ देर बाद पुकारा, “भोला ।”

नौकर अन्दर चला आया ।

वह अब बोली, “कहीं गाय का दूध मिलेगा ?”

“है । सुबह चाय के लिए लाया था ।”

“अच्छा, तो गरम करके ले आ ।”

नौकर दूध गरम करने चला गया था । वह बच्चे को गोदी में लेकर इधर-उधर टहलती रही । कुछ वह मन में सोच रही थी, जिसका कि अन्दाज़ नहीं लगता था । बार-बार सब बातें भूल जाती । कहीं भी दिल ठहरता नहीं था । अधिक विचार करने का ख्याल भी दिल से उतरना ही चला गया । मन उदास था । दिल में भारी कंपन थी । वह भीतर बिल्कुल डौंवाडोल होती चली गयी । भारी एक भगड़ा, अपने साथ हो रहा था । अपनी अधिक परवाह कर लेना अब वह न चाहती थी ।

दूध आ गया था । वह ‘बेबी’ को दूध पिलाने लगी । पिला कर, उसे सुला दिया । अब ज़रा सँभलकर, निश्चित हुई । कुछ देर तो खड़ी-की-खड़ी ही रही । फिर न जाने क्या सोच, बच्ची के पास बैठ गयी । मेज़ पर पास ही घड़ी टिक-टिक-टिक कर रही थी । एक बज गया था । नौकर ने आकर कहा, “खाना तैयार है ।”

“तू खा ले ।”

“और आप ?”

“मेरा जी ठीक नहीं है । आज न खाऊँगी ।”

“आप नहाई भी तो नहीं हैं ।”

“अभी नहीं………।”

नौकर चला गया । अब वह चैतन्य हुई । धोती पर नज़र पड़ी—

वे ही काले-लाल खून के दाग ! भारी एक पीड़ा दिल को पहुँची। चिन्ता ने उसे ढक लिया। उन बड़े-बड़े दागों से एक छुपी आकृति बनने लगती थी। और भारी दुःखान्त उभर आता। तभी दार्शनिक के समान बात उठती — हिस् जीवन क्या है ? कौन पति और किसका बच्चा ! सब कुछ कच्चा रिश्ता है। कहीं सुख नहीं। सब कुछ एक धोखा है। दुःख ही प्राप्त है। और सब तो है, मृगतृष्णा। आशा-निराशा जीवन की सारी उपेक्षा स्पर्धा; उन दागों के भीतर पैंठ रही थी। वह सँभल गयी। सन्दूक खोला। अपने कपड़े निकाले। हॉलडाल खोल कर कपड़ों को इधर—उधर फैलाया। वहाँ एक मैला सूट मनोहर का भी था। उसने उसे भारी डंक मारा। वह तिलमिला उठी। उसे अलग हटाते हुए सोचा—कौन इसे अब पहनेगा। किस उत्साह से वे साथ चले थे। यदि गाड़ी न लड़ती………!

बाहर आ, वह बाथरूम में चली गयी। नहाने लगी। साबुन की सूझी। सामने महेश का साबुन था। उसे लगाने में हिचक मालूम हुई। फिर सब भूल कर लापरवाही से उसे मल लिया। सारा बदन थक गया था। सिर भारी हो रहा था। खूब-खूब नहाकर वह हल्की होना चाहती थी। वह नहाई-नहाई ! बाहर निकल कर, बाल धूप में सुखाने लग गयी, कुछ सूख जाने पर, भीतर पहुँच, एक मोटी गाँठ बाँध ली। और इतमी-नान से सब कमरों का मुआयना करने लग गयी।

वह छोटा सा मकान था। ऊपर दो कमरे, एक बाथरूम और रसोई का कमरा। नीचे दो छोटे-छोटे कमरे और बैठक थी। ऊपर बड़े कमरे में एक पलङ्ग बिछा था। पास ही एक मेज़ पर किताबें और अखबार धरे हुए थे। दो आलमारियाँ भी वहाँ थीं। एक पर किताबें और चिट्ठियाँ भरी थीं। दूसरे में टी सेट, चाय का सामान, बिस्कुट-सिगरेट आदि धरे हुए थे। दो ईंजी चेरर भी वहाँ पड़ी थीं। सिमेंट की फर्श नम्र थी। दिवारों पर सुन्दर-सुन्दर तस्वीरें टँगी हुई थीं। कुछ कॉलेज

के ग्रुप-फोटो भी थे। आतशखाने में आइना वगैरह पड़ा था। पास ही स्टैंड पर कपड़े पड़े हुए थे। सारी चीज़ें अव्यवस्थित और बिखरी हुई थीं। जैसे कि मालिक और नौकर दोनों को उनकी परवाह कर लेने की खास फुरसत नहीं हो। एक कोने में स्टील के सन्दूक थे। उन पर नाम लिखा हुआ था। खिड़की से लगी लिखने मेज़ की पर भी किताबें और अखबार ही थे। दीवाल पर सामने टेनिस का बल्ला टंगा था। दूसरा कमरा भंडार का था। वहाँ खाने-पीने की सामग्री रखी हुई थी। वह सब चीज़ों को देखकर खूब हँसी। यह उस अनजान गृहस्थी की हालत थी। मन में लोभ उठा कि, सारी चीज़ें सँवार कर रख दे। लेकिन यह नहीं किया। नौकर को बुलाकर सारी बातें समझाईं। सावधानी से सामान को ठीक तरह सँवार कर रखने की हिदायत दी। इधर-उधर देखभाल करने के बाद, वह नीचे के कमरे में पहुँची। वहाँ कोई खास चीज़ें नहीं। एक छोटी मेज़ और कुछ कुर्सियाँ बिछी थीं।

सब कुछ देखभाल कर, वह ऊपर चली आयी। चुपचाप वह इस घर का खाका उतारने लगी। इसी तरह महेश एक अरसे से तब रहता है। उसको पैसे की खास क़ीमत मालूम होने पर भी उसको खर्च करने का सही हिसाब मालूम नहीं है। इस तरह कितने और दिन वह चलेगा। अब यह नहीं चाहिए। इन लोगों को नौकर के हाथ में अपने को सौंप देने में न जाने क्या फ़ायदा होता है। कुछ ठीक देखभाल करें, तो बात भी है। उस पर दावा करेंगे कि वह सारी दुनिया भर की बातों से परिचित हैं। और किसी को भी उनकी बातों में दखल देने का हक़ नहीं है। उनकी जानकारी ठीक और सही बात भी है। लेकिन लड़कियाँ घर की हालत जल्दी पहचान लिया करती हैं। यह भी अच्छी तरह जान लेती हैं कि, किन-किन बातों की ज़रूरत है और किनकी नहीं। कितना क्या चाहिए। वह सब कुछ सुचारु रूप से निभाने के बाद, अपना बड़प्पन ज़ाहिर नहीं होने देती हैं। यह भेद लड़कियाँ किसी को समझाना उचित

नहीं समझती हैं। उनको अपने इस अधिकार पर भारी मोह भी है। इसीलिए गृहस्थी में प्रवेश करते ही, सब कुछ भार अपने ऊपर लेकर, निश्चित ही सब कुछ काम करती रहेंगी। करुणा क्या सारी बातों से अनभिज्ञ थी? वह इस घर को भी अब अपने हाथ में ले लेगी। पति की राय उसे चाहिए। तब महेश की गृहस्थी चलेगी। वह इतना उच्छ्वल न रहेगा।

मन में याद आयी, कि साँझ को वह अपने पति के पास चली जावेगी। उनसे बहुत बातें उसे कहनी थीं। अब उनको खबर मिल गयी होगी। वे अब तक बहुत चिन्तित रहे होंगे। उसने अपना सामान ठाँक-ठीक सँवार लिया। बड़ी देर मेज़ के पास वाली कुर्सी पर बैठी रह गयी। इस महेश ने उसे उबार लिया था। नहीं वह इधर-उधर भगड़े में फँस जाती। वह आफ़त तो मनोहर को लेने आयी थी। वह घाव आजीवन दुखता ही रहेगा। तब वह महेश से वादा करवा लेगी कि कभी-कभी उसको उन लोगों का आतिथ्य स्वीकार करना पड़ेगा। वह ज़रूर मान जायेगा। भला एतराज़ क्यों करने लगा। पति इस महेश को पाकर बहुत खुश होंगे। उठ कर वह चारपाई पर आई। बच्ची सो रही थी। उसके पास ही लेट गयी। थकी-माँदी, भूखी, चिन्तित लेट गयी। नींद आ गयी थी।

महेश पहिले अपने ऑफिस गया। मन उदास और खिन्न था। कुछ देर बाद उसने बाहर आकर ताँगा लिया। सिर दुख रहा था। सारे शरीर पर भारी पीड़ा फैल रही थी। इन चन्द घंटों में क्या का क्या हो गया है। तो आदमी का एक-एक मिनट परिवर्तनशील है। आगे एक रिस्तोराँ मिला। उसे बड़ी प्यास लग रही थी। वह वहाँ उतर पड़ा। उसे बड़ी कमज़ोरी महसूस हुई। सोडा पिया। कुछ देर सुस्ता कर, बाहर चला आया। करुणा के पति के ऑफिस पहुँचा। पता लगा

कि वे कहीं बाहर चले गये हैं। यह भी सुना, गाड़ियाँ लड़ गयीं और उसी से उनके परिवार के लोग आने वाले थे। वह सारी बातें सुनता रहा। उनके घर का पता जानना चाहा, किन्तु किसी को भी मालूम नहीं था। वह ज़्यादा वहाँ नहीं टिका। टाइम देखा और तय किया, स्टेशन वह जावेगा। स्टेशन पहुँच गया। वहाँ अभी वही चर्चा चालू थी। निरुद्देश्य उसने प्लेटफार्म के कई चक्कर लगाये। सब कुछ वही पुराना था, कुछ भी अन्तर नहीं मिला। वही मुसाफ़िर, वैसी ही गाड़ियाँ। उस घटना की वजह रोज़ाना-चर्चा में कहीं ज़रा भी अन्तर नहीं पड़ा। उसे सब भूल जाना चाहते थे। आगे जैसे कि, उसका कोई स्वास महत्व नहीं हो। सोचा उसने कि, कौन जाने, उतने मुसाफ़िरों में करुणा का पति भी होगा। पता कैसे लगे। वह अब स्टेशन मास्टर के कमरे के बाहर पहुँचा। एक खड़े हुए व्यक्ति ने पूछा, “मरे मुसाफ़िरों की कोई सूची है?”

“अभी नहीं बनी।”

“जो मर गये उनका क्या होगा?”

“कुछ ठीक मालूम नहीं है।”

और अधिक बात पूछ लेने का उत्साह उसे नहीं रहा। अब वह कहाँ चला जावेगा। क्या घर जाकर उस युवती से राय ले ले। उसने उसे अपने घर पर क्यों टिकाया है। उसका कोई स्वार्थ तो नहीं था। उसके प्राण भी, उसी युवती ने बचाये हैं। यह एहसान वह आजीवन नहीं भूल सकता है। तब इस इतने बड़े शहर में किसी आदमी का पता लगाना साधारण काम नहीं है। यदि गली-गली जाकर, हर एक मकान वाले से वह पूछेगा तब भी ठीक पता नहीं चल सकता है। ऑफ़िस में भी वह कुछ कह कर नहीं आया है। साफ़-साफ़ एक चिट्ठी लिखकर छोड़ आता, तो संभवतः पता लग जाता। अपना उसका मतलब तब, कम-से-कम ज़ाहिर हो जाता। वह किसी तरह आज ही उसे, स्वामी को सौंप कर इस तवालत से बरी हो जाना चाहता था। लेकिन उतने लोगों के

आगे कुछ भी अधिक बातें पूछने का साहस उसे नहीं हुआ। दुनिया न जाने क्या समझ लेती। अपने सामाजिक अधिकार से बाहर यह बात पहुँच चुकी थी। इस तरह अपनी व्यक्तिगत बातों को, दुनिया भर में फैलने देना, ठीक नहीं होता है। वह फिर ऑफिस पहुँच गया। लोग अपने-अपने घर जाने की तैयारी में थे। एक को रोक कर उसने पूछा, “मिस्टर ‘—’ आए या नहीं।”

“सुना, उनकी ‘वाइफ़’ गाड़ी से आनेवाली थीं। गाड़ी लड़ गयी। वहीं वे चले गये हैं।”

वह अब क्या कहे। फिर भी बोल बैठा, “उसी गाड़ी से मैं भी आ रहा हूँ। मैं बच गया।”

गाड़ी लड़ी और वह युवक बच गया है। इतनी आश्चर्यजनक खबर सुनते ही बाबू भौंचक्के रह गये। पास के आदमियों को पुकारा, “मिस्टर राय, बनर्जी बाबू, पं० मधुसूदन जी! आप भी उसी गाड़ी में थे।”

और सब ने उसे घेर लिया। सब यह जानते थे कि, गाड़ी लड़ी है। बहुत कम मुसाफ़िर बचे हैं। महेश से सवाल पर, सवाल होने लग गये।”

“कितने आदमी मरे होंगे।”

“.....”

“आप बच गये, बड़े भाग्य।”

वह ठीक-ठीक सवालों का उत्तर नहीं दे सका। घबड़ाहट मन में उठी। तभी एक ने सवाल पूछ डाला, “आप उनके भाई तो नहीं हैं।”

“वे मर गये।”

“उनकी ‘वाइफ़’ !”

उलझन में वह कुछ भी नहीं सोच सका। चुप रह गया। फिर उठ कर बाहर चला आया। वह कैसे इतने आदमियों के सामने कह देता कि

उनकी 'वाइफ' उसके पास टिकी हैं। बाहर आते ही, वह ताँगे पर बैठ गया। समस्या कहीं भी सुलभ नहीं रही थी।

“बाबू कहाँ चलना होगा। पाँच घण्टे हो गये हैं।”

“जहाँ तेरी मर्ज़ी हो। मैं धूमना चाहता हूँ।”

वह उस ताँगे वाले को भी समझाना चाहता था कि, मैं उसी गाड़ी से बच कर चला आया हूँ। यह एक बड़ी बात थी! अन्यथा मौत को धोखा देना आसान काम नहीं है। उसने क्या सारा हल्ला नहीं सुना है। तब यह तक्रदीर की बात है। अपनी उस तक्रदीर के साथ, इसी-लिए डाह उसे होती है। और वह ज़िन्दा है। कारण कि उसे ज़िन्दा रहना ज़रूरी था। उसके पास इस वक्त! फिलहाल उसकी हालत भी एक मुर्दे की तरह ही है। जो कुछ अपनापन नहीं महसूस करता है। यह असमंजस की बात भी नहीं है।

उसने सिगरेट पीनी चाही। जेब में हाथ डाला। डिविया निकाली, खाली थी। वह ताँगे वाले से बोला, “बीड़ी होगी?”

और बीड़ी, लेकर उसने सुलगा ली। वहाँ से वह कैन्दुनमंट बाज़ार चला गया। एक डॉक्टर की दूकान पर पहुँचा। डॉक्टर से बोला “मेरा मन ठीक नहीं है। बड़ी बेचैनी है। दिल ऊब रहा है। आज जो गाड़ी लड़ी, उसीमें मुझे भी चोट लगी।”

डॉक्टर हक्का-बक्का उसे देखने लगा। बात समझ कर पट्टी बदली। दवा लगायी। आध घण्टे तक, वह वहीं सोफ़ा पर बेहोश पड़ा का पड़ा रह गया। जब वह होश में आया, तो डॉक्टर ने उसे दवा पिलाई। वह कुछ स्वस्थ हुआ। अब डॉक्टर बोला, “आपको पूरा आराम चाहिए। घर जाइए। हालत चिन्ताजनक नहीं। दवा तीन-तीन घण्टे में खाइएगा। खाना—हल्का सूप, व खाना हो। अधिक धूमना भी ठीक नहीं। कमज़ोरी बहुत है।”

अब वह एक और दूकान पर पहुँचा। वहाँ से उसने बेबी के लिए

बिस्कुट और एक अच्छा खिलौना खरीदा। वह बहुत थक गया था। अधिक तर्क अपने में नहीं किया। रात पड़ने लगी। चारों ओर रोशनी हो गयी थी। दूकानों के बाहर साइनबोर्ड और विज्ञापन चमक रहे थे। उसे लगा कि वह दुनिया में निपट अकेला है। वह आतुर हुआ। कुछ भी समझ में ठीक-ठीक विचार नहीं उठ रहे थे। उसकी फिक्के भी एक-एक कर अस्त होने लगीं, नूतन एक धारणा में जैसे वह तबदील हो रही थीं।

ताँगे वाला बोला, “घर चलिएगा न?”

“हाँ।”

ताँगा चलने लगा। एकदम वह चौंक पड़ा। कहा “ज़रा कम्पनी बाग़ चलेंगे।”

वहाँ वह हरी दूब पर लेट गया। ऊपर आसमान में तारों को देखता रहा। वे टिमटिमा रहे थे। आसपास बेन्चों से कभी-कभी कोई धीमा अस्पष्ट स्वर सुनाई पड़ता था। वह न जाने कितनी देर तक वहीं पड़ा रह गया।

ताँगे वाला फिर आकर बोला, “बड़ी रात हो गयी है।”

सच ही उसने भी पाया कि रात काफ़ी घनी हो आयी है। घर पहुँचा, दस बज गये थे।

करुणा की नींद टूटी । दिन ढल चुका था । छै भी बज गये । आँखें मलती हुई वह उठ बैठी । नौकर सामने खड़ा था । अन्दर आकर बोला, “घर में तो सामान कुछ भी नहीं है । मैं बाज़ार हो आऊँ । बाबूजी भी अभी तक नहीं आये हैं । चाय का पानी चढ़ा का चढ़ा हुआ है ।”

वह चुप रही ।

“आप चाय पी लें ।”

उसने मना कर दिया ।

नौकर बाहर चला गया । कुछ देर बाद लौट कर आया और पूछा, “आपको कुछ मँगवाना तो नहीं है ?”

“नहीं ।” कुछ सोचकर फिर बोली, “लौटते हुए एक तांगा लेते आना । मुझे जाना है । वे भी अभी नहीं आए । बड़ी देर हो गई है ।”

“बाबूजी अभी तांगे में आते ही आवेंगे । उसी में जा सकते हैं ।”

नौकर चला गया । और करुणा सोच रही थी, अब उसके स्वामी आने वाले हैं । वह उनके साथ चली जावेगी । वह अपने स्वामी के नज़दीक चली जाना चाहती थी । इतने बड़े दुःख को वह अपने में ही दबाए हुए थी । स्वामी का बहाना पाकर, अपने को समूची, उनको ही सौंप देवेगी । अभी तक कोई भी लौट कर नहीं आया । देर हो गयी है । काम रहा होवेगा । वह महेश भी क्या है ? ज़रा सी बात के साथ

इतना बड़ा भार ले लिया है । करुणा ने ऐसे लड़के दुनिया में कम देखे थे । उसके लिए, उसके दिल में उदारता भर गयी । वह जान नहीं सकी कि, क्यों वह महेश के लिए परेशान है । यह बात ज़रूरी थोड़े ही है । उसका पति है । वह अब पति के पास चली जावेगी । आखिर में वह उसी ओर आलमारी के पास खड़ी हो गयी । खोलकर देखा । किताबें टटोलीं । मोटी-मोटी अँगरेज़ी की किताबें और अख़बार थे । फिर वह कमरे में इधर-उधर टहलती रही । बल्ब की रोशनी से कमरे में चमक फैली हुई थी । वह चिन्तित हुई । नौकर लौट आया था । सात बज चुके थे । उसने उलझन में पूछा, “वे कै बजे आया करते हैं ?”

“पाँच ।”

“आज अभी तक नहीं आये हैं ।”

“शायद कहीं किसी काम से अटक गये होंगे ।”

नौकर रसोई में चला गया था । धीरे-धीरे बाहर अन्धकार खूब फैल गया । साढ़े सात भी बज गये । वह चुपचाप आराम कुर्सी पर लेट विचारों में डूब गयी । दिल में छुटपटाहट फैल रही थी । क्या करे । बात न जाने क्यों हो गयी थी ? अन्दाज़ भी तो कुछ ठीक सा नहीं लगता था । फिर दुःख मन को दबा रहा था । वह उसे बहलाना चाहती थी । मनोहर का चेहरा बार-बार आगे आ, फिर ओझल हो जाता था । और स्वामी……… ! वह अब आकर, उसे उबार लेवेंगे । अपने मायके की याद आती । वहीं से वह आयी है । वे लोग क्या-क्या इस वक्त नहीं सोच रहे होंगे । किसी को भी यह मालूम नहीं होवेगा कि, वह वहाँ है । फिर परेशानी बढ़ने लगी । मायके के जीवन का अनुभव आगे आता । जिसके विपरीत, इस समय कोई उसके पास नहीं है । मायके के बाद वह इस तरह एक अपरिचित घर में आ पड़ी है । परिवार भी यह ठीक सा नहीं । उसने तार भी नहीं दिलवाया । अन्यथा यह दिक्कत

न होती। वह कभी तो भावुक बन बहुत उतावली हो उठती थी। अपनी भावुकता जैसे कि रुकावट नहीं। स्वामी, मनोहर और महेश—करुणा ठीक-ठीक तीनों को पहचान लेना चाहती थी। अपनों की पहले छान-बीन न कर, वह सारा रिश्ता सही-सही जान लेने की फ़िक्र में थी। अकेले में किसी तथ्य पर न पहुँच सकी। आज तक जितनी ज़िन्दगी पार की, ऐसी गूढ़ पहेली आगे नहीं आयी थी। पति की ओट में वह अच्छी तरह चलती थी। यह महेश तो……! उसका महेश से कौन सम्बन्ध है? और वास्ता……! उसने अपना कर्तव्य निभाया था। उसको विश्वास मान लेने के बाद उसके दिल में कहीं भी कोई हिचक नहीं उठती है। वह इसीलिए साथ आने में आनाकानी नहीं कर सकती थी। अब पति के पास चली जावंगी। वही उसकी सही जगह है। उसका अपना पूरा गृहस्थ है। वही उसका सब कुछ है।

‘बेबी’ रो रहा था। वह फिर भी उसके पास नहीं पहुँची। कौन जाने वह मोह जगा दे। नौकर कमरे में आया। उसने उसकी आहट पायी। फिर भी आँखें मूँदे हुए लेटी रही। नौकर बेबी को सुला रहा था। नींद पूरी हो जाने पर बेबी फिर भला क्यों सोता। वह और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। हार कर उसने आँखें खोल लीं। ‘बेबी’ को लिया, थपथपा कर दूध पिलाने लगी। फिर थककर मेज़ से लगी कुर्सी पर बैठ गयी। सारी मेज़ किताबों से भरी हुई थी। उसीमें उसे चमड़े की एक मोटी डायरी दीख पड़ी। उसे किताब हटा कर उसने अलग निकाल लिया। बहुत सारे पन्ने सुन्दर छोटे-छोटे अक्षरों में लिखे हुए थे। पढ़ने का इरादा हुआ। फिर अपना कोई अधिकार न समझ डायरी चुपके से रख दी। मन नहीं माना। कुतूहल ने दबा लिया।

डायरी के पन्ने पलटे। एक बार शुरू से आखिर तक देखा। रुक-रुक कर कुछ लाइनें पढ़ने लगी। अलग-अलग तारीखों में कुछ-न-कुछ नियमित रूप से लिखा हुआ था।

एक पन्ना वह पढ़ने लगी :

—सत्य के लिए ही यदि जीवन मिला है, तो वह सत्य क्या है ? क्या जीवन सत्य नहीं । प्रति दिवस का संघर्ष सत्य नहीं । रोज़ के अनुभव क्या हैं ? तब जीवन केवल एक 'भगड़ा' है ।

आगे और पन्ने पलटे । पढ़ा, एक जगह लिखा हुआ था :

—हम यह जान कर भी कि, उसका मिलना मुश्किल है उसे अपने पास रखने का कुतूहल नहीं बिसार सकते हैं । हृदय में कभी-कभी एक गुदगुदी होती है । तब तुलना का सवाल है :

अ० अच्छी है । सुन्दर, भोली.....

ब० वह भी तो ?

स० अपनी उस रूपरेखा में ।

इन तीन लड़कियों पर सोचना शुरू किया । दिल में इन तीनों को चलते-फिरते भी पाया । इन्कार बात से नहीं किया जा सकता है । इन पर सोचना तब उपयोगी है । वह सब क्या व्यर्थ नहीं है ? फिर भी सोचा ही... कुछ भी हो, उस व्यर्थ को बेकार नहीं गिनना चाहते हैं । यह लड़कियाँ हैं । और पुरुष की आँखों से उनको देखने का हक़ पाकर, हम उनको भूलना नहीं चाहते हैं ।

अब वह महेश पर सोचने लगी । यह सब क्या लिखा हुआ था । जैसे किसी निर्णय को आगाह करना वह सीखा हो । यह भी उसने साफ़-साफ़ सुझा दिया था कि वह अकेला ही घर पर है । और कोई वहाँ नहीं है । एक नौकर है । उसे कोई खास मतलब महेश से नहीं है । यदि वह ना कर देती, वह अनुरोध नहीं करता । उसने पन्ना पलट डाला, पढ़ा :

—मैं संसार से घृणा करता हूँ । नारी से भी मुझे घृणा है । अब तो अपने से भी घृणा करता हूँ । घृणा में पैदा हुआ । जीवन पाकर वहीं

चला और उसी में जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। आखिर उसी घृणा 'के बीच एक दिन निर्जीव सोया हुआ भी दुनिया पावेगी। तब क्या मेरा अपना कोई अस्तित्व नहीं है। मैं कैसे अपने से छी-छी-छी करना सीख गया। दुनिया पर मेरा विश्वास चूक जावे, अपना तो मेरा कोई दरजा है ही। और यह घृणा तो मेरे जीवन की गति-सी बाक़ी रह गयी है। मेरी अपनी कोई भी सीमा नहीं। कभी-कभी वैसे अपने को टटोल लेता हूँ। कुछ भी नहीं मिलता ...।

वह अटकी। डॉयरी बन्द कर दी, अभी तक महेश और उसके स्वामी नहीं आये थे। वे लोग क्यों नहीं आये हैं। कम-से-कम महेश लौटकर तो कुछ बातें सुनाता। सुबह वह खा-पीकर भी नहीं गया था। वह भी लापरवाह है। खाने को पूछा ही कब था। अपने स्वार्थ की वजह, उसका हित भूल गयी थी। अब वह उसके पति को साथ लाए बिना लौटेगा भी नहीं। वक्त काफी गुज़र चुका था। अब एक-एक मिनट काटना मुश्किल हो रहा था। सब कुछ असह्य था। अब वह क्या करे? बच्चे को गोदी में लेकर वह बाहर निकली। नौकर वहीं खड़ा था। पुकारा “भोला”

“हाँ।” कह कर वह आगे आ पहुँचा।

वह सारी बात भूल गयी। क्या पूछना चाहती थी, समझ में नहीं आया। कुछ सोचकर कहा “मैं तो खाना खाऊँगी नहीं। अपने और बाबूजी के लिए ही बनाना।”

“आप?”

“मुझे भूल नहीं है। फिर तबीयत भी खराब है।” यह कह कर वह अन्दर चली गयी। वह नौकर की और बातों का जबाब नहीं देना चाहती थी। बस दीवाल पर टँगी तस्वीरें देखने लगी।

एक: माँ बच्चे को गोदी में लिए थी। बच्चे के चेहरे पर तप्त तेज

था। वह माँ और बच्चे की भावना के बीच बह गयी। नीचे लिखा था—क्राइस्ट और मेरी।

एक बार फिर बच्चे को देखा। वह उसे पहचानती थी। फिर भी माँ की गोदी वाला वह बच्चा बहुत भोला लगा। माँ उसे भारी हिफाजत के साथ पकड़े हुए थी। उस ईसू मसीह के बारे में अधिक कोई ज्ञान जैसे, अब उसे न चाहिए था। मातृत्व का सही दरजा ही उसकी देन लगा।

दूसरा: हथौड़े, हँसिया और एक अजीब चेहरे वाला व्यक्ति उसमें था। माथे पर सिकुड़न पड़ी, बहुत गंभीर, जैसे कि गूढ़ विचार में लीन हो। लिखा था—स्टालिन।

आगे महेश का विश्वविद्यालय वाला फोटो देखकर हँस पड़ी। बोर्डिंग वाले किसी नाटक की तस्वीर थी। उसमें वह महेश को पहचान नहीं सकी। सब लोग तो नाटक वाले कपड़े पहने हुए थे। नीचे लिखे नामों को पढ़ते-पढ़ते महेश के नाम पर अटक गयी। फिर एक-एक लड़के को देखा। एक जगह महेश बैठा हुआ था। लम्बा राजाओं वाला चोंगा, बड़ी-बड़ी मोछें। सिर पर ताज और पास में महारानी भी बैठी हुई थीं। वह हँसी नहीं रोक सकी। मन ही मन खूब-खूब हँसी। नाटक का वह स्वांग बहुत प्यारा लग रहा था।

फिर एक प्राकृतिक दृश्य पर उसकी नज़र पड़ी। पहाड़ी रास्ता, संध्या हो रही थी। सिर पर धरे कलशे को एक हाथ से थामे हुए, रम-लियाँ पहाड़ी पगडंडी पर चढ़ रही थीं। पेड़ों के झुरमुट में, गाँव छुपा हुआ था। एक युवती थक कर, पीपल की मुँडेरों पर पानी का कलशा बिछाए, आराम कर रही थी। सामने दूर पहाड़ी की घाटी दीख पड़ती थी। वहाँ भेड़ें एक छोटी पुलिया पार कर रही थीं। चरवाहा पीछे था। उसके पीठ पर हरे पत्तों का गट्ठा था। ऊन का गुच्छा कमर से लटक रहा था और तकली से ऊन कातता जाता था।

एकाएक वह सँभली। तांगे की खड़खड़ाहट उसने सुनी। एक झरोखे से उठकर वह, अनगनी-अनमनी, एक किनारे खड़ी हो गयी। महेश नौकर को पुकार रहा था। उसकी आवाज़ कानों में पड़ी। सोचा कि स्वामी भी आ गये होंगे। बेबी को गोदी में ले लिया। कपड़े ठीक तरह से सँवारते-सँवारते ख्याल आया कि वह अब इस घर में चन्द और मिनटों की मेहमान है। एक नज़र कमरे के चारों ओर डाली। खड़ी ही रही— खड़ी ! खड़ी !!

भोला ऊपर सामान लाया। बड़ा सा गुड्डा, विस्कुट का टिन। वह अपने में बोलती रही, “अब हमें जाना है। उफ़, बड़ी रात हो गयी।”

भोला चीज़ें रखकर, चुपचाप खड़ा रहा। वह अब बोली, “जा अपने बाबू को ऊपर बुला ला।”

नौकर चला गया। करुणा अपने में गुनगुनाती रही, बड़ी रात हो गयी है।

कि महेश कमरे में चला आया। उसका चेहरा उतरा हुआ था। वह बहुत सुस्त लगा। नौकर के हाथ से बच्चा लेकर बोला, “नीचे दरवाज़ा बन्द कर आ।”

नौकर चला गया। अब वह बोला, “उनका कोई भी पता नहीं लग सका है। दो बार ऑफिस गया। इधर-उधर मारा-मारा फिरा, लेकिन वे नहीं मिले हैं।”

करुणा सन्न रह गयी। महेश को देखा। उसका मुरझाया चेहरा, अस्वस्थ शरीर—दिन भर की परेशानी की छाप उस पर थी। वह महेश को खूब-खूब देखती ही रह गयी। फिर सोचा कि, पति न जाने कहाँ होंगे। वह दूसरे के घर में पड़ी हुई है। वह यहाँ क्यों आयी थी! उसके दुर्भाग्य का नतीजा क्या निकलेगा। अब क्या होनहार है।

महेश बाहर, कुछ नौकर से कह रहा था। भीतर तभी लौट आया। थका तो था ही, कुर्मी पर बैठ गया। कुछ देर बाद बोला, “आप खड़ी

क्यों हैं। बैठ जाओ। कुछ खास बात नहीं है। पहले मुझे भी ऐसा अन्दाज़ नहीं था। कल वे मिल जावेंगे। आज भर आपको तकलीफ़ उठानी पड़ेगी।

करुणा कुछ भी बोल नहीं सकी।

महेश तो कहता रहा, “दुनिया में आदमी परिस्थिति पर निर्भर रहता है। वह और क्या करते। हम लोगों की ज़िन्दगी भी कच्चे सूत की तरह है।”

करुणा फिर चुप ही रही। कुछ देर के बाद महेश कमरे से बाहर निकला। रसोयी में भाँका, भोला खाना बना रहा था। चुपचाप घूमता ही रहा। छत के एक कोने में, मोड़ा धरा हुआ था, थककर उसी पर बैठ गया। धीरे-धीरे सो भी गया।

भोला बाहर आया। कमरे में पहुँच कर बोला, “खाना तैयार है।” लेकिन बाबू यहाँ नहीं थे। करुणा चौंक कर उठी। वह न जाने अब तक किस ध्यान में डूबी हुई थी। कहा, “मैं नहीं खाऊँगी। उनको खिला ले।”

“बाबूजी कहाँ हैं?”

“बाहर चले गये थे।” सतर्कता से वह बोली।

बाहर का स्विच दबाकर, भोला ने रोशनी की। करुणा ने देखा, महेश चुपचाप मोढ़े पर ही सो गया था।

सब कुछ देखकर करुणा ने सोचा कि, वह बहुत थक गया है। उसका अपना सगा कौन था, जो उसकी परवाह करता। मंत्रमुग्धा-सी वह उसके पास चली गयी। पास जा कर पूछा, “सो गये हो? खाना खा लो।”

महेश ने आँखें खोल ली थीं।

“इस तरह सोकर……।” अधिक वह कुछ न जाने क्या बोलना चाहती थी, पर चुप रह गयी।

महेश आँखें मलता हुआ उठ बैठा। रोशनी में करुणा का मलिन मुख भाँप लिया।

नौकर ने पूछ डाला, “आप बाहर ही खावेंगे।”

“छोटी मेज़ लगा दे।” करुणा बोली।

“आप भी चौके में खावें।” महेश ने कहा।

“मेरी तबीयत ठीक नहीं है।”

“कुछ तो खाना ही चाहिए।”

“इस वक्त नहीं!”

“सुना, सुबह से आप भूखी हैं। बीमार पड़ने का खतरा है।”

“आज के दिन……!” करुणा गद्गद हो गयी।

“तब दूध पी लीजिएगा।” उस चिर-प्रचलित संस्कृति के खिलाफ़ अनुरोध वह नहीं कर सका। खुद उसकी तबीयत खराब थी। वह खाना नहीं खाना चाहता था। नौकर से बोला, “मैं भी दूध पी लूँगा। हरा रत मालूम पड़ रही है। तू मेरा कमरा नीचे ठीक कर आ।”

नौकर चला गया। करुणा होश में आई, आँसू पोंछ, धुले स्वर में पूछा, “तबीयत ज़्यादा खराब तो नहीं है?”

किन्तु महेश तो समझाते हुए बोला, “चिन्ता करने से कोई भी लाभ नहीं होगा। न अधिक दुःख मोल लेना ही भली बात है। आप आराम करें।”

और महेश नीचे चला आया। बड़ी देर तक बैठा-का-बैठा ही रह गया। चुपचाप लेटा और नींद आ गयी।

नौकर ऊपर पहुँचा। दूध लिया। महेश को सोता पा, ऊपर करुणा के कमरे में गया। वह अभी तक खड़ी-खड़ी न जाने क्या खिड़की के बाहर देख रही थी। शायद अपने भगवान से प्रार्थना कर रही थी। ऐसा अवसर उसके जीवन में पहले-पहल आया था। कि नौकर बोला, “आप दूध पी लीजिए।”

“उन्होंने पी लिया ?”

“नहीं ।”

“बड़ा लापरवाह है तू । उनको दे आ ?”

“वे दवा पीकर सो गये हैं । जगाने पर नाखुश होंगे ।”

कुछ देर करुणा चुप रही । खयाल तभी आया कि महेश ने कुछ भी खाया-पीया नहीं है । मैं उनकी कौन हूँ, जिसके लिए वे दिन भर परेशानी उठाते रहे हैं । तबीयत भी ठीक नहीं है । डॉक्टर ने भी तो कहा था, भारी-सी चोट मालूम पड़ती है । नौकर से सावधान हो बोली, “तू दूध ले आ । मैं दे आऊँगी ।

दूध का गिलास लेकर चुपचाप नीचे उतरी । कमरे में रोशनी की । और दूध भेज पर रख दिया ।

महेश सोया हुआ था । उसका चेहरा मुस्त और पीला पड़ा हुआ मिला । करुणा को सहसा उसे जगाने का साहस नहीं हुआ । कैसे जगा ले । मन की सारी सामर्थ्य बटोर वह फिर बोली, “दूध पी लो ।”

महेश की नींद नहीं टूटी । कुछ देर बाद वह हिलाते हुए बोली, “उठो ! उठो !!”

वह फिर भी गहरी नींद में सोया हुआ था । नींद से छुटकारा मिलना भी आसान काम नहीं है । करुणा भी चुपचाप नहीं रही । ज़रा ज़ोर से हिलाया । महेश की आँखें खुल गयीं । असमंजस में उठता हुआ बोला, “आप !”

“दूध पी लो ।”

“आप क्यों आर्यी—भोला ले आता ।”

“आप सोये हुए थे । भोला जगाते डर गया ।”

महेश ने दूध का गिलास ले लिया । करुणा का हाथ उससे छू गया । वह डर गयी । अपने को संभालते हुए बोली, “आपको तो बुखार है ।”

“कुछ हरास्त है ।”

“हरारत कहाँ है। दिन भर इतना क्यों मारे-मारे फिरे हो। अपनी कुछ हिफाजत तो होनी ही चाहिए। शरीर का ठीक रहना, अच्छी बात है। सिर दर्द तो नहीं है ?”

महेश ने सिर हिलाकर इन्कार कर दिया।

करुणा कब मानी। माथा छूते बोली, “ओफ़ इतना गरम।” वह दबाने लगी कहते-कहते, “आपने तो कुछ भी नहीं कहा। तबीयत बहुत खराब लगती है।”

“ना ! ना !! ना !!!” महेश बात अस्वीकार करता हुआ बोला। वह नहीं मानी, दबाती-दबाती रही।

अब महेश, बोला “चोट के कारण पीड़ा है। इस तरह फायदा नहीं होगा।”

जब महेश को नींद आ गयी, तो करुणा ने उसे ठीक तरह चादर उढ़ा दी और रोशनी बुझा, दरवाज़ा ढक, चुपचाप ऊपर चली गयी। गद्दे से बिस्तर पर लेट गयी। उसकी सारी नारी-लज्जा तो अवहेलना में खो गयी थी। उमे नींद न आयी। कोशिश करने पर भी नहीं सो सकी। बड़ी रात तक वह जगी की जगी रही। कई बार दिल में बात उठी कि, वह महेश को देख क्यों नहीं आती है। वह न जाने कैसा होगा। बात दबती जाती थी। न जाने कब सो गयी।

जीवन पर निर्भर रहने वाली सारी परिस्थितियों पर अधिक दलील नहीं की जा सकती है। उनसे सरोकार रोज़ ही पड़ता है और चाह कर भी हम उससे अलग अपने को नहीं पाते हैं। हर एक व्यक्ति यह जानता है। इसे मान भी लेता है। अपनी राय देने का फिर भी उसे अधिकार है। तब पुरुष सिर्फ़ एक है और नारी भी एक। बुद्धिवादियों ने अपनी सहूलियत के लिए उनको अलग-अलग फ़िरकों में बाँट दिया है। नारी अपनी ममता और मोह के मलहम से पुरुष के जीवन के घाव की दवा करेगी। उस पर पड़ी पपड़ी को नहीं खुरचती है। स्वस्थ आदमी

से वह कितना ही भगड़ा कर, उसको कितना ही क्रसूरवार साबित कर ले; बीमार व्यक्ति के लिए उसे भिन्नक नहीं रहती है। उसके स्वातिर वह सब बातें सह लेने का दावा रखती है। लेकिन यह भी अपवाद नहीं है कि नारी उचित वातावरण और परिस्थिति पर अपना पक्ष पेश कर, पुरुष को जीत लेना चाहती है। पुरुष जैसे कुछ नहीं है। वह नारी के अभिमान का भी आदर करेगा। यही वह हितकर मानता चला आया है। न छोटी-छोटी बातों को चीर फाड़ कर, उसकी विवेचना ही वह करता है। यह दुनिया का सारा व्यापार रोज़ चलकर थकता नहीं है। उसके आगे मनुष्य सिर्फ़ थोड़े अभिमान की तरह प्रति दिवस आदि काल से मिटता चला आया है—वही उसका भविष्य !

तब करुणा सो ही गयी। अपने को जैसे कि उसने उबार लिया। अब वह मन की कमज़ोरी बिसार चुकी थी। अपने आगे पड़ी अड़चनों का निपटारा उतना सहल नहीं निकला, जितना कि वह सोचती थी। तब भी वह चिन्तित अधिक अब नहीं थी। जानकर कि भविष्य का थोड़ा-सा टुकड़ा तक उनके हाथ में नहीं है। उनको तो आज में कर्तव्य की तरह पड़ा रहना है। यह उनकी मजबूरी ही क्यों न हो, कर्ता से लड़ाई ठान कर भी, कुछ हासिल होना आसान काम नहीं है। यही पुरुष और नारी जाति का हाल है। परिस्थितियाँ सबको अपना बना लेती हैं। अपनों को मिटानेवाली शक्ति भी उनमें है ही। जैसे कि इन्सान सिर्फ़ एक खिलौना ही हो, जहाँ चाहो पटक दो। वहीं वह पड़ा-पड़ा रहेगा। कभी सँभल कर अपने चारों ओर देखेगा, तो पायेगा कि एक बड़ी दुनिया फैली हुई है।

आधी रात को महेश की नींद टूटी। वह चुपचाप लेटा हुआ ही रहा पसीने से लथपथ भीग गया था। बुखार भी उतर गया। अब कुछ स्वस्थ लगा। सिर पर, अभी भी थोड़ी सी पीड़ा थी। बासी चोट पर ज्यादा पीड़ा होती ही है। साथ-साथ करुणा का एहसान का भार भी उसे दबाता जा रहा था। ज़रा सी लापरवाही के कारण यह सब हो गया। यदि वह एक तार दे देता, तो इस सारी भ्रंशट से बरी हो जाता। यह सारा भगड़ा तो खुद उसी ने मोल लिया था। प्रति दिवस में जिस कमी को आज तक उसने महसूस नहीं किया, वह अब मालूम होने लगी। वह इस नारी का आदर पाकर कृतार्थ हो गया। उसके हारे, मुर्दा जीवन पर, करुणा ने प्राण डाल दिए थे। कितना उत्साह उसे नहीं सौंपा था। अब तक नारी के प्रति फैली भावनाओं का इतने समीप से उसने अनुवीक्षण नहीं किया था। अब वह उस तृष्णा को समझ गया, जो सन्देह की तरह, जीवन की भरपूरता में टिक जाती है। जिसे वह यथार्थ में थोथी घोषित करता था, वह सही और खरी निकली।

लड़कियाँ उसने देखी थीं। उनसे वास्ता भी उसका पड़ा था। विश्वविद्यालय के जीवन में महेश एक लड़की को ट्यूशन पढ़ाया करता था। वह लड़की मैट्रिक में पढ़ती थी। उसे उसने प्यार किया था। लेकिन किताबों पर उठते सवाल-जवाब से अधिक और कुछ भी उसे नहीं मिला। उस लड़की को अपने मास्टर की समझ का बड़ा गर्व था।

वह पढ़ने में बहुत तेज़ थी। वह उसे पढ़ाने में इतना मशगूल रहता था, कि फ़िज़ूल बातें सोच लेने की कुर्सी नहीं मिलती थी। उसके कारण वह उसके घर भर से परिचित हो गया था। उस परिवार को वह सहूलियत के साथ भाँपने का आदी भी पड़ गया था। मैट्रिक पास करने के बाद, लड़की की शादी हो गयी। पढ़ाई का सिलसिला भी टूट गया था। मास्टर साहब और उसका रिश्ता भी वहीं निपट गया। आगे वह कहीं भी दिखलाई नहीं पड़ी। उसका पति अलबत्ते एक बार नज़र पड़ा था। कोई खास बात उसे नहीं मिली। जैसे कि वह कोई महत्व की बात नहीं हो। इस तरह हर एक अपनी हालत पर अधिक तरस खाना भी नहीं चाहता है। नहीं! वह मिथ्या अभिमान की बात होकर रह जावेगी। जिसका निवारण अकारण नहीं किया जा सकता है—व्यर्थ की तरह।

वैसे महेश ने नारी की जगह पर कभी विचार अधिक नहीं करना चाहा। यह उसका उसे नहीं पेरता था। हमेशा अलग दूर ही रहने की आदत उसकी रही। अक्सर भी न मिला था। पढ़-लिख, नौकरी कर ली थी। अपने नज़दीक किसी को लाने की चाह, निपटारा वह साबित न करना चाहता था। सरोकार रखनेवाला ज्ञान अपेक्षित ही ठीक उसे लगा। नहीं तो दुनिया भर के आदमियों की तरह वह अपने को ज़रूर बुद्धिमान पाता। वह चुप रहा। उन विचारों के अस्तर को खोलने की गुंजायश जैसे कि न थी। वह इस वक्त बहुत अस्वस्थ था। पीड़ा सारे शरीर पर अभी भी थी। बार-बार दिल में कंपन होती। वह सो गया। नींद आ गयी थी।

बड़ी सुबह जब नल खुला और गुसलखाने से पानी की आवाज़ आयी, तो करुणा की नींद टूटी। वह अपने को टटोलने लगी। कहीं भी कुछ अन्तर नहीं था। यह पहला ही मौका ऐसे आश्रय लेने का था। ख्याल आता : स्वामी न जाने क्या सोच रहे होंगे। कौन जाने

उनको निश्चित हो गया हो कि करुणा मर गयी। अब जब वह उनके आगे खड़ी होगी, तो वे दंग रह जावेंगे। वह ज़रूर कल वहाँ चली जावेगी। यहाँ रहेगी नहीं, अब यहाँ रहना उचित भी नहीं था। इस तरह टिक जाने पर दुनिया क्या-क्या कहने लगती है। उस अधियारे में एक बार मनोहर की भारी आवाज़ सुनाई पड़ी। वह क्या चाहता है। उसकी मौत ! वह कुछ नहीं जान सका कि वह मरने वाला ही है। तब वह महेश के घर में पड़ी है। मनोहर तो अब..... भारी डर लगने लगा। उस मनोहर को वह आजीवन क्या इसी तरह भय की तरह आगे खड़ा होवेगा। उसके शरीर की याद आयी। कैसा भद्दा लगता था वह। यह मौत क्या बहुत भदी होती है। वह मरने की उम्र का कब हुआ था। फिर उसने हँसने की आवाज़ सुनी। भय से सिहर उठी। वह मनोहर का स्वर था। वह क्यों इस तरह मग्न हो उड़ा रहा है। तभी कमरे में भारी-भारी पैरों से चलने की आहट मिली। लगा कोई उसके पलंग को हिला रहा है। कुछ देर के बाद आलमारी को खोलने का शब्द उसने सुना। एकाएक लगा कि उसका हॉलडॉल फैला कर कोई कुछ टेंड रहा है। एक पैनी खुशी की हँसी उसने पायी। कोई बुदबुदाता, उसके कान में पूछ रहा था—मेरा सूट कैसा कहाँ है। मैं अपना सूटकेस लेने आया हूँ। सूट तो मिल गया। तुम यहाँ क्यों पड़ी हो।

वह जोर से चिल्लाना चाहतो था कि किसी ने उसका मुँह ढँक कर कहा—तुम मेरा अब कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती हो।

उसके कानों में उसकी सांस की ठंडक लगी। वह समझा रहा था। न जाने क्या-क्या ! विवेक के साथ कहता : तब भी मुझ में प्राण थे भाभी। तुम उन भीतर छुपे प्राणों का अन्दाज़ नहीं लगा सकी हो। निर्मोही निकलीं तुम। कौन इस तरह नहीं तो, अपने से छुटकारा चाहता है। अब मैं.....

बह डरी-डरी ! वही-वही स्वर था—ओ भाभी ! भाभी !!

उसके मुँह से भारी चीख निकली । आँखें मँदे वह पड़ी रह गयी । बड़ी देर तक लेटी रही । जब आँखें खुलीं, देखा कि रात खुल गयी थी । नौकर चाय ले आया । पूछा उसने, “वे उठ गये हैं ।”

“वे पड़े ही हैं । उनकी तबीयत ठीक नहीं ।”

मनोहर का सावित किया हुआ अपराध वह भूल गयी । उस अन्याय पर अधिक नहीं सोच सकी । अनजान वह थी । बस चुपचाप नीचे उतरी । महेश आँखें मँदे पड़ा का पड़ा ही था । न जाने कहाँ-कहाँ विचारों में लीन हो पड़ता था । पूछा उसने, “अब आपकी तबीयत कैसी है ?”

धीमे बोला महेश, “ठीक हूँ मैं !”

“और पीड़ा ?”

“वैसी ही है ।”

“किसी डॉक्टर को दिखला लाओ ।”

“कल दवा ले आया था ।”

करुणा चुपचाप बैठ गयी । महेश ने उससे अब पूछा, “आपके पिताजी क्या करते हैं ।”

“मर गये ।”

“माँ है ?”

“नहीं । चाचा ने पाला है ।”

“भाई !”

“तीन छोटे हैं ।”

कि भोला आया, पूछा, “चाय ले आऊँ ।”

महेश ने हामी भरी ।

भोला चाय ले आया था । सब चीज़ें उसने मेज़ पर रख दीं । महेश चाय बनाने लगा । भोला बोला, “बच्चा रो रहा है ।”

करुणा उठकर चुपचाप ऊपर चली गयी। 'बेबी' की गदेली बदल डाली। उसका हाथ-मुँह धो दिया। महेश के लाल किनारीवाली तौलिया में रखकर, गोदी में ले, नीचे आ गयी।

महेश का ध्यान उधर गया। बेबी को उससे ले लिया। उसने आना-कानी नहीं की। फिर उसे अपने बिस्तर पर सुला दिया और चाय पीने लगा। नौकर चला गया था। युवती टोस्ट पर मक्खन लगाती रही। महेश ने कुछ नहीं कहा। युवती ने चाय तो पी ली, पर टोस्ट नहीं खाये।

पूछा महेश ने, "आप टोस्ट नहीं खाती हैं।"

"कॉलेज पढ़ने कब गयी थी।"

तब महेश गद्गद हो उठा। कहा, "मेरा तो अभी वही पुराना हिसाब है। किताबें हैं, अखबार, और मेरा बावर्ची ब्वाँय भोला ही है। वक्त पर मुँह भी लग जाता है और साथ-साथ बाबूजी के सामान को इस्तेमाल करना भी वह अपना हक़ समझता है।

"आप अपनी माँ को क्यों नहीं बुलवा लेते हैं।"

"वह बेचारी स्वर्ग में होगी। सात सन्तानों में से एक सन्तान बाक़ी बची। उसका सुख भी उसे देखना नहीं बदा था।"

"और घर में.....।"

"एक चाची है। उसको माहवारी खर्चा भेजा करता हूँ। सन्तुष्ट है वह। पहले पढ़ाई वाले ज़माने में ट्यूशनो पर जीवन निर्भर रहता था। अब पैसा काफ़ी मिल जाता है।"

युवती चाय पीती रही। मन के भीतर सारी बातों को बिछाने का सवाल आगे नहीं आया। फिर एकाएक फूट पड़ी, "आप चाची को ही बुलवा लीजिए। तमाम चीज़ें ख़राब हो रही हैं। मैंने भोला को समझाया था। लेकिन मालिक की आदतों के सहारे नौकर खड़े होते हैं। वही क्या करे।"

अधिक महेश जान नहीं सका । बात जैसे कि बीच में ही टूट पड़ी थी । और युवती अधिक कहना चाह कर भी चुप थी । हँसते बोला वह, “अब मैं भी गृहस्थी जोड़-जाड़ डालने की फ़िक्र में हूँ । चाची की इस हवस को पूरा किए बिना भी काम नहीं चलेगा । आगे जब कभी आप आवेंगी, मैं सोलह आना गृहस्थ मिलूंगा ।”

करुणा ने सुनकर, अपनी कोई राय प्रकट नहीं की । चाय पीती-पीती रही । जैसे कि आगे अधिक कुछ भी नहीं कहेगी ।

वह महेश तो बात का निर्णय कर, चटपट अपनी राय दे देने का पक्षपाती था । जैसे कि सच ही वह जल्दी गृहस्थी रचेगा । इन आयी-गयी बातों पर अधिक विचार कोई भी नहीं करता है । कहकर दूसरों का मनबुझाव कर लिया जाय, इसमें नुक़सान ही क्या है । कहने में कोई भी कठिनाई मालूम नहीं पड़ती है । अमल में लाते ही भले ही वह आसान न हो ।

युवती चली गयी थी । नौकर सुबह का अस्नवार ले आया । वह उस दुर्घटना का हाल पढ़ता रहा । जो वह देख आया था, उससे भी दर्दनाक हाल लिखा हुआ था । वह सन्न रह गया । अस्नवार लेकर ऊपर पहुँचा । करुणा नहाकर बाल सँवार रही थी । वह भिन्नकी और भीतर चली गयी । वह बोला ही, “आज कुछ हाल निकला है ।”

सब कुछ सुनाता रहा । करुणा एकाग्रता से सुनती रही । ज़रा कि महेश की बातों वाला अनुरोध सही बात है । उसका ख़याल था कि वह उसे ठीक समझ गयी है । कुछ कहीं डरी नहीं । अपना ही वह है । स्वास पराया नहीं । उससे अब वह काफ़ी परिचित हो गया थी । उसे देख कर कहीं भी वह अन्तर नहीं पाती थी । वह वैसा ही था ।

महेश ने फिर कहा, “आदमी कितना ही सावधान रहे, देवी घटनायें तो होती ही रहेंगी ।”

करुणा का हृदय उद्वलित हो उठा, कहीं उसके जीवन की कोमल

और कमज़ोर सतह जैसे कि छू गयी हो। नया घाव अक्सर बार-बार ठोकर खाता है। और महेश ने सिगरेट निकाल ली, गुसल से निपट, नीचे बिस्तर पर लेट कर किताब पढ़ता-पढ़ता सो गया।

अब करुणा उठी। बाल ठीक तरह बाँध लिए। माथे पर बिन्दी लगायी। कमरे में आकर बैठ गयी। देखा नौकर तरकारी छील रहा था उससे जाकर बाली, “तू कमरे सब ठीक-ठीक झाड़ कर दुस्त कर, मैं खाना बना लूँगी।”

नौकर अपने काम पर लग गया। करुणा भी खाली नहीं रहना चाहती थी। वह काम पा, तरकारी छीलने लगी। फिर चौंके में चली गयी। धीरे-धीरे रसोई तैयार करली। जब सब ठीक हो गया, तब नौकर को बुलाकर कहा, “देख तो, बाबूजी क्या कर रहे हैं।”

महेश एक बार ऊपर आया था। करुणा को काम में मशगूल देख, उल्टे पाँव लौट गया। समझ नहीं पाया कि, वह युवती क्यों उस घर में इतना स्नेह सोंप रही है। उसकी ममता कोने-कोने काँ ढँक रही थी। वह उसकी कोई भी नहीं है। वह रिश्ता ढूँढ़े तब भी क्या मिलेगा। उसके उपकार को वह नहीं भूल सकता है। चुपचाप एक भारी जाल फैला कर, मकड़े की तरह वहीं भूल रहा था। भोला आकर बोला, “खाना तैयार है।”

वह जल्दी से नहाया, बाहर से बोला, “भोला, खाना ले आ।”

अब वह बाहर कुर्सी पर बैठा हुआ खाना खा रहा था। भोला रोटियाँ और साग लेता-लेता आ रहा था।

वह बोला, “अब नहीं।”

तभी किसी ने रसोई से हुक्म दिया, “थाली पर छोड़ दे।”

महेश मना कैसे कर देता। भोला तो सब डाल-डाल जाता था। फिर वह एक और फुल्का ले आया। महेश मना करने लगा, करुणा बोली, “यह आगिरी है।”

उसने वह खा ही डाला । खाकर उठा । हाथ धो लिए । रसोई के दरवाज़े के पास तक गया और कुछ सोचकर लौट आया । आज उसे खाने में एक निराला स्वाद मिला था । वह फिर दरवाज़े से हटकर खड़ा हो बोला, “आपने बड़ी तकलीफ़ उठाई है ।”

करुणा ने अपने कण्ठ पर सोचा । संभल कर बोली, “यह तो हमारा रोज़ का ही काम है ।”

“आप भी अब खा लें” कह, वह चटपट नीचे चला गया ।

युवती अब तक रसोई में पटड़े पर बैठी हुई थी । नीचे बेबी के रोने की आवाज़ सुन, वह ऊपर ले आयी । उसे दूध पिलाने लगी । फिर भोला को सौंप दिया ।

महेश कपड़े पहन रहा था । उसने ठीक-ठीक पहन लिए । करुणा कमरे में आयी । गड़ी-सी बोली, “आज तो वे मिलेंगे ही । सब कुछ कह देना । एक लिफ़ाफ़ा चाहिए था ।”

“सामने मेज़ पर होंगे ।”

वह उस पर चिट्ठी रखकर, देते बोली, “उनको दे देना ।”

महेश ने लिफ़ाफ़ा ले लिया । वह बन्द नहीं था ।

ताँगा आ गया था । उसकी तबीयत ठीक नहीं थी । खाकर भी भारी कमज़ोरी लगने लगी । सोचा फिर करुणा को, अपने पति के घर पहुँचा कर, वह चैन से छुट्टी ले आराम करेगा । कि करुणा बोली, “तबीयत तो ठीक है ।”

“जल्दी उनको साथ लेकर लौट आऊँगा” कह, उसने सन्दूक से बटुआ निकाल, कुछ रुपये जेब में रख लिए । फिर बटुआ करुणा को सौंपते बोला, “कोई चीज़ चाहिए तो मँगवा लेना ।”

महेश चला गया । बटुआ वहीं पलंग पर पड़ा था । करुणा मुस्क-राती फिर बेबी को गोदी में ले, चूमते-चूमते बोली, “बेबी लल्लू है ! बिट्टी है !!” उसे खिलती रही ।

महेश को बुखार चढ़ा हुआ था। सिर पर की चोट भी दुख रही थी। फिर भी वह करुणा के स्वामी की ढ़ड़ में जा रहा था। कोट की जेब में पत्र पड़ा था। बार-बार वह समीपता की ओर इशारा कर, सूचित करता कि वह पति और पत्नी के बीच एक मार्फत है। पति पत्र पाकर कितना खुश नहीं होगा। यह कर्तव्य आज उसका है। बार-बार मन में भुँझलाहट उठती थी। उस पर करुणा हल्का जीवन पोत देती। वह उत्साह से भर जाता। तब करुणा ने बीच-बचाव करने की ठानी है। ताकि पति पर सब बातें प्रकट कर दे। पति महेश को पहचान कर फिर अधिक आनाकानी नहीं करेंगे। करुणा जैसे कि सब कुछ जानती थी।

अब वह डॉक्टर की दूकान पर पहुँचा। वहाँ उसने पट्टी बदलवा दी। सारे शरीर पर पीड़ा फैल गयी थी। डॉक्टर ने उसकी हालत देखी। सारे शरीर की परीक्षा ली और कहा, “आपको पूरा आराम चाहिए। इतने तेज़ बुखार में बाहर निकलना ख़तरे से ख़ाली नहीं है।”

चुपचाप दवा उसने ले ली। बाहर आया। सोचा कि उसमें भी बड़े ख़तरे से वह गुज़र रहा है। इसका छुटकारा पहिले चाहिए। चिन्तित-सा वह ताँगे पर बैठा रहा। ज़िन्दगी में तो ज़रा-ज़रा बात पर ख़तरे हैं। कब तक उनसे भागे-भागे आदमी फिरता रहे। वह कम भी किसी दिन नहीं होवेंगे। उन पर अधिक सोचना, बुद्धिमानी नहीं है।

और उनके बीच चलते-चलते आदमी को मौत का खतरा निगल लेता है। वहाँ वह कुछ नहीं कर सकता है। अब ताँगा ऑफिस के बाहर पहुँच गया था। ग्यारह से ज्यादा बज गये थे। वह भीतर पहुँचा और एक बाबू से पूछ डाला, “‘मिस्टर … …’ कहाँ हैं ?”

वह तो उनको पहचानता था नहीं। जब उनको पा जावेगा, सारी बातें खोल कर कहेगा। लेकिन उसे जवाब मिला, “वे चले गये हैं।”

“कहाँ !” असमंजस में उसने पूछ डाला।

“बीबी, भाई और बच्चे के मरने के गुम में एक महीने की छुट्टी लेकर कल रात की गाड़ी से चले गये हैं।”

“मरने का गुम !”

“हाँ साहब, बेचारे का अब बाकी क्या बचा है ! कल दिन पर रेलवेवालों के पास पूछता रहा। रेलवेवाले बड़े काइयाँ होते हैं। भला वे क्या पता देते। बहुत परेशान वे हो गये थे। हम लोगों ने सलाह दी कि उनको बाहर कहीं चला जाना चाहिए। हरिद्वार इसी लिए गये हैं।”

“उनका पता ?”

“वहीं से वे भेज देंगे।”

एक व्यावहारिक नमस्ते करके, महेश बाहर चला गया। दिल में बात उठी, यह क्या होता जा रहा है ? समस्या, इस तरह शतरंज के गोठों वाली चाल में परिणत हो जावेगी, उसे यह उम्मेद नहीं थी। अब हाल साधारण नहीं रह गया। क्या वह अपने घर उस युवती को रख सकता है ? या किसी गृहस्थ में जगह मिल सकती है ? कल तक एक उम्मीद थी कि, उसका पति वहीं है। अब वह बात नहीं। और उनकी पत्नी को आश्रय देने का कोई भी अधिकार उसके पास कब है ? यह भार असह्य है। वास्तव में बात की सच्चाई मिल जाती है। तब … …।

मकान पर वह पहुँचा। नौकर ने दरवाज़ा खोला। वह भीतर पहुँचा। पूछा उससे, “वे क्या कर रही हैं?”

“अभी-अभी सोयी हैं।”

वह चुपचाप नीचे विस्तर पर लेट गया। कपड़े तक खोलने की ताकत बाक़ी नहीं रह गयी थी। वह लेटा ही रहा। बहुत सी बातें दिमाग़ को घेरे हुए थीं। तेज़ बुखार चढ़ रहा था। वह अपने होश-हवास में भी नहीं रह सका। इतना सब कुछ समझ और समा लेने की सामर्थ्य नहीं थी। उसका सारा उत्साह मिट गया। मन भारी हो आया। उसने सोने की कोशिश की, नींद नहीं आयी। मन की व्यग्रता बढ़ती जा रही थी। काफ़ी बुखार चढ़ गया। डर भी लगने लगा। वह मनो-हर जैसे कि कमरे के दरवाज़े की चटखनी खोल, भीतर आना चाहता हों। तो वह मनोहर के आगे कुछ नहीं कहेगा। वह खुद क्या अविश्वासी नहीं है? एक क़सूरवार कैदी की तरह अपना फैसला सुनेगा। यही उसके लिए हितकर था। पड़ा रहा—पड़ा ही रहा। मनोहर का इन्तज़ार करता रहा। अपनी फ़िक्र और तवालत को वह मिटा देना चाहता था। उसे अपने इस शरीर पर ख़ास मोह भी तो नहीं है कि, रक्षा का उपाय ढढ़ ले। वह तो परेशान और लाचार था। अपनी असमर्थता के आगे किसी से कुछ भी नहीं कहना चाहता था। यही उसका बाक़ी धर्म था। नींद कब आयी, उसे अन्दाज़ न लग सका। और वह अपने फैले विचारों पर सो गया।

जब उसकी नींद टूटी, उसने देखा कि वह युवती चुपचाप कुरसी पर बैठी है। बच्चा गोदी में था। सुन्दर रंगीन कपड़े वह पहने हुए था। बुखार कुछ कम था। उसने पुकारा, “भोला!”

करुणा अब तक अपने में ही कुछ सोच रही थी। अब चैतन्य होकर बोली, “आपकी तबीयत बहुत ख़राब लगती है। अभी तक आप न जाने क्या क्या अनर्गल बक रहे थे। अब जी कैसा है?”

“ठीक है।” कह, महेश ने उठने की चेष्टा की किन्तु असमर्थ हो कर लेट गया। भोला आया था। महेश ने उससे पानी मँगवाया और अपने कपड़े भी। चिलमची पर मुँह धोया, कपड़े बदल डाले और फिर लेट गया।

करुणा फिर चिन्तित सी, अनमनी बैठी रही। महेश ने पूछा, “क्या बज गया होगा?”

“पाँच।”

“तब बड़ी देर सोया रहा। आपने जगाया क्यों नहीं?”

इसका जवाब वह क्या देती। वह तो एक भारी उत्कंठा दबाए कुल्लु सुनना चाहती थी। महेश ने एक बार उसकी ओर देखा। वह चुप बैठी थी। वह समझ गया कि उसे सारी बातें सुनानी हैं। बहुत-सी बातें मन के भीतर फैल गयी थीं। वह उनको सँवार कर बोला, “वे हरिद्वार चले गये हैं। उनका ठीक-ठीक पता किसी को मालूम नहीं। मौत का हर एक को आसानी से विश्वास हो आता है। मानव की दुर्बलता से बरी नहीं थे। अपना अन्दाज़ लगा, दुःखित हो, वे चले गये। और घटना के प्रति उदासीन रहना सीखकर भी अब मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि क्या किया जाय? आपकी राय मुझे मान्य होगी। साधारण-सी बात को हल्ला बनाते हुए, कोई अधिक देर नहीं लगती है। तब विचारणीय प्रश्न है कि क्या किया जाय? मेरे कई मित्र हैं, उनकी गृहस्थी में फ़िलहाल आपको जगह मिल जावेगी। और आपके पति को ढूँढ़ कर ला, उनके सुपुर्द आपको मैं कर सकता हूँ। दुनिया में भय अनायास न जाने क्यों पैदा हो जाता है। उससे मुझे कोई एतराज़ चाहे नहीं हो, मैं उसे स्वीकार कर लेता हूँ। तब आपकी राय जाननी ज़रूरी है। जैसे उचित सूझ पड़े, वही करना होगा।”

यह कह कर वह चुप रहा। उसकी साँस भारी हो गई। फिर लेट गया। भारी थकावट उसे लग गयी थी। किन्तु करुणा का चेहरा उतर

गया। उसकी सारी उम्मीद मिटने लगी। पति पास नहीं। वह कहाँ पड़ी हुई है? उसका दिल सिकुड़ रहा था। क्या भाई को तार कर दें? कब तक न जाने वहाँ तार पहुँचेगा? उनके गाँव से तारघर काफ़ी दूर है। उसके मामा का लड़का शहर में नौकरी करता है। वह वहीं जाकर रहेगी। उसे तार दिया जा सकता है। वह अच्छे ओहदे पर है। ढ़ंढ़ने में दिक्कत नहीं होगी। तब बात आसानी से निभ सकती है। कहीं वह दौरे पर न हों। तब खुद ही वहाँ जाना ठीक। वहीं वह रहेगी।

कि महेश ने बात फिर शुरू की, “आप अधिक चिन्तित न हों। दुनिया के हर एक झमेले के लिए आदमी को तैयार रहना चाहिए। कर्त्ता के साथ सर्वदा से मनुष्य जाति लड़ती रही है। आपने क्या तय किया है? घबड़ाना तो व्यर्थ की बात है। सब आसानी से निभ सकता है।”

और चिट्ठी निकाल कर दे दी। अब वह चिट्ठी, व्यर्थ एक लिखे काग़ज के अलावा, कुछ भी नहीं थी। उसका क्या महत्व था? करुणा ने पत्र ले लिया। और बोली, “आप मुझे मेरे मामा के लड़के के घर पहुँचा दीजिए वे—रहते हैं।”

“ठीक है, रात दस बजे की गाड़ी से जाना होगा। सुबह वहाँ पहुँच जावेंगे।”

करुणा ऊपर उठकर चली गयी।

महेश ने देखा कि, पत्र वहीं पर पड़ा का पड़ा हुआ था। उसने उठा लिया। पढ़ने का लोभ सँवार न सका। सुन्दर-सुन्दर अक्षरों में लिखा हुआ था :

... ..।

आपको सारी बातें महेश जी से मालूम हो जावेंगी। इनकी तबीयत भी ठीक नहीं। अच्छे डॉक्टर को दिखला देना। मैं आप लोगों का इन्तज़ार कर रही हूँ।

यह पढ़ कर महेश गद्गद् हो गया। इतनी ममता ! और वह है, जिसे कि कुछ भी दुनिया से वास्ता नहीं। उसकी तबीयत बहुत खराब होती जा रही थी। जी मिचला रहा था। वह चुपचाप पड़ा रहा। आँखें मूँद लीं, चिट्ठी फ़र्श पर गिर पड़ी। वह वैसे ही पड़ा रहा।

कि करुणा कमरे में आयी। आकर पूछा, “मैं अपना सामान ठीक कर चुकी हूँ। आपका क्या होगा।”

महेश ने आँखें खोल लीं ! करुणा ने पाया कि वे गीली थीं। लेकिन महेश सँभल कर बोला, “आप भोला से कह दें। वह सब कुछ ठीक कर देगा। दो दिन का सामान चाहिए। खाना भी जल्दी बन जाना चाहिए। मुझे नींद आ रही है। घंटे भर बाद, भोला से कह दीजिएगा, कि वह मुझे जगा दे।

करुणा ने पास आ, उन गीले आँसुओं की मनोव्यथा को पढ़ा था। समीप उसके जीवन को छूकर पूछा, “जी अच्छा न हो, कल चले जावेंगे। जल्दी नहीं है।”

“कोई दिक्कत की बात नहीं। आप सामान ठीक रखवा दीजिए— बस।”

“करुणा चुपचाप खड़ी थी।”

अब महेश बोला, “उनके बच्चे वगैरह होंगे। कुछ फल-मिठाई भोला ले आवेगा।

“कोई ज़रूरत तो है नहीं।”

“मँगवाना ठीक होगा।”

करुणा तकरार न कर, ऊपर चली गयी। अब महेश ने चादर ओढ़ ली और सो गया।

ऊपर जाकर करुणा ने भोला को समझाया कि साहब कुछ दिनों के लिए बाहर जावेंगे। खुद अपनी चीज़ों को एक और बार ठीक कर,

मुस्ताने लगी। भोला ने सूटकेस पर महेश का समान ठीक तरह लगाया। करुणा सब-सब देखती रही। साथ ही सोच लिया कि अब महेश अकेला नहीं रहेगा। वह इन्तज़ाम कर, उसकी शादी ज़बरदस्ती करवा देगी। भला यह भी कोई ज़िन्दगी है।

भोला ने कहा, “आप खाना खावें।”

“अभी नहीं।”

वह चला गया। करुणा फिर महेश की गृहस्थी पर अटक गयी। आपने जान-पहचान वालों के बीच, उसके लायक़ ठीक लड़की ढ़ढ़ लेना चाहती थी। कई लड़कियों के नाम और ख़ाके याद आये। कोई ज़ँची नहीं। एक को भी पसन्द करना मुश्किल हो गया।

फिर नौकर ने पूछा, “खाना रख लूँ?”

हैं, साढ़े आठ बज गये थे! करुणा नीचे उतरी। कमरे में अंधियारा था। स्विच दबाया। महेश सोया हुआ था। उसे बहुत बुझार चढ़ा था। वह चुपचाप लौट आयी। ऊपर दालान में बाहर मोड़ पर बैठकर सोचने लगी कि, क्या उनका जाना आज हो सकेगा! वह बीमार हैं, यदि ज़्यादा बीमार पड़ गया, तो क्या होगा? वह उसे तकलीफ़ नहीं देगी। तार दे देंगे। भाई आकर खुद ले जावेगा।

तभी महेश ने आकर पूछा, “आपने खाना खा लिया?”

वह सटपटा गयी। बोली, “नहीं।” महेश का चेहरा सुफ़ेद पड़ा था। वह उसे देख कर डर गयी।

और महेश ने कहा, “जल्दी खाना खा लीजिए। नहीं तो गाड़ी के लिए देर हो जावेगी। मैं तो दूध पीकर ही रहूँगा। तबीयत ठीक नहीं है।”

करुणा सिर झुकाए न जाने क्या-क्या सोच रही थी। अब सिर उठा, महेश को देखते हुए बोली, “आज तो जाना हो नहीं सकता है। रात भर का सफ़र ठहरा। आप कल मेरे भाई को तार दे दीजिएगा। वे आकर ले जावेंगे।”

“दूसरे दरजे में तकलीफ़ नहीं होती है। यहाँ आपका रुकना बेकार अब होगा।”

“मेरा !” करुणा अचकचाहट में बोली।

“हाँ, आपका यहाँ रुकना अनुचित है।”

“तब आपके निकालने पर भी, तो मैं निकल नहीं जाऊँगी।” बात समझ कर करुणा हँसी।

“मैं निकालने वाला कौन हूँ ?”

“इस तरह बुखार में जाओगे, यह निकालने से कम नहीं है। अपना न सही मेरे फज़ीते की तो सोची होती। कल दुनिया क्या कहती। अपने स्वार्थ को उठा, आपकी तन्दुरुस्ती की अबहेलना भी मुझसे नहीं हो सकती है।”

“लेकिन इस तरह।”

“ठीक बात है। अब सुधार भी नहीं हो सकता है। जिस बूते पर परसों यहाँ आकर टिक गयी। उसी तरह कुछ और दिन पड़ी रहूँगी। आज नहीं कल तो मुझे जाना ही है। भाई के आते ही चली जाऊँगी। दुनिया की बातों की परवाह करना हर एक का काम नहीं।”

करुणा के साहस पर महेश दंग रह गया। तकरार बढ़ानी व्यर्थ लगी। वह परेशान था। किन्तु छुटकारे का कोई भी सरल रास्ता नज़र नहीं पड़ा। सारा शरीर दुख रहा था। सिर पर पीड़ा थी। बार-बार कमज़ोरी की वजह से आँखों के आगे अँधेरा छा जाता था। वह एकान्त और आराम चाहता था। अधिक खड़ा नहीं रह सका। चुपचाप सीढ़ियों से नीचे उतरने लग गया। उतर ही रहा था कि कमज़ोरी की वजह से आँखों के आगे बिल्कुल अँधेरा छा गया। उसने अपने को संभालने की हर तरह से कोशिश की—असफल रहा। और धड़ाम से वहीं सीढ़ियों पर गिर पड़ा। वह बेहोश हो गया था।

करुणा ने आवाज़ सुनी । वह घबड़ाकर नीचे उतर पड़ी । निपट अन्धकार था । उतरते-उतरते उसका पाँव महेश से छू गया । वह ज़ोर से बोली, “भोला टार्च लाना । यहाँ इनको न जाने क्या हो गया है ।”

भोला ने सीढ़ियों पर स्विच दबाया । रोशनी में करुणा ने देखा कि महेश के नाक और मुँह से खून निकल रहा था । वह उसका हाथ-मुँह धोकर, उसे होश में लाने की कोशिश करने लगी । सब बेकार... । उपर के कमरे तक ले जाने की सामर्थ्य भी उन दोनों में नहीं थी । वह वह घबड़ायी और बोली, “डॉक्टर का मकान देखा है ?”

“नहीं ।”

करुणा भय से सिहर उठी । सुलभ कर बोली, “इधर-उधर किसी से पूछकर, अच्छा डॉक्टर बुला ला ।”

भोला चला गया । करुणा सीढ़ी पर बैठी रही । महेश के मुँह से खून निकलना अभी बन्द नहीं हुआ था । एक बार ख्याल आया कि यह महेश भी कहीं मनोहर की तरह... ! यह कैसी परवशता उन लोगों के आगे आयी थी ! महेश ज़िन्दा रहेगा, विश्वास फिर होता था । अपनी परवशता पर कोई ठीक निर्णय नहीं कर पाती । कभी अनायास कराहने की आवाज़ कानों में पड़ती थी । जैसे कि कोई भारी पीड़ा से पीड़ित हो । मनोहर कभी बहुत पहले इसी तरह कराहता था । उसे टाइफ़ाइड हुआ था । करुणा ने परिचर्या का भार ले, उसे उबार लिया था । यह स्वर वैसा ही था । लेकिन महेश तो चुपचाप पड़ा है । तो क्या महेश को बुलाने मनोहर आया है ? और महेश की मौत क्या अनिवार्य है ? नहीं वह हर तरह से उसे ज़िन्दा रखने की कोशिश करेगी । भोला अभी तक नहीं आया । वह नौकर है । मालिक की सारी गृहस्थी उसी छोकरे पर टिकी है । यह सारी गृहस्थी एक नुमायश की तरह क्षणिक लगती है । कुछ भी व्यवस्थित और पक्का नहीं है । इस

तरह दिन कट जाते हैं, पर यह टिकाऊ बात नहीं है। इस आश्रय में पाकर, महेश की ज़िम्मेदारी कम नहीं हो जाती है। इस महेश को ठीक परवाह चाहिए। वह यह भार लेनेवाली को ढूँढ़ लावेगी। अन्यथा कै दिन वह इस तरह अब रहेगा? यह सोचकर भी मन का भार हल्का नहीं हुआ। डॉक्टर नहीं आया था। महेश का खून वैसे ही जारी था। उसका चेहरा मौत की तरह पीला पड़ गया। वह मन ही मन बहुत डर गयी। सन्देह भी उठता था। इस तरह तो वह फिर भी क्या करे। कुछ होना आसान नहीं था।

और भोला आ पहुँचा। वह सँभली। अपनी उच्छृङ्खलता को सावधानी से बटोर लिया। भोला तो बोला, “डॉक्टर नहीं आया है।”

“नहीं आया?” वह उससे सवाल पूछ बैठी। यह ठीक बात नहीं थी। देर नहीं होनी चाहिए।

“उनका नौकर बोला, फीस साथ लानी चाहिए।”

“वे मिले?”

“मैं भीतर नहीं जा सका।”

करुणा उठी और ऊपर चली गयी। मेज़ पर बैठ कर, उसने एक चिट्ठी लिखी। लिफाफे में बन्द किया। नीचे उतर, नौकर को देते हुए कहा, “डॉक्टर साहब को दे देना।”

फिर वही सुनसान। नीचे आँगन में भोला पानी का नल खुला का खुला हुआ छोड़ गया था। उसका भारी शब्द हो रहा था। ऊपर बेबी रो रहा था। वह महेश के पास से उठी नहीं। अब कोई भी बात वह न समझ सकी। जो कुछ सन्मुख था, उस पर राय क्या देती। जैसे कि ज़्यादा जानना ठीक नहीं। उसके आगे तराजू के छोटे-छोटे बाटों की तरह घटनायें पड़ी थीं। वह महेश के जीवन को तोलते-तोलते थक कर अपना अस्तित्व भी भूल गयी। वह वातावरण कभी अनायास भय पैदा करने लगता था। खून के दागों से उसकी सारी साड़ी भर गयी

थी। कभी अन्तिम बात उठती, महेश अब जीवित नहीं रहेगा। तब एकदम दिमाग में एक चमक उठती, अब वह क्या करेगी? इन सब-सब छोटी घटनाओं पर आज वह अनुग्रहित हो गयी। जैसे कि मानव जाति का हिसाब, आदि से इसी तरह दुनिया के बही-खाते में लिखा गया हो। कोई उससे छुटकारा पा नहीं सकता है। मनुष्य अपना इतिहास बनाकर मिटा डालना भले ही चाहे लेकिन वह तो निर्बल है। इन घटनाओं के बोझ के भार से वह सर्वदा दबा रहेगा। करुणा सब बातें जानती है। अनुभव सही सबक रोज़ाना सिखलाता है। करुणा फिर भी महेश के प्रति पूरा मोह न फैला सकी। पति जैसे कि उसका अपना आधार था। वह अपनी संस्कृति के खिलाफ़ बलवा नहीं कर सकती। महेश की रक्षा के ऊपर पति का हाथ था।

‘कार’ के हार्न की आवाज़ कानों में पड़ी। वह आँचल सँवार एक ओर ठिठक कर खड़ी हो गयी। डॉक्टर ने महेश को भली भाँति देखा और सोचकर बोला, “भीतरी खून है। इनको अस्पताल ले जाना होगा।”

करुणा की आँखों के आगे अँधेरा छा गया। वह अकेली क्या करेगी? यह क्या सब कुछ उसके आगे होने वाला है? वह चुप नहीं रह सकी। डॉक्टर के आगे आ, दबे स्वर में बोली, “कोई डर की बात तो नहीं है?”

“नहीं! नहीं!!” डॉक्टर बोला।

करुणा ऊपर पहुँची। अपना सन्दूक खोला। पाँच दस-दस के नोट निकाले और नीचे उतर आयी। डॉक्टर को देते हुए बोली, “मैं यहाँ अकेली हूँ। अपना कोई भी नहीं। जो कुछ भी आप उचित समझें कर लें। आपका यह एहसान भूल नहीं सकूँगी।”

बूढ़े डॉक्टर ने उस घबराई हुई नारी को देखा। रुपया नहीं लिया।

समझाते, धीरज बँधाते कहा, “फिक्र की कोई बात नहीं है। अस्पताल इनको ले जा रहे हैं। यहाँ इन्तजाम होना नामुमकिन है।”

और वे लोग महेश को लेकर चले गये थे। भोला भी उनके साथ गया था। फिर वह अकेली रह गयी। अब एक अज्ञात भय उसे सताने लग गया। माथे पर भारी पीड़ा थी। सारे बदन में थकावट थी। एक बेकली और बेचैनी मन को घेर रही थी। वह बिल्कुल अस्वस्थ हो गयी। कुछ भी सामर्थ्य बाक़ी नहीं थी। दरवाज़ा बन्द करके वह चुपचाप महेश की चारपायी पर लेट गयी। दिमाग़ कुछ भी काम नहीं कर रहा था। वह भी अपने होश में नहीं थी। आँखें मूँद लीं। ज़रा कुछ होश आया, देखा कि बिजली की रोशनी में वह अजनबी-सी लग रही थी। अब उसे सीढ़ियों में किसी के दबे पाँव चलने की आवाज़ महसूस हुई। वह कौन होगा ? ऊपर बेबी अकेला था। साहस बटोर कर ऊपर पहुँची। सारी रसोई बिखरी पड़ी थी। दूध पीकर बिल्ली चौकन्नी हो रही थी। पास ही कहीं किसी पेड़ पर कोई पक्षी बैठा हुआ था। उसका अजीब स्वर कानों में पड़ता था। वह सिहर उठी। बच्ची भीतर सोयी हुई थी। सारे मकान का सुनसान काटने दौड़ रहा था। उसे नींद नहीं आयी। बड़ी देर तक बैठी की बैठी ही रही। नींद कैसे आती। वह पक्षी अभी भी कह रहा था—आऊँ ! आऊँ !! आऊँ !!! महेश का व्यक्तित्व भी उस कमरे से लुटा हुआ लगता था। वह महेश कभी तो उसके खून के भीतर तेज़ी से दौड़ने लगता। उसे ठीक तरह वह पहचान गयी थी। उसके लिए अपना मूल्य वह भूल जाती है। तब व्यक्ति का भाव तोल भी होता है। यह बात आज तक उसने नहीं जानी थी। अब अपनी आवाज़ और आहट की गूँज के अलावा कुछ नहीं मिल पाया वह महेश के साथ-साथ चली जाती, अच्छा होता। अब वहाँ न जाने क्या हो रहा होगा ? भोला अभी तक लौटकर नहीं आया। आधी रात से ज़्यादा गुज़र गयी थी। घड़ी की सुइयाँ मन की अड़चन को कुचल आगे बढ़

रही थीं। मन के भीतर खट-खट-खट कोई हथौड़े से हल्की चोट करने लगता। अब तो दो बज गये। भोला लौटकर अभी तक क्यों नहीं आया है? कहीं महेश भी एक घटना की तरह, अब बाकी नहीं बचा हो तो क्या होगा? यह सब बातें तो आसान होती हैं ही।

किन्तु, नीचे दरवाज़े पर खटका हुआ। 'कार' की आवाज़ कानों में पड़ी। वह फैसला पूरा-पूरा सुन लेने को तैयार थी। अपनी चूकी सामर्थ्य बटोर लेने, कुछ देर खड़ी रही। एकाएक फिर मन्थर गति से नीचे उतरी। दरवाज़ा खोला, देखा कि भोला के साथ एक युवती भी खड़ी थी। अचरज में वह बुत की तरह खड़ी-की-खड़ी रह गयी। उस युवती ने तभी नमस्ते करते कहा, "मैं डॉक्टर साहब की लड़की कुसुम हूँ"। एम० बी० बी० एस०, तीसरे साल में पढ़ रही हूँ। महेश बाबू बच गये। हम लोग भी पहले नाउम्मीद हो गये थे। आदमी की ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं है। आपकी घबड़ाहट लाज़िम थी। अब जाकर उनको ठीक सुलाकर हम खाली हुए हैं। आप चाहें साथ चली चलें। ख़तरा वैसे कोई भी नहीं है। नहीं तो मैं यहीं आपके साथ रहूँगी। जैसा उचित लगे!"

यह सब सौंपकर, उस लड़की ने अपने को उबार लिया था। वह अनजान नहीं थी। सब कुछ ठीक-ठीक पहचान, बात निभाने की आदत, उसे थी। अन्यथा करुणा का दिल भारी हो रहा था। सब कुछ सुलझा कर कुसुम ने उसे उबार लिया। करुणा इतनी चकित रह गयी कि मूक खड़ी थी। कोई भी बात वह नहीं बोल सकी। जैसे कि उस लड़की की सहानुभूति में पिघल गयी हो। उसके प्रभाव के भीतर वह अचल तैरने लगी। जब सँभली, क्या कहे, समझ नहीं पड़ा।

वह युवती तो पूछ बैठी, "बेबी कहाँ है?"

"बेबी.....।"

"भोला कहता था.....।"

“ऊपर है” कह, करुणा कुसुम को लेकर ऊपर चली गयी। ऊपर पहुँच कर कुसुम कुर्सी पर बैठ गयी। कहा, “आप मुझे कुसुम नाम से ही पुकारा करें। आपका यही अधिकार है”।

करुणा अब सारी बातों को हटाकर बोली, “माफ़ करना कुसुम। आप लोगों का यह ऋण मैं आजीवन नहीं चुका सकूँगी।”

आगे करुणा अधिक नहीं बोल सकी। अनायास ही उसकी आँखें छलछला आयीं। आँसू रुके नहीं। सब कुछ जानकर कुसुम समझाने लगी, “जीजी कोई भय नहीं है। सच कह रही हूँ, कुछ भी देरी हो जाती……”

“यहाँ और कोई नहीं था। मैं अकेली क्या करती ? कल ही तो हम सब लोग यहाँ आए हैं।”

“अभी भी उनकी हालत नाज़ुक है। जल्दी ही उनको स्वस्थ खून चाहिए। बहुत खून निकला है। कल तक उनको ताज़ा खून देना ही होगा।

“मैं अपना खून दे सकती हूँ ?”

“नहीं जीजी अभी तक आप बहुत कमज़ोर हैं। मेरा खून क्या काम आवेगा। उनको जीना चाहिए। आपकी खातिर—मेरी जीजी के लिए। आप चिन्तित न हों।”

वही महेश की बातें फिर शुरू हो गयी थीं। उसके और महेश के बारे में यह जाल क्यों बुना जा रहा है ? वह साफ़-साफ़ साहस करके क्यों नहीं कह देती है। अब छिपा कर कोई भी लाभ नहीं है। वह फिर भी कह नहीं सकी। व्यर्थ अभी था। महेश के अच्छे होते ही भेद खुल जावेगा।”

तभी भोला ने आकर कहा, “मिस साहब ! ड्रॉयवर पूछ रहा है कि आप कब तक लौटेंगी।”

“मिस साहब !” करुणा ने दोहराया।

“क्या बात है रे भोला !” कुसुम ने फटकारा और करुणा से पूछा,
“क्या इरादा है जीजी ?”

“क्यों ?”

“वहाँ भी सब इन्तज़ाम है । वैसे फ़ायदा कुछ भी नहीं, वे सो गये हैं । काफ़ी कमज़ोरी है । शायद ‘ऑपरेशन’ करना पड़े । उनको आराम चाहिए । वहाँ छोटा डॉक्टर और नर्स हैं ही । कल सुबह हम चले जावेंगे ।”

सब सुनकर करुणा ने अपनी चाहना को दबा लिया । एक बार वह महेश को ज़रूर देखना चाहती थी । अब कहे कैसे । वह उतावली नहीं होगी । कुसुम ने जो बात कही, उससे वह आनाकानी नहीं करेगी । कुसुम ने चन्द मिनटों में ही, उसके मन पर कब्ज़ा कर लिया था । वह न आयी होती, तो करुणा अब तक पागल हो जाती । इस सहारे के बल पर, वह कृतार्थ हुई । मन मार कर कहा, “जैसा ठीक समझ में आवे !”

तब कुसुम ने भोला से कहा कि कार कल सुबह तड़के ही चाहिए । भोला चला गया । नीचे वह चुपचाप सो भी गया । करुणा और कुसुम दोनों, बैठी की बैठी ही रहीं । कुसुम ने सारी बातों का समाधान इस तरह कराया था, कि करुणा का भीतरों डर भाग गया । जिस विपत्ति की आकांक्षा उसे थी, अब वह बाक़ी नहीं रह गयी । अब करुणा बोली, “डॉक्टर साहब न आये होते, तो.....!”

“तुम्हारी वह चिट्ठी मैंने पढ़ी थी, पढ़कर सन्न रह गयी । पापा ऊपर सो रहे थे ।”

लेकिन करुणा के दिल की ख़ाली जगह को फिर घबड़ाहट ने घेर लिया । महेश कहाँ ठीक है ? उसे ताज़ा ख़ून चाहिए । वह उसे अपना ख़ून दे देगी । उसकी ज़िन्दगी उससे ज़रूरी है । बात इस तरह निभ भी जावेगी । महेश का जीवित रहना उचित है । वह और कुछ नहीं चाहती है । अपना कोई और सवाल उसका नहीं । वह खुद भी अस्वस्थ है ।

यह सारा भगड़ा बढ़ता ही चला जा रहा है। मनोहर की याद बार-बार आकर न जाने क्यों, महेश को मिटा देना चाहती थी। क्यों उसे मनोहर पर अधिक विश्वास है? उसका हाथ अब महेश के ऊपर ठीक नहीं लगता। कुसुम ने जो ताकत उसे सौंपी थी, वह सब तो मनोहर छीनकर उसे निर्बल बना देने तुल गया।

कुसुम बोली, “रात बहुत हो आयी है।”

करुणा ने ज़मीन पर दरी बिछाई। वहीं बिस्तर लगाने लगी।

“यह क्या?” कुसुम ने टोका।

“दूसरी पलंग तो नीचे है।”

“तब साथ सो जावेंगी” कह कुसुम खिलखिला कर हँस पड़ी।

करुणा को अधिक कछु भी कहना नहीं था। थकी माँदी वह सो गयी। कुसुम ने उसके जीवन को नया जन्म दिया था। सारी चिन्ता व दुख वह बाँट चुकी थी। आज जैसे कि इसी तरह निपट जाता है। और हमारा जीवन एक अज्ञात भविष्य की ओर बढ़ते हिचकता नहीं। करुणा उसी भविष्य की गोदी में विश्राम ले रही थी। निश्चित सी, जैसे कि यही होकर रहेगा।

अब कुसुम ने एक बार करुणा को देखा, वह बहुत पीली पड़ गयी थी—बिल्कुल सुस्त ! उसके दिल में इन दिनों—महेश-करुणा के लिए आदर भर गया । वह अपने नज़दीकी लगे । अपने मेडीकल-कॉलेज वाले जीवन में, उसने कहाँ कुछ सही और तथ्य की बात पायी थी । उन छोंटे-छोंटे प्रयोगों—जहाँ आदमी का प्रदर्शन रोज़ होता था, वह उससे ऊब उठी थी, मरीजों की उदासी उनके टेम्परेचर लेते-लेते मिलती थी । अस्पताल के भीतर का वह बेहूदा तूफ़ान । फिर भी पिता का अनुरोध और उसकी भी यही ख़्वाहिश थी । वह समाज की सेवा करना चाहती थी । वह व्यवसाय क़बुवा होने पर भी मन में मैल पैदा नहीं करता था । वह वास्तव को गहरायी तक पहचान गयी थी । करुणा के पत्र ने उसके दिल में एक ज़ेय कृतूहल फैलाया । महेश को पाकर उसके हृदय की पाँड़ा उभर आयी थी । मनुष्य के रोगों की मीमांसा कर, उनसे पूरा वास्ता रखने का अधिकार भी उसने कभी नहीं चाहा । उनके भीतर की आत्मा तक पहुँच, वहाँ उसने कभी हल्ला नहीं मचाया । जब छोटा डॉक्टर क्रोरोफ़ार्म दे रहा था, कुसुम चुपचाप मेज़ से लगी खड़ी थी । कभी-कभी उसके मन में दुर्भावना उठी कि कहीं इस व्यक्ति का जीवन चटख़ न जावे । करुणा की चिट्ठी पढ़कर वह न समझ सकी कि महेश मर जावेगा । उसे करुणा जीवित रखना चाहती थी ।

उनका कॉलेज का हाता कितने अचरजों का खजाना नहीं था ! वह टी० बी० वार्ड आइसोलेशन, और, और...। सारा का सारा जीवन बहुत मँहगा था । आदमी का मूल्य जब सस्ता पड़ता, वह काँप उठती थी । उसकी सहेलियों ने कई बार स्नेह प्रकट किया कि वह बहुत भावुक होती चली जा रही है । हर एक ग़ैर मरीज़ को अपना साबित कर, सहानुभूति बाँटना ग़लत बात है । वह अपवाद लाता है । अपनी उस भावुकता और संकुचित हृदय की गति को बाँट लेने, उसने एक कुत्ते का बच्चा पाला था । उसे वह बहुत प्यार करती थी । वह बहुत सुन्दर था । बार-बार वह उससे समझाते कहती थी, कि इन्सान हैवान से इमानदार नहीं होता है । आदमी बहुत स्वार्थी है । सिर्फ़ अपना मतलब उसे चाहिए । वह पिल्ला यह सुनकर भले ही कुछ न समझे, अपने पंजों को मलकिन के हाथ पर सौंप देता । फिर खेलने लगता । कभी उसकी साड़ी पकड़ कर खींचता, फिर भूखने लगता । और बड़ी देर तक भूकता-भूकता ही रहता था । वह कुसुम को पूरी-पूरी तरह से जान गया था । यह कुत्ते का बच्चा अक्सर एक अज्ञाता का ख़याल पैदा कर, कभी तो दिल पर वहम फैला जाता था । वह कुछ ठीक बात उस वक्त नहीं समझ पाती थी ।

एक दिन उसको एक सहेली ने उसे सुस्त देखकर कहा, “तुम बहुत उदास रहा करती हो, कुसुम ।”

“नहीं तो ।”

“बात वैसे कुछ ज़रूर है ।”

“उस अपेन्डिसाइटिज़ वाले ऑपरेशन ने न जाने क्यों मन में एक भारी छी-छी भर दी है ।”

“वाह ! वह तो साधारण क्रिस्सा है । यहाँ और क्या मिलेगा ? यह सब तो पीठ गीछे भूलनेवाली बातें हैं । कुछ और बात है ? तुम छिपा रही हो । मुझसे नहीं कहोगी, तो फिर कौन सुनेगा ?”

“मैं खुद नहीं जानती हूँ” कह कर कुसुम ने चारपाई से तकिया निकाला और गोदी में खिलाते हुए कहती रही, “कभी-कभी न जाने क्यों मन को भारी बेचैनी घेर लेती है।

“तुम दुनिया से बिना मतलब भागी फिरती हो। या फिर किसी भी पीड़ित का दुख खरीद, अपने दिल में भर लोगी !”

“वाह मैं ! कॉलेज के सारे लड़के मुझसे प्रेम एलान करने, रोज़ ही बाट देखते रहते हैं।”

“तू भाग्यवान है न !”

“लेकिन मैं कुछ जानती-समझती नहीं हूँ। सारा व्यवहार भी मुझे एक सा ही लगता है।” कुसुम बेचैन हो उठी थी।

“वह सब ठीक नहीं। हमें समाज में ही चलना है। वहाँ से एका-एक छुटकारा भी नहीं मिलेगा।”

“मैं इन्कार कब करती हूँ। ‘किसी अज्ञेय’ की भूख कभी-कभी दिल में उठती है। वह एक परेशानी भी साथ-साथ है। न मुझे वह क्रिया-त्मक खुशी ज्ञात है, जिससे कि आदमी की पहचान होती है। मैंने उसका अनादर और उपेक्षा वाला ज्ञान ही सिर्फ़ भर रखा है।”

“तब वह चाहना नहीं, शारीरिक तृष्णा है।”

“शारीरिक तृष्णा !”

“मानव जब अपनी बुद्धि से ऊपर उठता है, उसमें अचैतन्य कई गुण आ जाते हैं। इसीलिए अधिक बातों पर सोचना-विचारना ठीक नहीं। यदि यही बात हर एक में आ जावे, हमें दार्शनिक बनते कितनी देर लगती है।

—फिर फज़ीते वाला तकाज़ा हमेशा साथ रहा। मरीज़ों से रोज़ ही मतलब रहा। उस धन्धे की व्यथा और पीड़ा को वह ठीक-ठीक निभा लेती थी। बाहर जितना ही वह डर कम होता चला गया, मन में उतनी ही अकुलाहट बढ़ती चली गयी। इसका कोई भी इलाज उसे ज्ञात नहीं

था। न अपनी तसल्ली के लिए किसी खास बात का खयाल वह मन में लाती थी। इस सब के बाद, एक दिन एक अजनबी लड़का मोटर पर अस्पताल में आया था उसके साथियों ने उसे उतारा। वह चुपचाप लॉन में बैठी एक मरीज़ की पट्टी खोल रही थी। वह लड़का दौड़ा-दौड़ा आकर उसके पास पहुँचा। हाँफ़ते हुए, तेज़ी से बोला, “क्या मैं पागल हूँ ? मैं कुछ नहीं चाहता। मैं इलाज़ नहीं करवाऊँगा।”

कुसुम परिस्थिति पहचान गयी थी। उसकी खिली आँखों के फीके-पन को पढ़कर बोली, “कौन यह सब कहता है ? यहाँ कोई भी तुमसे कुछ नहीं बोलेगा। चलो न अस्पताल घुमा लाऊँ।” उस लड़के के जीवन को वह पहचान गई थी।

“ये सब तो मुझे मारते हैं ” उसने घूरते हुए सबको देख, उत्तेजित हो कहा था।

“कौन ?”

“सब-सब लोग।” कहकर, वह लड़का रोने लगा।

कुसुम ने समझाया कि अब कोई भी उसे नहीं मारेगा। वह उसके साथ रहेगी। उसे लेकर वह भीतर बड़े डॉक्टर के पास पहुँची थी। वहाँ ठीक तरह इन्तज़ाम किया था।

—यह सारी घटनाएँ भी उसके जीवन में खास महत्व अब नहीं रखती थीं। करुणा और महेश को पाकर, उसे बड़ी खुशी हुई थी। वह करुणा तो चुपचाप सोयी हुई थी। कुसुम ने बेबी को देखा। माँ से वह चिपटा पड़ा था। महेश, करुणा और बेबी को चारों ओर से अपने विचारों से घेर, वह खुद कोई भी दलील न कर सकी। सब कुछ सोचती-सोचती ही रही, कि नींद ने घेर लिया था।

सुबह को करुणा की नींद देर में टूटी। देखा, कुसुम पास नहीं थी। वह कहाँ चली गई ? भोला से मालूम हुआ कि तड़के उनकी मोटर

आई थी और वह अपने घर चली गई है। वह बात कुछ भी करुणा को समझ में नहीं आयी। तब वह उतावली हुई। उसे भी वहाँ जाना पड़ेगा। जल्दी-जल्दी नहा-धोकर, उसने कपड़े पहने और भोला से ताँगा मँगवा लिया। अस्पताल पहुँच गई। नर्स से पूछा, पता चला कि, महेश बाबू की हालत सुबह बहुत खराब हो गई थी। बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। कुसुम ने अपना खून देकर उसे जिलाया है।

“कुसुम कहाँ है?” करुणा ने तपाक से पूछा।

“वह बेहोश है। शायद जल्दी होश में नहीं आवेगी।”

“और महेश !”

“वे भी बेहोश पड़े हैं।”

“क्या मैं उन दोनों को देख सकती हूँ?”

“फिलहाल इजाजत शायद नहीं मिलेगी। चिन्ता करने की बात वैसे कोई भी नहीं है। आपको डॉक्टर साहब बङ्गले पर पहुँचाने को कह गये हैं। यही कुसुम बीबी ने भी कहा था।”

करुणा फिर अकेली रह गई। कुसुम ने क्या कर डाला था। अपना मूल्य कुछ भी नहीं समझा। अनजान व्यक्ति के लिए अपने को निष्ठावर कर देने की ठहरायी। यह कुसुम कैसे यह सब त्याग सीख गई है। एक वह है, कि किसी के कुछ भी अर्थ की नहीं। वह पराये बङ्गले में थी। दिन भर उसका मन नहीं लगा। दिल बार-बार भारी हो उठता था। कई बार वह रोयी। मन फिर भी हलका नहीं हुआ। तभी अगले दिन शाम को नर्स आयी। आकर बोली, “कुसुम बीबी बुला रही हैं। वहाँ अधिक बातें करने से उसकी ज़िन्दगी का डर है। आप सावधानी से बातें कीजिएगा।”

वहाँ करुणा पहुँची। देखा कि कुसुम सुफेद पड़ी पलंग पर लेटी हुई थी। पास ही एक घूमनेवाली मेज़ पर, रंग-विरंगी शीशियों में दवायें सजाकर धरी हुई थीं। कुसुम एकाएक बहुत बदली लगी। कल और

आज वाली कुसुम में भारी अन्तर था। कुसुम ने इशारे से करुणा को नमस्ते किया। फिर बैठने को कहा। बोली वह कुछ भी नहीं। थोड़ी देर बाद, चुपके कहा, “महेश बाबू बच गये हैं। अब कोई भी डर नहीं है। अभी एक हफ्ते तक आप उनको न देख सकेंगी।”

कुसुम अब चुप रह गयी, कुछ और नहीं बोली। करुणा बड़ी देर तक बैठी-बैठी कुसुम को ही देखती रह गयी। दूसरे का सत्कार करना सीख कर, यह लड़की क्या उपकार नहीं कर सकती है? इस बात से वह अब अनभिज्ञ नहीं रह सकी। महेश के अच्छे होते ही कुसुम को वह उसे सौंप देगी। अधिक दृढ़ की ज़रूरत नहीं है। नर्स के आने पर, वह उसके साथ बाहर निकली। नर्स बोली, “कुसुम को बुझार है।”

“बुझार !”

“ऑपरेशन के बाद, यह ठीक नहीं होता है।”

“क्यों, बात क्या हुई ?”

“खुद डॉक्टर को अपनी कुसुम पर हथियार चलाने का साहस नहीं हुआ। यह सब काम छोटे डॉक्टर ने किया।”

“ठीक तो किया, भला वह कैसे अपनी लड़की का जीवन सङ्कट में डालता ! व्यर्थ कुसुम यह सब भार ले बैठी।”

“डॉक्टर की यही एक लड़की है। ऑपरेशन करने में दक्ष होने पर भी, एक दिन वह अपनी बीबी को ऑपरेशन टेबुल पर मरा छोड़ कर चला आया था।”

“तब कुसुम की माँ मर गयी है ?”

“वह भी एक दुर्घटना थी अन्यथा। इतने बड़े-बड़े ऑपरेशन डॉक्टर के अलावा कोई भी नहीं कर सकता है। तब कुसुम बच्ची थी। उसकी माँ की आँत में बिस्तर पर पड़ी ‘सीविंग मशीन’ की सुई चुभ गई थी। हमने उसे ऑपरेशन टेबुल पर सुला दिया था। डॉक्टर उस दिन बहुत घबड़ा गया था। मौत के आगे वह निबल निकला, और छोटे डॉक्टर के

कहने पर भी, कि वे क्लोरोफार्म दें, उसने ऑपरेशन करना ही मंजूर किया। मरीज़ की नाड़ी तेज़ चलने लगी। साँस की गति धीमी पड़ती गयी। छोटे डाक्टर ने सावधानी से सुभाया—जल्दी ! जल्दी !!

डाक्टर परेशान हो उठा। उसने सुई ढूँढ़ने की बहुत कोशिश की। एकसरे के फ़ोटो वाली जगह को चीर-फाड़ डाला। वह नहीं मिली—न मिली। फिर भी छोटे डाक्टर ने सूचना देते कि उसकी हालत नाज़ुक है, समझाया ‘अब कुछ सेकिंड ही और वक्त है।’ ”

“नाउम्मेदी के साथ डाक्टर ने फिर कोशिश की। सब व्यर्थ और बेकार रहा। उसे कुछ नहीं सूझ रहा था, कि मरीज़ ने एक आखिरी गहरी साँस ली। छोटा डाक्टर निराश होकर बोला, ‘वह मर गई है।’ ”

“‘मर गयी!’ डाक्टर चिल्लाया और सब औज़ार उसी तरह छोड़ कर, बाहर चला गया।”

नर्स ने इस तरह सारी बात सुनाई थी कि करुणा के आगे चल-चित्र की तरह एक-एक बात आयी। उसका दिल काँप उठा। नर्स तो फिर बोली, “सुबह महेश बाबू की हालत एक दम ख़राब हो गयी थी। मैंने कुसुम को बुलवाने मोटर भेजी। वह अपने पापा से बोली, “खून की कमी है। मैं अपना खून दूँगी।”

डाक्टर घबड़ा गया। आदमी बहुत तलाश करने पर भी नहीं मिला। कुसुम रोने लगी। कहा कि, “मरीज़ की ज़िम्मेदारी का ख़्याल करो पापा ! यदि वह मर गया ! तो तुम्हारा उत्तरदायित्व ग़लत साबित हो जायगा। अपना स्वार्थ कभी बिसारना भी पड़ता है।”

डाक्टर कुछ जवाब नहीं दे सका। छोटा डाक्टर बुलाया गया। सब इन्तज़ाम हुआ और कुसुम ने उसे बचाया है। लेकिन कुसुम बहुत भावुक लगती है। होश में आने के बाद से उसकी हालत गिरती जा रही है। उसके जीवन के बारे में छोटे डाक्टर को सन्देह है। यदि उसे ठीक

नींद आ गयी, भय कम रहेगा । लेकिन वह किसी की भी बात मंजूर नहीं करती है ।

कि डॉक्टर पास आया था । समीप पहुँच कर बोला, “करुणा !”

करुणा ने झुक कर डॉक्टर के पाँव की धूल ले ली । डॉक्टर अपनी गोदी में बेबी को लिए हुए था । अब उसे याद आया कि बच्चे को वह भूल से कुसुम के पास ही छोड़ आयी थी । उसने डॉक्टर से बच्चा ले लिया । डॉक्टर नर्स से बोला, “छोटे डॉक्टर से कहना कि कुसुम को एक इंजेक्शन दे दिया जाय ।”

नर्स चली गयी ।

तब करुणा ने पूछा, “कुसुम कैसी है ?”

“अच्छी तरह से ।”

“मुझे क्या मालूम था कि वह यह करने पर उतारू हो जावेगी । मैंने तो परसों रात ही उसे मना किया था । अपना मैं देती... ..।”

“वह काम का नहीं होता, फिर बेबी.....।”

“तक कुसुम !”

“वैसे कोई बात नहीं है । उसे ठीक तरह से नींद आजावेगी, तो अच्छा है । वह बहुत कुछ न जाने क्या-क्या सोचती रहती है । अपनी परवाह तक नहीं करती । अभी तक बेबी से खेल रही थी । यह बहुत लापरवाही की बात है ।”

यह तो करुणा की भूल थी, कि बच्चा वहाँ छोड़ आयी । अपना क्रूर उसने स्वीकर कर लिया । तब एक दिन इसी डॉक्टर ने अपनी बीबी को ऑपरेशन टेबल पर छोड़ दिया था और स्वयं भाग गया था । उसकी सारी कोशिश बेकार चली गयी थी । आखिरी सांस के बाद, शरीर की कोई भी क्रीमत नहीं रही । उसके सब नाते-रिश्ते अलग-अलग थे । आज परिस्थिति के कारण उसे अपनी लड़की पर भी हथियार चलाना पड़ा । अपने पेशेवाली नैतिकता का वह सवाल था । और

कुसुम की हालत ठीक नहीं है। महेश भी हिफाजत के साथ कहीं अस्पताल के किसी कमरे में सो रहा होगा। कि डॉक्टर बोला, “तुम बंगले चली जाओ करुणा। वहाँ नौकरानी होगी, यहाँ सब ठीक है। कुसुम के कमरे में रहना। मैं जल्दी आऊँगा।”

करुणा चली गयी। इतना अपनत्व आज तक दुनिया में उसके लिए बचा हुआ है, इसका सहज ज्ञान उसे पहले नहीं हुआ। अस्पताल की नौकरानी के साथ, वह बंगले पर पहुँच गयी। रह-रह कर डॉक्टर का कमरा याद आ रहा था। वहाँ आलमारी में कई टेढ़े-मेढ़े औजार व दवा की शीशियाँ थीं। बूढ़े की बातों में भी बहुत सन्तोष था। नौकरानी ने कुसुम का कमरा खोला। सबसे पहले उसकी नज़र एक बड़े फ़ोटो पर पड़ी : एक युवती बच्चे को गोदी में लिए हुए थी। वह बेबी कुसुम सी लगी। वह कुसुम की माँ की ही फ़ोटो होगी, निर्णय निकला। कुसुम के कमरे में वैसे कोई खास चीज़ नहीं थी। वह चुपचाप एक सोफ़ा पर बैठ गई। नौकरानी ने पूछा, “कुसुम बीबी कैसी हैं?”

“अच्छी हैं।”

“क्या हो गया?”

“तबीयत ख़राब है?”

“डॉक्टर साहब ने तो आज चाय भी नहीं पी।”

“पी नहीं!”

“वह बहुत दुखी थे। आकर बोले—कुसुम भी आख़िर में अब धोखा देने की ठहराए है।”

“वह धोखा देगी?”

“लगता था कि, उसकी ज़िन्दगी से वे निराश हो गये हैं।”

“वह तो अच्छी है। अभी-अभी मैं वहाँ से चली आ रही हूँ।”

करुणा को झूठ साबित करते हुए कहती रही, “कमज़ोर बहुत है। कुछ दिनों तक आराम करने के बाद भली चंगी हो जावेगी।”

“कल और परसों रात भर वह कहाँ रही, बीबी ?”

“परसों हमारे यहाँ और कल से अस्पताल ही में है ।”

“आपका ही नौकर परसों रात यहाँ आया था ।”

“हाँ !”

“उनका हाल कैसा है ?”

“सुना, ठीक हैं ।”

नौकरानी अब चुप हो गयी । करुणा की आँखों में नींद भर रही थी । वह पलंग पर लेट गयी । बड़ी देर तक सोयी रही ।

—अब नौकरानी ने आकर जगाया । बोली, “खाना तैयार हो गया है ।”

“और डॉक्टर साहब !”

“वे घर पर नहीं खाते हैं । अस्पताल भेज दिया है ।”

कर्तव्य मान कर करुणा उठी । थोड़ा खाना भी खा लिया । अब कमरे में लौट आयी । लेकिन खाली वक्त कैसे कटे ? सारा दिन ही पड़ा हुआ था । तब वह पति को चिट्ठी लिखेगी । लेकिन उनका पता भी कब मालूम था ? कम से कम भाई को खत लिख देगी । वह कुसुम की मेज़ पर पहुँची । एक सुन्दर लिफाफा, रङ्गीन पेपर-वेट के नीचे दबा हुआ था । चिट्ठी बन्द थी । शायद आज की डाक से आई होगी । किसी लड़की के अक्षर थे । उसने खोलकर पढ़ डाली :

मेरी कुसुम रानी,

अपने कुत्ते का नया हाल फिर तूने नहीं लिखा है ? वही अस्पताल और मरीजों के किस्से तू आजकल भी क्यों लिखा करती है ? इनसे तुझे घर पर तो छुट्टी पा जानी चाहिए । यहाँ मैंने तेरे लिए एक सुन्दर नौशा ढूँढ़ा है । तेरे मन लायक वह होगा । अब तेरी उमर काफ़ी बड़ी हो गयी है । उमी मुझसे नाश्तुश है । तुझे उसकी कोई चिट्ठी इधर मिली है ?

बस प्यार । चिट्ठी भेजना । अपने पिता जी से मेरा प्रणाम कह देना । यहाँ आजकल मौसम बहुत अच्छी है । तू जल्दी चली आना । फिर साथ-साथ कॉलेज चली जावेंगी । सब नई बातें लिखना । सुशील को चिट्ठी आई है । वह पास हो गई । मिलने पर बातें होंगी ।

केवल तेरी ही

सावित्री ।”

तब वह उसकी सहेली सावित्री की चिट्ठी थी । वह बाहर आयी और नौकरानी से पूछा, “कुसुम का कुत्ता कहाँ है ?”

“आज उसने भी खाना नहीं खाया । वह देखो न, बाग़ में अमरूद के पेड़ के नीचे सुस्त खड़ा है ।”

करुणा उठा कर ले आयी । सुन्दर काला बच्चा था । उसे पुचकार कर खूब प्यार किया । फिर खाना खिलाया । बार-बार वह पिल्ला करुणा को देख, उसे पहचान कर-सा, पूँछ हिलाने लगता था, या फिर धीमे स्वर में भूकने लगता । उस अपरिचित की उदारता से कोई भय उसे नहीं रह गया । वह फिर एक बार सन्देह के साथ भी उसे देखते हुए चूकता नहीं था । उसे लेकर वह कमरे में चली आयी । इसी कुत्ते का ज़िक्र तो उसकी सहेली ने पत्र में लिखा था । कुत्ता इधर-उधर कमरे में फिर कर, चीज़ें सूघने लग गया । एक बार पलँग पर कूद, फिर डरता हुआ नीचे उतर आया । बार-बार वह उछलता हुआ, एक बारगी चौंक, फिर खुद ही सावधान हो जाता था ।

तब करुणा उस लड़की को क्यों नहीं लिख देती कि उसकी कुसुम बीमार है । एकाएक यह विपत्ति आई । यह कोई भी नहीं जानता था । यदि वह बच जाये, अच्छी बात होगी । वह खुद नहीं कह सकती है, कि क्या होकर रहेगा । उसने कुसुम का पैड उठाया और लिखा :

प्रिय सावित्री,

अज्ञात और अपरिचित हाथ से पत्र पाकर, चौंकना मत । कुसुम बहुत बीमार है । भगवान के अधीन उसका जीवन है । कुत्ता ठीक है । अधिक क्या लिखूँ । यह आश्चर्य अब नहीं रहेगा ।

आपकी

कुसुम की जीजी ।

पत्र डाक में उसने छुड़वा दिया । अब एक भारी भय और बोझा हट गया था । उस सावित्री को अपनी सहेली का हाल जान लेने का पूरा-पूरा हक्क है । कौन जाने वह आकर कुसुम को बचा ले । लेकिन फिर उदासी उसे घेर रही थी । कुछ भी ठीक नहीं लगता था । वही अकेली क्या करे ? कोई भी साथ नहीं है । बार-बार मन में दुविधा उठती थी । वह इस सब भगड़े से भाग नहीं सकती, दूर जरूर चली जाती । दुनिया में उसे और कुछ भी नहीं चाहिए था । सारा माया-मोह व्यर्थ लगा । वह सब एक ढकोसला है भी । कौन पति, महेश और कुसुम ! मनोहर भी एक था । सारे नाम संज्ञा-वाचक शब्द के अलावा अधिक जीवित नहीं रहते हैं । रक्षा करके भी नाम अधिक नहीं चलते । उनकी इकाई अव्यय में परिणित हो जाती है । तब कोई भी किसी का नहीं है । सब अलग-अलग अपने-अपने ही हैं । उनको अपना, निज का साबित करना कठिन बात लगती है । एक विडम्बना है यह तो ।

डॉक्टर साहब नीचे बाग में टहल रहे थे । वह उठकर उनके पास पहुँच गयी । बेबी उसकी गोदी में था । डॉक्टर साहब ने हँस कर पूछा, “क्या है करुणा ? किसी बात की मिमांसा करने तो नहीं आई है ।”

“मैं ?”

“हाँ, तू ही ।”

“मैं तो पूछने आयी हूँ कि कुसुम कैसी है ?”

“सो रही है। इस समय सन्तोषजनक हालत है। सुबह वाला डर अब अधिक बाकी नहीं है। महेश तो अच्छी अवस्था में पहुँच गया। वह धीरे-धीरे स्वस्थ हो जावेगा।”

इतने में ही कोई नौकर आ पहुँचा। “फिर ऑपरेशन !” डॉक्टर ज़ोर से बोला।

छोटे डॉक्टर ने समझाया कि ‘गेंगरीन’ का बहुत ज़रूरी ‘केस’ है। बस डाक्टर उसके साथ चला गया। जैसे कि करुणा से उसे अधिक मतलब नहीं था। फिर वही रोज़ाना-जीवन का ऑपरेशन ! ज़रा भी फुरसत नहीं है। वही आदमी के शरीर के चीर-फाड़ का सवाल ! एक मिनट चैन करने नहीं मिलता। अच्छा पेशा है। हर वक्त काम, काम और काम ! दुनिया भर में कैसी-कैसी बीमारियाँ हैं ? वह बड़ी देर तक निरुद्देश्य, उस बड़े बाग़ में टहलती रही। तरह-तरह के पौधे और फूल थे। बीच में एक तालाब था। उसमें लाल-लाल छोटी-छोटी मछलियाँ तैर रही थीं। उनका खेल वह देखती रह गयी। तभी नौकरानी आकर बोली, “बीबी !”

“क्या है ?”

“बेबी के लिए नौकरानी आयी है।”

“नौकरानी !”

“डॉक्टर साहब नौकरानी लाने के लिए कह गये थे। ले आयी हूँ।”

उसके पीछे, एक दुबली-पतली साँवले रंग की लड़की थी। डाक्टर साहब की आज्ञा को वह मान लेगी। वह कुछ भी नहीं कह सकती थी। उस लड़की ने बेबी ले लिया और चली गयी। करुणा अब भी खड़ी की खड़ी थी। अब नौकरानी बोली, “डॉक्टर साहब ने एक नया ऑपरेशन किया है। सुना कि टाँग काटी गयी है। ज़हर फिर भी

सारे शरीर पर फैल गया। वह आदमी मर गया है। डॉक्टर साहब ने पहले ही पूरी नाउम्मीदी ज़ाहिर कर दी थी।”

“कौन मर गया !” सवाल पूछ ही करुणा ने डाला।

“अभी-अभी एक बूढ़ा मरीज़ आया था। कहीं पल्टन में नौकरी एक अरसे तक की उसने। परिवार वालों ने डॉक्टर साहब को मजबूर कर दिया था। उसकी तो मौत आ गयी थी। बचता फिर भला कैसे ?”

“यह कैसा काम है !”

“जब से कुसुम की माँ मरी यही हाल है। जब कुसुम रहती है, तब कभी-कभी घर पहुँच जाते हैं, नहीं कोई भी सरोकार नहीं है। हमों अस्पताल में ही रह जावेंगे। उनका यही हिसाब रहता है। कोई कुछ नहीं कह सकता है।”

करुणा चुप रही। समझ गयी कि कुसुम डॉक्टर के लिए, अपनी बीबी की एक मात्र यादगार है। डॉक्टर इसीलिए इस तरह रहा करता है। जानकर कुसुम ठीक है, डॉक्टर के चेहरे पर से संध्या को परेशानियाँ हट गयीं थीं। कुसुम डॉक्टर का सहारा भी है ही। अब काफ़ी रात हो आयी थी चुपके-चुपके। वह बंगले की ओर बढ़ गयी। बड़ी देर तक कुसुम के कमरे में बैठकर, उसकी डॉक्टरी से सम्बन्धित किताबों और अखबारों के चित्र देखती रह गयी।

एकाएक डॉक्टर कमरे में आया, आकर पूछा, “क्या हो रहा है करुणा ?”

“कुछ भी नहीं।”

“तब डॉक्टरी पढ़ी जा रही है। बहुत दिक्कत का पेशा है। कुसुम ने भी इसी को अपनाना मंजूर किया है। हमारा खान्दान सदियों से इस पेशे में प्रमुखता रखता चला आया। पिताजी सिविल-सर्जन थे। और भी पिछली पीढ़ियों के लोग नामी-नामी डाक्टर हुए हैं।”

“कुसुम कब तक चंगी हो जावेगी ?”

“फ़िलहाल पन्दरह दिन तो उठने में ही लगेंगे। उसके बाद और एक महीना आराम चाहिए। तब जाकर कुछ खून बनेगा।

“उसका तो कालेज खुलने वाला है।”

“कुछ देरी से भी वह जा सकती है।”

करुणा चुप रह गयी। कुत्ता अब डॉक्टर साहब के साथ खेल रहा था। न जाने कहाँ से भागता हुआ आकर, अब हाँफ रहा था। डॉक्टर बोला, “कुसुम अभी-अभी कुत्ते के लिए बड़बड़ा रही थी।”

“उसी का कुत्ता है?”

“वह उसे बहुत प्यार करती है। जब कि वह नींद में अपने कुत्ते के लिए बड़बड़ाई, तो मुझे आशा हो गयी कि वह अब बच जावेगी। अचैतन्य अवस्था में भी उसका स्वास्थ्य ठीक है। इसीलिए अब कोई भी डर की बात नहीं है। ज़रा वह होश में ठीक तरह आवे, वस कुत्ता वहीं भेज दिया जावेगा।”

“खाना रख दिया है।” नौकरानी ने आकर सूचित किया।

“चलो करुणा।” डॉक्टर उठता हुआ बोला।

दोनों उठकर, नीचे कमरे में चले गये। और एक बड़ी मेज़ पर बैठ कर खाना खाने लगे। डॉक्टर बड़े उत्साह और पुचकार से करुणा को खाने का अनुरोध करता। जैसे कि वह छोटी बच्ची है। फिर बोला, “कुसुम ने कहा था कि, तुमको यही कमरा दिया जाय। वह साथ होती, तो तुम्हारा दिल लग जाता। वैसे कुछ ही दिनों की बात है।”

करुणा कुछ नहीं बोली। दोनों खाना खाते रहे। कुछ देर बाद, एक नर्स आ पहुँची, कहा, “कुसुम को फिर बुखार चढ़ गया है।”

डॉक्टर ने चिम्मच नीचे रख दी। कुछ देर तक आँखें मूँदते हुए न जाने क्या-क्या सोचता रहा। एक बार आँखें खोल, करुणा की ओर भी देखा। करुणा को लगा कि वे आँखें एक बारगी खाली हो गयी थीं। और उसने सीधी भाषा में पूछा, “टेम्परेचर क्या है?”

“१०३ डिगरी।”

“चार्ट लाई हो।”

“हाँ।”

बस डॉक्टर ने चार्ट ले लिया। वह उसे पढ़ता रहा। कही-कहीं रुक कर, मन-ही-मन बुदबुदाने लगता था। बड़ी देर तक चार्ट को कई बार देखने के बाद चार्ट दे दिया और बोला, “इंजेक्सन दिया जावेगा। बुखार के चढ़ने पर वह ज़रूरी है। ज़रा ठहरना.....!”

वह उठ कर अपनी लाइब्रेरी में चला गया। वहाँ से एक मोटी किताब लाकर, उसके कई पन्नों को पढ़ता रहा। आखिर में कह दिया, “छोटे डॉक्टर तो वहाँ होंगे। मैं अभी-अभी आ रहा हूँ।”

नर्स चली गई। अब उसने करुणा से कहना शुरू किया, “ये लोग ज़रा-ज़रा-सी बातें पूछते हैं। हर पाँच मिनट बाद, वही कुसुम! किसी भी मरीज़ की बहुत ज़्यादा हिफ़ाज़त ठीक नहीं होती है। कुछ रोग को भी अपने ही आप अच्छा होने के लिए मौक़ा देना पड़ेगा। छोटा डॉक्टर तो दिन भर, लाइब्रेरी में बैठ कर, बहुत सी किताबों से नई-नई बातें छान-बीन कर ले आता है। कल ‘मिलिटरी’ के कुछ बड़े डॉक्टरों की राय लेने का भी हमारा इरादा है। अपने अस्पताल में अब कुसुम को अधिक नहीं रखना चाहता हूँ। मैं खुद उसके रोग के नए परिवर्तित पहलू को नहीं समझ पा रहा हूँ। हमारी अलग-अलग राय हैं।”

“क्या मैं कुसुम के कमरे में नहीं रह सकती हूँ?” करुणा ने पूछ ही डाला।

“अभी नहीं, पीछे देखा जावेगा। महेश चार-पाँच रोज़ में ठीक हो जावेगा।”

करुणा चुप रही। डॉक्टर न जाने क्या सोच रहा था। करुणा उसे ताकती-ताकती रह गयी। कुछ क्या पूछे।

लेकिन डॉक्टर अब अस्पताल चला गया था। वह ऊपर कमरे में

पहुँची और पलंग पर लेट गयी। मानव की हालत पर बहुत कुछ सोचा। कोई खास बात निर्धारित नहीं कर सकी। कुसुम ने आज उसके जीवन में एक नया अनुभव जोड़ दिया था। जिसका कि ज्ञान उसे अब तक नहीं था। बार-बार मन में बात उठती—कुसुम अच्छी हो जाय ! नौकरानी जब आयी, तो उसने पूछ डाला, “डॉक्टर साहब कब तक लौट आवेंगे ?”

“कुछ भी ठीक नहीं है।”

“जब आवें मुझे जगा देना।”

नौकरानी चली गयी। वह चुपचाप, मकड़ी की तरह जाला बुन रही थी। वहीं पिछली स्मृतियाँ बार-बार मरी मस्त्रियों की तरह भूल उठती थीं। कभी तो ल़ी-ल़ी होती। किन्तु अधिक देर वह नहीं टिकती थी। वह कितना ही उम जाल से भागती, कुछ हासिल नहीं होता था।

पाँचवें दिन सावित्री आ पहुँची थी। अब करुणा अकेली नहीं रह गयी। कुसुम के बारे में कोई भी कुछ राय नहीं देता था। खुद डॉक्टर ने उन बातों का छुपाने की कोशिश की। अक्सर करुणा और सावित्री के साथ वह बातें करता था। सावित्री से अधिकतर डॉक्टरी के सम्बन्ध में ही बातें होती थीं। चाहे करुणा की समझ में न आती थीं, फिर भी वह सब कुछ चाव से सुनती थी। और दिलचस्प बातें चालू रहा करती थीं। दिन कटते चले गये।

एक दिन सुबह करुणा बेबी को दूध पिला रही थी और सावित्री कमरे में बैठी, एच० जी० वेल्स की किताब पढ़ रही थी। डॉक्टर कमरे में आया। बोला, “सावित्री तुमको तो एच० जी० वेल्स बहुत पसन्द है न ?”

“और आपको।”

“हम तो ठहरे पुराने ज़माने के। भला वह क्यों भला लगेगा !” कहते-कहते डॉक्टर हँस पड़ा।

“हम लोगों के लिए तो वह ठीक ही है।”

“मैं मना कब करता हूँ।”

“खैर बातें तो पीछे होंगी। करुणा महेश बाबू को देखना चाहती है ! अब वे होश में आ गये हैं।”

“लेकिन उसका एकाएक जाना ठीक नहीं होगा । पहले तुम चली जाना । करुणा बाद में जावेगी । अपने माथ ही ले जाना ।”

करुणा कुछ न बोल, चुप रही । वह बच्चे को दूध पिला रही थी । अब मज़ाक करते डॉक्टर बोला, “क्यों करुणा, नाखुश हो गयी है ?”

“क्या डॉक्टर ?” कह कर, उसने दूधदानी बच्चे के मुँह से निकाल ली । बच्चा रोने लगा ।

“यह अच्छा बहाना है !” डॉक्टर हँस पड़ा । “जब मन में आया चाभी मरोड़ दी ।”

“जीजी चतुर है ।” सावित्री हँस पड़ी ।

“और तू सावित्री ?” करुणा ने सवाल पूछ डाला ।

“मैं.....।” कुछ और न कह, वह चुप हो गयी ।

“तेरा भी इन्तज़ाम करूँगी, तू फ़िक्र मत किया कर ।”

लेकिन डॉक्टर चला गया था । सावित्री बेबी को लेकर खिलाने लगी । करुणा ने उस सावित्री को देखा । यह लड़कियाँ कितनी सुधड़ थीं ! हर एक बात का तोल-तोलकर जवाब देना भी सीख लिया था । आपस में शीघ्र मज़ाक करते भी नहीं चूकती हैं । फिर वह कुसुम की शादी के लिए चुना हुआ लड़का ! करुणा मन में भीतर हँसी और पूछा, “सावित्री, वह लड़का कौन था ? तूने अभी तक नहीं बतलाया है ।”

“कौन जीजी ?”

“जिसे कुसुम और तूने साथ-साथ वरने की ठहराई है ।”

“वाह जीजी, क्या तुम इतनी भोली हो, कि नहीं जानती होगी ।”

“मैं !”

“हाँ जानती हो तुम ।”

“क्या कहा ?”

“तब मिठाई खिलानी पड़ेगी ।”

“सगायी तुम्हारी हो और मैं मिटाई गिलाऊँ । यह कहाँ का न्याय है ।”

“आजकल की सभ्यता है, जीजी । वैसे हम दोनों महेश बाबू को वर लेवेंगी । हम दोनों रहेंगी डाक्टरनी और तुम करना घर की देख-भाल ।” यह कह कर वह खिलखिला, हँसी और खूब हँसी ।

अब करुणा को अपने पर भारी गुस्सा चढ़ा । वह क्यों साफ़-साफ़ बातें नहीं सुना देती है ? एक समस्या खड़ी करके ठगना अनुचित है । और यह क्या उसने ठान लिया है । इस महेश से तो उसका कोई सगा नाता है नहीं । मौक़ा मिलते ही वह सारी बातें डॉक्टर साहब को सुना देवेगी । तब ये लोग ग़लतफ़हमी में नहीं रहेंगे । सावित्री से वह सारी बातें न कह सकी । कारण कि, वह चुपचाप उठ कर बाहर चली गयी थी । करुणा बैठी की बैठी हो अब रह गयी ।

सावित्री बाहर निकली और अस्पताल की ओर बढ़ी । वहाँ एक औरत का ऑपरेशन होने वाला था । वह उसकी ‘स्टडी’ करना चाहती थी । ग्यारह महीने का बच्चा पेट में था । माँ के जीवन पर बात अब अटक गयी थी । सब डॉक्टर अपनी असमर्थता जाहिर कर चुके थे । वह ऑपरेशन-हॉल में पहुँची । डॉक्टर वहीं खड़ा था । सावित्री को देखकर बोले, “मैं खुद तुमको बुलवाने की सोच रहा था !”

“लेकिन मैं तो चली आई हूँ ।”

“कुसुम के पास चलोगी ?”

“हाँ ।”

और वे दोनों कुसुम के कमरे में पहुँच गये । कुसुम को देखकर वह बहुत डर गयी । कुसुम का चेहरा मुर्दे की तरह सुफ़ेद पड़ गया था । वह यह सब न सह सकी । चुपके बाहर चली आयी । डॉक्टर ने कहा, “अभी तक कुसुम की हालत में कोई भी अन्तर नहीं है । रोज़ ही भय लगा रहता है । कल तो मैंने समझा था कि वह मर जावेगी । सब ठीक इन्त-

ज्ञाम हम लोगों ने कर लिया था । मैं आखिरी इंजेक्शन भारी नाउम्मेदी के साथ दे आया था । यह हिदायतें थीं, कि वहाँ कोई न जावे । किन्तु वह बच गयी । मुझे बहुत आश्चर्य हुआ ।”

सावित्री लौटकर आ गयी । जब उसने ग्यारह महीनेवाले बच्चे की माता का ऑपरेशन का हाल करुणा को सुनाया, तो वह स्तंभित रह गयी । लेकिन फिर दूसरा ऑपरेशन ! अबसेस का !! करुणा घबड़ा उठी । यह रोज़ क्या लगा रहता है ! वह बोली, “सावित्री यही हाल रहा तो... ..!”

“और हमें तो रोज़ ही यह करना पड़ता है । हमारा काम भी यही है ।”

“तुम तो राक्षस हो !”

“वैर, महेश बाबू के पाम हो आऊँ ।” कहकर सावित्री चली गयी ।

महेश ने ज़रा आँखें खोलीं । सावित्री को देखा । भ्रम में-मा बोला, “करुणा तुम आगयी !”

“नहीं, मैं हूँ सावित्री ।”

“करुणा कहाँ है ?”

“डॉक्टर साहब के बंगले में ।”

“और आप !”

“मैं अस्पताल की नौकरानी हूँ ।”

“करुणा यहाँ नहीं आवेगी ?”

“अभी लाती हूँ मैं ” कहती हुई सावित्री बाहर गयी और करुणा को बुला लायी । राह में समझाते हुए बोली, “ज्यादा बातें न करना । वे बहुत कमज़ोर अभी हैं ।”

करुणा चुप रही । रुमरे के बाहर क्षण भर ठिठक गयी । फिर करुणा के माथ-माथ भीतर चली गयी । देखा, महेश चुपचाप आँखें

मूँदे पड़ा हुआ था। उस चेहरे को देखकर वह डर गयी। सावित्री अब बोली, “करुणा जीजी आई हैं।”

महेश ने आँखें खोलीं। करुणा को देखा फिर आँखें मूँद लीं। चुपचाप कुछ देर आँखें मूँदे ही रहे। सावित्री बाहर चली गयी थी।

अब करुणा बोली, “महेश बाबू !”

महेश ने आँखें खोल ली थीं। वह आँखें खुली ही रहीं। अब आगे करुणा क्या कहे। वह खुद भी नहीं समझ पायी। कुछ वह सोच पाती, कि उससे पहले महेश ने पूछा, “मैं कहाँ हूँ ?”

“अस्पताल में।”

“कै दिन हो गये हैं ?”

“आठ।”

“मुझे क्या हो गया था ?”

“सीढ़ियों से गिर पड़े थे।”

“और तुम !”

“मैं डॉक्टर साहब के बँगले पर हूँ। सावित्री मेरे साथ आई है।”

“कौन सावित्री ?”

“वही लड़की जो अभी-अभी मेरे साथ आई थी।”

“अस्पताल की नौकरानी ?”

“किसने कहा है ?”

“वही खुद कहती थी।”

“तो तुमसे वह झूठ बोली है। डॉक्टर साहब की लड़की की सहेली है।”

“कौन लड़की ?”

“कुसुम।”

कि सावित्री कमरे में आकर बोली, “बहुत बातें करनी ठीक

नहीं होवेंगी। आपको कमज़ोरी भी बहुत है। चलो जीजी अभी और भी बहुत से काम पड़े हैं।”

तभी महेश बोला, “तार दिया है करुणा?”

“नहीं।”

“नहीं!”

“भूल गयी थी मैं।”

“अब दे देना। और तुम जल्दी चली जाओ। यहाँ व्यर्थ पड़ा रहना ठीक नहीं होगा। मैं अच्छा हो ही रहा हूँ। कोई भी फ़िक्र करने की बात नहीं है।”

नर्स आ पहुँची थी। करुणा और सावित्री बाहर चली आयीं। राह में सावित्री ने पूछा, “कहाँ जाओगी जीजी?”

“भाई के पास।”

“कब?”

“अभी नहीं। ये ज़रा अच्छा हो लें। इनको साथ लेकर चलूँगी।”

“तार दे देना।”

“ठीक पता मालूम नहीं है।” वह झूठ बोल बैठी।

फिर दोनों चुप हो गयीं। जिस बात के लिए महेश ने आगाह किया था, उसे करुणा बख़ूबी समझती थी। जान रही थी, सब कुछ ग़लत-ग़लत होता चला जा रहा है। वह लाचार है। सब कुछ निभाना ही तो पड़ेगा। कभी-कभी उसका दिल ऊबने लगता था। अपने भीतर की कथा वह किसी से भी नहीं कह सकती थी। दुनिया भर की व्यथा अपने को ढँक रही थी। कठिनाइयाँ घेरने लगीं। यदि महेश बीमार नहीं पड़ता, यह इतनी बातें नहीं होतीं। अब एक मिनट में ही सुधार नहीं हो सकेगा। इसके लिए बहुत वक्त चाहिए। पति आकर सब कुछ सुलझा देवेगा। वह पति से सारी बातें कहेगी। यही उसे करना है। मन में न जाने क्यों डर बैठता रहा। वही जैसे क्रसूरवार हो। उसी के भाग्य के कारण यह

हुआ, अन्यथा महेश को इतना दुःख नहीं भुगतना पड़ता। अब भी वह ठीक नहीं। कुसुम की धारणायें भी भरोसा नहीं लगतीं। सब कुछ अनाधिकार, कुसुम ने किया था। यदि उसमें अपना बल होता, वह चल देती। सावित्री ठीक-ठीक दोनों, महेश और कुसुम को संभाल लेगी। लेकिन कुसुम के बारे में कुछ भी उसे कहाँ मालूम हुआ था। एक रात उसके समीप रह, अपनी जीजी एलान कर, वह अब पास नहीं थी, अब वह दूर अज्ञात सी है। कैसी है वह, यह सूचना मित्रनी भी कठिन है। कुछ मालूम नहीं होता है। कोई पूरी बात नहीं कहता है। कुसुम की चर्चा उसके आगे नहीं की जाती है। डॉक्टर और सावित्री कभी कुसुम की बात करते भी हैं, तब भी पूरी जानकारी उसे हासिल नहीं होती है। यह धन्धा, उनका ही है। जिससे कि करुणा को जैसे कोई भी अपना सरोकार नहीं हों।

“सावित्री बीबी” नौकरानी ने आकर, दोनों को सावधान कर दिया।

“क्यों ! क्या बात है ?” सावित्री बोली।

“कुसुम ने अपना कुत्ता मँगवाया है।”

“कुत्ता !” करुणा ने दुहराया।

ठीक है ! मैं अभी आती हूँ, डॉक्टर कहाँ है ?”

“सावित्री, कुसुम को अपने कुत्ते की इतनी परवाह और फ़िक्र क्यों है।” भारी कुतुहल दबा, करुणा ने पूछा।

“परवाह ! वह तो सिर्फ़ कुत्ते की वजह से जीवित है। वह खुद इस बात को ठीक-ठीक नहीं समझ पायी है कि, आखिर बात क्या है ? अक्सर दिमाग़ पर भारी सदमा पड़ने से ऐसा हो जाया करता है। दिमाग़ के बारे में अभी कोई साफ़ राय भी आसानी से नहीं दी जा सकती है। डॉक्टर को डर है कि यदि वह माना जीवित भी रहे, मस्तिष्क पर पड़ा प्रभाव एक दम नहीं हटेगा। कौन जाने क्या हो जाय ? भारी नींद में

जब वह कुत्ते के लिए बड़बड़ाई, यह उम्मीद हो गयी थी कि वह जीवित रहेगी ।”

“कुत्ता उसे बहुत प्यारा है न !”

“प्यारा ! बिना कुत्ते के वह एक मिनट भी जीवित नहीं रह सकती है । बचपन में ही उसकी माँ मर गयी थी । भला तब पिता के दुलार की क्या हद होती ? उन दिनों कोई सही बातचीत कर लेने वाला साथी भी, उसके साथ नहीं था । पिता ने अपना पूरा-पूरा कर्तव्य निभाया । फिर भी माँ की ममता-मोह की कोमलता का ज्ञान कौन सिखलाता । पिता की सहृदयता को पाकर ही वह बहुत भावुक बनती चली गयी । अकेला अपने को पाती थी । पिता का बड़ा अस्पताल, नर्स, ऑपरेशन, सारा वातावरण उसके जीवन के अनुकूल नहीं था । उसकी भावुकता और-और बढ़ी । पिता ने एक ईसाई मास्टरनी रखी, उससे स्वाभाविक मेल उसका नहीं हुआ । अज्ञेय भारी पीड़ा उसके मन में होती थी । तब पशुओं की मृकता की ओर उसका ध्यान गया । विल्ली के बच्चे, खरगोश-ताल में लाल-लाल मछलियाँ, तोता——तुमने क्या उसकी पशु-पक्षिशाला नहीं देखी है ?”

“नहीं तो.।”

“कुछ ज़रा स्वस्थ होते ही उसे वहीं रखने का विचार है ।”

“पशु-पक्षियों के बीच !”

“यही आखिरी इलाज कई विशेषज्ञों ने बतलाया है । और हम भी वही ठीक समझते हैं । आजकल वह कुत्ता उसे बहुत पसन्द है । कल किसी और का प्रभाव उस पर पड़ सकता है । तब वह कुत्ते को छोड़ देवेगी । आगे अभी तो इस रोग की परीक्षा हो रही है ।”

“दुनिया में अजीब-अजीब बातें चालू हैं, सावित्री ।”

“अच्छा जीजी, मैं वहाँ हो आऊँ । माफ़ करना, फिर तुमको साथ ले चलूँगी । उसने कुत्ता मँगवाया है, इसी बहाने उसे देख आऊँ ।

मैं खुद वहाँ नहीं जाती, कारण कि, उसकी दिमागी हालत बहुत नाजुक है। डर था कि मुझे पाकर और कुछ रोग बढ़ नहीं जावे। अब वह बात नहीं रह गयी है।”

सावित्री चली गयी थी। करुणा ने उसके कथन पर बहुत कुछ सोचा। कोई बात तथ्य की नहीं मिली। डॉक्टरों का कहना तो मानना ही पड़ेगा। वे कुछ-न-कुछ नई बात कहेंगे। दुनिया में भी तो अजीब-अजीब रोग फैल रहे हैं। दुनिया का हाल विचित्र है ही। रोग भी कायदे कानूनों के साथ चलते हैं। उसकी भी अपनी परिभाषा है। वहाँ भी सब कुछ व्यवस्थित और नियमपूर्वक धारणायें चालू होती हैं। कुसुम और रोग, क्या एक खेल में नहीं लगते हैं—कठपुतली के तमाशे की तरह क्या-क्या आश्चर्य भी है। काला-काला कुत्ते का बच्चा, उसे जीवित रखने का हथियार बन रहा है। नए अचरज की एक बात !

—सावित्री कुत्ते के साथ सीटी बजाती-बजाती अस्पताल पहुँची। डॉक्टर के कमरे का परदा हटाया। उसे देख कर, डॉक्टर बोला, “आओ सावित्री।”

सावित्री ने डॉक्टर को देखा, सारे बाल सुफेद थे। चेहरे पर भी हलकी-हलकी भाँपियाँ दीख रही थीं। यह डॉक्टर अभी ठीक, सब कर्तव्य निभा लेता है। कुछ साल के बाद हाथ काँपने लगेंगे। सावित्री ने कुसुम के साथ कई बार साथ-साथ काम करने की कसमें खायी हैं। यह सावित्री जानती है, सब निभाना उसे पड़ेगा। अपना पेशा शुरू करने के लिए, यहाँ रहना ज़रूरी भी होगा। अब वह बोली, “आप क्या देख रहे हैं।”

डॉक्टर के सामने एक्स-रे का फ़ोटो टँगा हुआ था। उस पर रोशनी पड़ रही थी। डॉक्टर ने सिगार का एक कश लिया, धुआँ उगलने लगा। फ़ोटो को देखकर, वह कुछ जैसे ढूँढ़ रहा हो। आँखें मूँद कुछ सोचने लगता था। शीला चुपचाप बैठी की बैठी, सब कुछ देख रही थी। बड़ी

देर के बाद, डॉक्टर ने अपना सिर हिलाया। जैसे कि कुछ वह पा गया हो। कहा फिर भी कुछ नहीं। फोटो को तेज़ निगाह से देखता ही रहा। आखिर बोला, “एक दम नया कॉम्पलेक्स है ! यह फोटो मेरे एक दोस्त ने भेजा है। कुछ भी बात समझ में नहीं आती। सिर का फोटो है। मस्तिष्क के रोगों की काफ़ी छानबीन करनी पड़ती है। उसी पर प्रयोग कर रहा हूँ। अभी फैसला नहीं हो सकेगा। हमें दिमाग़ की बनावट को अपने अधिकार में लाना है। यह एक दिन में नहीं होवेगा।”

“और जो इधर मनोवैज्ञानिक इलाज चालू हुए हैं।”

“वह तो अभी-अभी शुरुआत पर हैं।”

“लेकिन, डॉक्टर, कई बातें समझ में आती ही नहीं हैं। हम जब ख़ाली रहते हैं, या दिल काम पर नहीं करता, हम कुछ कहाँ सोचते हैं। या फिर क़लम और पेन्सिल से कोरे काग़ज़ पर अपने दस्तख़त बनावेंगे। लाइनें भी तरह-तरह की खींचा करते हैं। वह भी ज़रूर कोई रोग है। इसी तरह बुद्धिवादियों के बीच बहुत सारे रोग चालू हो गये हैं। उनके बारे में आज कुछ न करना भी हानिकारक है। आपकी राय इस विषय पर क्या है ?”

“मैं भी उस तरह के रोगों का अन्वेषण आजकल कर रहा हूँ।”

“क्या ?”

“शरीर के ज़र्रे-ज़र्रे का चीरफाड़ के बाद, अब व्यक्ति के सेंटिमेंट, इमोशनस्, सनक, ख़्याल, आदि दिमाग़ से सम्बन्ध रखने वाले गुणों की ओर मैंने अपना क्षेत्र बना लिया है।”

“आज के लिए.....।”

“वहीं हमने कुसुम का बीमारी पकड़ी है।”

“क्या ?”

“कुसुम जब खून देने तैयार हुई, उसमें पहले बड़ी देर तक वह मेरे ऑफ़िस की मज़ पर बैठी रही। वहाँ उसने करुणा का पत्र पढ़ा।

इसके बाद उसने करुणा की सी राईटिङ्ग लिखने की कोशिश की। बाद का करुणा, महेश व अपने दस्तखतों से उसने सारा कागज़ रंग दिया। मुबह उसके 'इमोशनों' का कुछ भी ठीक पता नहीं लगा। छोटे डॉक्टर ने ऑपरेशन के लिए मनाही की थी। लाचारी में उसका खून लेना पड़ा। अपने उस कुत्ते को वह अपने साथ टेबुल पर भी रखना चाहती थी। आज से पहले कुत्ते का कोई ज़िक्र उसने नहीं किया। अब हम लोग रोग की छानबीन कर रहे हैं। रोग पकड़ में नहीं आता। अचैतन्य इमोशनों का तीव्र प्रवाह खून में है। वह उसमें रहने से कीटाणुओं को खुराक देते हैं। इसलिए बुखार बढ़ जाता है।”

“इमोशनों के कारण !”

“यही वजह है कि, वह उत्तेजित रहने लगी है। इस वक्त कुत्ते को ले जाने पर, वह उसे खाना देगी और उसका टेम्परेचर इसके बाद कुछ कम हो जावेगा। तुम कोई ऐसी बात न पूछना कि वह घबड़ा उठे।”

“उसके दिमाग की हालत तो नॉरमल होगी ?”

“शायद ! हम अलग-अलग डॉक्टरों की कई राय हैं। मेरा अपना ख्याल है कि ऑपरेशन करना पड़ेगा। नहीं तो पस पड़ने का खतरा है और रोग तो कोई दीख नहीं पड़ता है। दूसरे डाक्टर मुझसे सहमत नहीं हैं। और बिना उनकी राय के मैं कुछ नहीं कर सकता हूँ।”

“उनकी क्या राय है ?”

“वे चाहते हैं कि महेश बाबू के कुसुम के पास जाने से रोग हट जावेगा। करुणा के कारण, महेश का उतना खून देख कर ही वह ‘नरवस’ हो गयी है। महेश के अच्छे हाँते ही वह बिल्कुल स्वस्थ हो जावेगी।”

“तब महेश बाबू को।”

“फिर एक और डर है। कौन जाने कुसुम का हार्ट फेल हो जावे।

या वह पागल आर्जावन बनी रहेगी। पशुओं से मोह करना भी एक रोग है। वह अब बढ़ना नहीं चाहिए। हम उसका इलाज कर रहे हैं।”

और डॉक्टर चुप हो गया था। छोटा डॉक्टर भी आ पहुँचा। वह आकर बोला, “कुसुम को इंजेक्शन दिया जावेगा?”

“नहीं।”

“फिर.....।”

“सावित्री को कुत्ते के साथ पहुँचा दो।”

सावित्री चली आयी। देखा कुसुम बैठी हुई थी। कुत्ते को देख खिल उठी। उठने की चेष्टा की, किन्तु सावित्री के मना करने पर लेटी ही रही। कुत्ता भूकता हुआ, कुसुम के हाथ चाटने लगा। अब कुसुम धीमे स्वर में बोली, “देख सावित्री पशु कितनी मुहब्बत करते हैं। यह मेरे बिना बहुत दुबला हो गया है। लेकिन तू कब आ गयी?”

“कई दिन हो गए हैं।”

“कई दिन!”

“करुणा की चिट्ठी मिलते ही चली आयी। यहाँ का हाल देख, आश्चर्य में पड़ गयी हूँ। अभी कुछ दिन यहीं रहूँगी।”

“करुणा कहाँ है?”

“बँगले पर।”

“और महेश बाबू?”

“अभी हॉस्पिटल-वार्ड में ही हैं। अच्छे तो हो रहे हैं।”

“बेबी?”

“मला है।”

“सावित्री बिल्कुल नई बात है। यह भेद समझ में नहीं आता। जब डॉक्टर क्लोराफार्म दे रहा था, मेरी आँखों के आगे काला परदा पड़ गया। तभी मैं जानें उस मेडिकल कॉलेज वाले लड़के की याद क्या आ

गयी। उसी वक्त लगा, मैंने गलत देखा था। महेश बाबू मेरे पास खड़े होकर मेरा गला घोट रहे थे।”

“महेश !”

“मैं अच्छी तरह उनको पहचान गयी थी। वही थे—वही। आगे और कुछ भी मालूम नहीं हुआ। शायद मैं बेहोश हो गयी थी। होश मुझे फिर न रह गया था।”

“वह सब ख्याली बातें हैं।”

“नहीं, महेश बाबू मेरा गला घोट कर मुझे मार डालना चाहते थे। उनकी आँखों की लाली में खूनियों वाला पैनापन था। मैंने ठीक अन्दाज़ लगाया था। वह यह क्यों चाहते थे सावित्री !”

“कुसुम !”

“तो क्या मैं बावली हूँ ?”

“तू !”

“हाँ मैं-मैं ?”

“नहीं तो।”

“तू भूट बाल रही है। मेरी बात ठीक तरह से समझ लेने की कोशिश कर। रात में जब महेश बाबू को पापा ‘कार’ में लाये थे, मैं उनकी सूरत देख कर बेहद घबड़ा उठी थी। एक बार महेश बाबू की आँखें खुली थीं। मैं उनको पकड़ न पायी, वे खुद ही जल्दी में मुँद गयी थीं। कुरुणा के पाम जाकर मुझे कुछ चैन पड़ा। आगे वहीं बेचैनी आरम्भ हो गयी। उस समय मेरे दिमाग में बात उठी, किसी भी तरह महेश को जिन्दा रहना चाहिए।”

सावित्री चुप रही। कुत्ता इधर-उधर खेल रहा था। कुसुम चुपचाप लेटी हुई थी। उसके चेहरे पर खास कोई अन्तर नहीं मिला। सावित्री ने पाया कि वह अपनी आँखों से अनायास कुछ ढूँढ़ना चाहती है। वह डर गयी। यह बात क्या थी।

“तुम अब जाओ सावित्री, मैं अच्छी हूँ। मुझे अपना कुत्ता चाहिए था, वह मिल गया है।” वस कुसुम ने आँखें मूँद लीं। वह हाँफने लगी। सावित्री इन छोटी-छोटी बातों पर क्या सोच सकती थी। वह चुपके से बाहर निकली और डॉक्टर को सारी बातें सुना दीं। अब वह इंजेक्शन वाली क्रिया चालू रही। सब चाहते थे कि उसे सोया रहना पड़ेगा। जागने पर उत्तेजना बढ़ जाती है। उसे तो आराम और नींद की ज़रूरत थी। यह सब की एक राय मिली। और कुछ भी क्लिहाल नहीं किया जा सकता था। सावित्री भी रोग पर अधिक दलील किसी से नहीं करना चाहती थी। उसे कोई उत्साह ज़रूर था, अपने में ही वह कई बातें सोचकर, चुप रह जाती थी।

करुणा अपनेमें कुछ भी सही बर्ताव नहीं पाती थी। सावित्री ने आकर कुछ भी कुसुम के बारे में नहीं कहा था। कुसुम अच्छी हो रही है, कह कर अपना उत्तरदायित्व उसने निभा लिया। और कुछ भी नहीं बोली, वह एक बार महेश को देखना चाहती थी, पर किससे कहे, उसका मन अब नहीं लगता था। वह अब यहाँ से चले जाने की सोचने लगती। अधिक वहाँ रह कर वह क्या कर लेती? न कोई लाभ ही है। अब महेश को भी कुछ डर नहीं है। उसके लिए अब कोई चिन्ता बाकी न बची थी। कुछ घंटे महेश के साथ रहने पर, उनका आपसी समझौता हो गया था। जिसमें वह लाचारी फँस गई। दुनिया कल सारी बातें सुन कर हँसेगी। ऐसे भी कहीं असावधान रहा जाता है। इस अज्ञानता का भरोसा न होता, वह इस तरह विश्वास की तरह अटल खड़ी नहीं रह जाती। पति उदार हैं, वे कुछ न कहेंगे। सन्देह बरतना उनके स्वभाव से परे की बात है। इस हल्ले का हाल अधिक दुनिया को जानना ज़रूरी नहीं रह जाता है। आदमी को अपना आदर दूसरे की कसौटी पर परखना चाहिए। पति, वह सारा धन्धा निभाना अच्छी तरह जानते हैं। किन्तु यह महेश! कुसुम, सावित्री और डॉक्टर सारी बातें सुनकर, दलील नहीं करेंगे। वह उनसे सारी बातें व्यर्थ छुपाये हुए है। वह सब कह देगी, ज़रा कुसुम अच्छी तो हो जाय।

“जीजी ! जीजी !!”

“क्या है सावित्री ?”

“बाग़ में नहीं चलोगी, हम तो चाय पर इन्तज़ार करते-करते थक गये हैं ।”

“चल” कह कर, करुणा उठी और वे दोनों बाग़ में पहुँच गयीं । दोनों डॉक्टर बैठे हुए थे ।

“क्या हो रहा है करुणा ?” बूढ़ा डॉक्टर बोला ।

“कुछ नहीं ।”

“कुछ नहीं ! वाह, न जाने क्यों उदास बैठी-बैठी ऊँघ रही थी ।” सावित्री हँसते हुए बोल बैठी ।

“क्या ?” डॉक्टर पूछ बैठा ।

“सावित्री, तू मानेगी नहीं न ” करुणा ने कह दिया ।

“क्या” ? डॉक्टर दोनों के झगड़े में साझा करने को तैयार हो गया था ।

“आपने ही हमें मुँह लगाकर आदत ख़राब कर दी है, अब क्या करें ।” सावित्री मुस्करा उठी ।

“मैंने !” डॉक्टर हँस पड़ा ।

“घातों में, रहन-सहन में, एक-दम आधुनिक लड़कियों वाली स्वतंत्रता नहीं तो हम थोड़े ही अपनाती । और हमारे लिए कॉलेज में पारसल भेज-भेज कर आदत ख़राब कर दी है । रोज़ ही कुछ न कुछ । तब भला हमारा क्रूर क्या है ?”

“अभी तुम्हारी उम्र ही ऐसी है ।”

“अधिक हिक्काज़त और स्वतंत्रता से लड़कियों के बिगड़ते भी कितनी देरी लगती है ?”

“तुम लोगों के अलावा मेरा और है ही क्या, सावित्री ?”

“यह इतना बड़ा अस्पताल.... .।”

“तैरे और कुसुम के लिए ही तो मेहनत करता हूँ, जिस दिन तुम दोनों यहाँ का भार ले लोगी, बस मेरी पेन्शन समझ लो । क्यों करुणा, इस पराये घर में पड़े-पड़े, तुम्हें भी बुरा लग रहा होगा ?”

“पराया घर !”

“नहीं तो तू फ़िक्र से इतनी क्यों घुलती ? मैं क्या तुम सब लोगों की ज़िम्मेदारी लेने के लायक नहीं हूँ ? तुमको तो खुश रहना चाहिए । क्या बात हो गई है ? हर वक़्त चुपचाप कोने में बैठी रहेगी । बेबी कहाँ है ?”

“सो गया ।”

“नौकरानी ठीक है ?”

“हाँ ।”

तभी सावित्री ने पूछा,—“सिनेमा नहीं चलोगी जीजी ?”

“सिनेमा !” करुणा, उलझन में दुहरा बैठी ।

“कौन सा खेल है ?” डॉक्टर ने पूछा ।

“वेल्स का ‘थिंग्स टु कम’,” सावित्री का जवाब था ।

“मेरा तो एक ज़रूरी इंगेजमेन्ट है । तुम दोनों चली जाना । कार यहीं रहेगी । और डॉक्टर... ..।”

उसने छोटे डॉक्टर की ओर सम्बोधित किया ही था कि वह बोला,
“यहाँ आज कोई भी नहीं है । मेरा रहना तो ज़रूरी होगा ।”

“तब चलोगी न, जीजी ?”

“मैं तो न आ सकूँगी ।”

“क्यों ?”

तबीयत ठीक नहीं है ।”

“यों क्यों नहीं कहती हो, अकेले देखने की आदत छूट गई ?”
सावित्री ने गहरी चुटकी ली ।

डॉक्टर ने सारी बात अनसुनी करते, करुणा से पूछा, क्या तबीयत खराब रहती है ?”

“यों ही ।”

“तू बहुत फ़िक्र करती है । महेश तो अब क़रीब-क़रीब ठीक हो ही गया है । थोड़ी-सी कमज़ोरी बाक़ी है । ज़ल्दी ही उसे यहाँ ले आवेंगे । अभी कुछ दिन और लगेंगे ही । आठ-दस दिन की बात है ।”

करुणा चुप रही । सावित्री भी क्या कहती ? डॉक्टर ने अब पूछ डाला, “क्यों, तबीयत के बारे में नहीं बतलाया है ?”

“कुछ ह्रारत और सिर दर्द रहता है ।”

“नींद ठीक आती है ?”

“नहीं ।”

“तब नौकरानी को भेज कर दवा मँगवा लेना ” कह कर डॉक्टर ने अपने जेब से कागज़ का टुकड़ा निकाला और एक ‘प्रेसक्रिप्शन’ लिखकर उसे दे दिया ।

सच ही करुणा की तबीयत गिर रही थी । उसका जीवन उस सबल-हीन वृक्ष की तरह था, जो ज़रा तेज़ भोंके से ही गिर पड़ेगा । उसकी भीतरी पीड़ा बहुत फैल गई थी । खुद वह कुछ भी निर्णय नहीं कर पाती थी । इन सारी परिस्थितियों ने उसे बिल्कुल असमर्थ और मजबूर बना दिया था । भले ही वह अपने को कितना ही समझाना चाहती, कुछ ठीक नहीं लगता था । भीतरी विकार बहुत फैल गया था । वह तो अब सब कुछ छोड़-छाड़ कर दूर भाग जाना चाहती थी । उसे ज़िन्दा रहने में भी ख़ास खुशी नहीं है । अपनी परवाह वाला तकाज़ा भी अब साथ नहीं था । बार-बार एक डर उठता, अब—अब !

दोनों डॉक्टर उठ कर चले गये । सावित्री और वह वहीं बैठी की बैठी रहीं । उसके मन का गुबार सुलग चुका था । वह सिकुड़ गयी । सावित्री बोली, “जीजी !”

“क्या है ?” करुणा का दिल भारी हो रहा था ।

“जीजी ।” फिर सावित्री बोली ।

और करुणा फूट-फूट कर रोने लगी । सावित्री अवाक रह गई । उसकी समझ में कुछ भी बात नहीं आई । यह क्या हो रहा था ? वह कैसे उसे समझावेगी ? वह उन आँसुओं को देखकर डर गई । कहा फिर भी, “जीजी, क्या बात है ?”

अपने आँचल से आँसुओं को पोंछती हुई करुणा, गद्गद् स्वर में बोली, “कुछ नहीं ।”

“चलो रात हो आयी है ।”

करुणा ने इनकार नहीं किया । चुपके साथ हो ली । वे बँगले पर पहुँच गये थे । करुणा ने पूछ डाला, “कुसुम का बाग़ कहाँ है ?”

“वह सामने ।” सावित्री ने उँगली से दिखलाया ।

“चल, वहाँ चलें ।”

सावित्री तैयार हो गयी । चाँदनी खिली हुई थी । दोनों वहाँ पहुँच गये । करुणा ने जाली के भीतर नज़र डाली । एक काला हिरन दीख पड़ा । आगे कोई और जानवर भी खड़ा था । करुणा उसे पहचान नहीं सकी । अभी तक उसका मन उमड़ रहा था । वह खुद अपने इस व्यवहार से अनजान थी ।

दिन तो बीतते ही चले गये । महेश अच्छा हो रहा था । उस नियमित और सीमित दिनचर्या के भीतर करुणा सिकुड़ कर रह गयी । कई बार उसने कुसुम के पास जाना चाहा, कोई भी उसके बारे में कुछ नहीं कहता था । वह वहाँ न जा पाती । कोई नहीं ले जाता था । अधिक ज़ोर वह नहीं देना चाहती थी ।

एक दिन सुबह को वह महेश के कमरे में गयी । वह बैठकर कुत्ता कर रहा था । वह पास पड़ी कुरसी पर बैठ गयी । नर्स ने सुनाया, “आज

महेश बँगले चले जावेंगे। डॉक्टर साहब ने उनको वहाँ ले जाने की इजाज़त दे दी है।

करुणा कुछ भी नहीं बोली। यह वह जानती थी, उसीके खातिर डॉक्टर और सावित्री यह कर रहे हैं, कि वह खुश रहे। डॉक्टर अक्सर उसको बहलनाने के लिए, अब बार-बार घर पर आया करता था। नर्स के चले जाने पर वह बोली, “वे एक महीने की छुट्टी लेकर गये थे।”

“हाँ।”

“तब अब जल्दी ही आ जावेंगे। तेईस दिन तो हो गये हैं। बेकार तार की भंभट क्यों की जाय।”

“उनका पता भी ऑफिस से मिल जावेगा।”

“बँगले से कल फ़ोन करके पूछ लेवेंगे।”

“ठीक बात है।”

“कुसुम ने तुमको बचाया है।”

“डॉक्टर साहब की लड़की ने!”

“हाँ।”

“अपना खून देकर तुम्हारी रक्षा की है। खुद बहुत बीमार पड़ी है। अच्छी हो जाती, तो तुम दोनों…………।”

“कोई माने चाहे नहीं, तय कर लिया है।”

“डॉक्टर साहब बहुत भले आदमी हैं। हम लोगों की देख-भाल छोटे बच्चों की तरह वे करते हैं। एक लड़की कुसुम ही है। बस घर में अपना और कोई भी नहीं है।”

महेश कुछ भी नहीं बोला। तभी सावित्री कमरे में चली आयी। बोली, “अब बँगले में जाना होगा। आपके बिना जीजी भी रोती रहती हैं।”

यह बात महेश को डस गयी। यह कैसा मज़ाक वह सुन रहा है यह सब अब असह्य होता चला जा रहा था।

“सावित्री !” करुणा ज़ोर से बोली, जैसे कि वह सारी बातें उगल देगी।

तब महेश करुणा को देखता ही रह गया। लेकिन वह चुप थी आगे कुछ भी नहीं बोली। अब सावित्री कहाँ मानने वाली थी। फिर कहा, “बेचारी क्या करे ? परेशान हो गयी है। अकेले कौन गृहस्थ संभालना पसन्द करता है ? घर में कोई बड़ा-बूढ़ा तो चाहिए। क्या जीजी, भाई को तार दे दिया है ?”

“नहीं।”

“कई दिन से खुशामद कर रही हूँ। पता थोड़े ही बतलावेगी यही हाल रहा, तब तो मुझसे निभ ली। हम तो खुशामद करते-करते हार जाते हैं। कभी पेट भर कर खाना नहीं खावेगी। सारा बदन घुल गया है। अब आप ही समझाइएगा। भला हम कहने वाले कौन हैं ?”

करुणा के भीतर एकत्रित हुआ डर, सारे शरीर में फैल गया एक बार वह समूची सिहर उठी। उद्भ्रान्त हो गयी। वह कुछ भी सुनना नहीं चाहती थी। यह न जाने क्या हो रहा था ? भीतरी कम ज़ोरी की वजह बेहोश हो गयी। अब तो सावित्री ने उठते हुए कहा नाज़ुकों की बस्ती में आ पहुँची हूँ।” डॉक्टर के कमरे में चली गयी

डॉक्टर ने पूछा, “क्या है सावित्री ?”

“जीजी बेहोश हो गयी हैं।”

“कहाँ ?”

“महेश बाबू के कमरे में।”

उठकर, डॉक्टर साथ हुआ। करुणा बहुत कमज़ोर थी। डॉक्टर ने उसे वहीं सुला दिया। नाड़ी देखी। आँखों की पुतली उठाई। बड़

देर के बाद करुणा को होश आया। वह सटपटाती उठी। सबको देख कर लाज से गड़ गयी।

“क्या हो गया था ?” डॉक्टर ने पूछा।

“कुछ भी नहीं।”

“तुम सबके मारे आफ़त है। यही होगा। रोज़ कहता हूँ, लापरवाही ठीक नहीं होती है। सुबह ठंडे पानी से नहीं नहाना चाहिए। कोई अपनी परवाह नहीं करेगा। मैं किस-किस की देख भाल करूँ ! सावित्री, तू भी बातों के अलावा और कुछ नहीं करती है। यही हाल रहा, तब तो अस्पताल को छोड़-छोड़कर मैं भी किसी दिन चला जाऊँगा।”

सब चुप थे। कमरे में सन्नाटा था। डॉक्टर बहुत परेशान लगा। अब वह महेश से बोला, “अब तो ठीक हो गये हो न। कमर का दर्द भी हट गया होगा। बँगले में रहना अच्छी बात है। करुणा भी अकेली अकेली वहाँ घबराती है। अब तुम और सावित्री जानो ! मुझे तो एक मिनट की भी फ़ुरसत नहीं है। कोई सब बातें भी मुझे नहीं सुनाता है। सावित्री, बेबी कहाँ है ?”

“नौकरानी के पास बँगले में।”

“सुना वह भी दूध नहीं पी रही है।”

“किसने कहा ?”

“कुसुम कह रही थी।”

“कुसुम !”

“नौकरानी से उसने सुना है। अब बस ‘बेबी, बेबी !’ की रटन लगाये है। कल रात उसका कुत्ता मर गया।”

“मर गया !” सावित्री अचरज में डॉक्टर को देखती हुई रह गयी।

“वह मर गया है !”

“कैसे मर गया ?” अवाक् रह, करुणा ने सवाल पूछ डाला।

“कल रात कुसुम ने उसका गला घोट डाला है। वह बच्चा बड़ी देर तक चिल्लाता रहा। जब तक कि नर्स कमरे में पहुँची, वह मर गया था।”

सब चुप रहे। इस बात को सुन लेने के लिए जैसे कि कोई भी तैयार नहीं था। लेकिन डॉक्टर ने सावित्री से कहा, “कुसुम ने तुम्हें बुलाया है। अभी चली चल।”

“मैं भी चलूँगी।” करुणा साहस कर के बोली।

“अभी नहीं। उतावला होना ठीक नहीं है। तू भी चली जाना।” यह कह डॉक्टर ने नर्स को हिदायत दी कि, करुणा बँगले पहुँचा दी जावे। साथ ही एक नौकरानी हर वक्त उसके साथ रहे।

करुणा ने आनाकानी नहीं की। चुपचाप चली गयी। उसकी समझ में एक भी बात नहीं आयी थी।

सावित्री की समझ में यह भूल-भुलैया नहीं आया। उसकी सारी मनोवैज्ञानिक धारणाएँ व्यर्थ लगीं। वह ज़रा भी न जान सकी कि यह कैसा खेल हो रहा था। कुसुम तो एक पहेली साबित होती जा रही थी। वह कुसुम के कमरे में पहुँची। परदा हटाया। कुसुम बोली, “आओ रानी, तेरा स्वयंवर रचने की ठहरायी है। इसीलिए कुत्ता मार डाला है।”

“क्या?”

“अच्छा, पापा मुझसे बहुत नाखुश हैं न।”

“नहीं तो!”

“कल कुत्ता मुझसे मर गया।” सरलता से वह बोली।

“बात क्या हो गयी थी?”

“मुझे भी उसका ज्ञान नहीं है। कल रात स्वप्न में फिर महेश बाबू ने मेरा गला घोटना चाहा था।”

“महेश बाबू ने!”

“बात कुछ भी समझ में नहीं आती है।”

“क्या हुआ था?”

“कुछ नहीं। उनका हाथ मेरे गले पर पड़ा ही था, कि मेरी नाँद टूट गयी। तभी मैंने देखा, कुत्ते के बच्चे का गला मेरे हाथों में था। वह छुटपटाया। नर्स आ गयी थी। कुत्ता बचा नहीं, मर ही गया। वह उसे ले गयी थी।”

“फिर... ..।”

“और हाल मुझे कुछ भी मालूम नहीं है।”

“कुछ तो... ..।”

“मैं खुद आश्चर्य में हूँ। मैंने पिछले साल ही, उसे शिमला से मँगवाया था। और इस तरह उसका मर जाना ठीक बात नहीं हुई।”

“तू अब अच्छी हो रही है। कल छुट्टी के लिये लिख रही हूँ। मेरा तो फ़ाइनल है।”

“तो तू चली जा।”

“वाह, मैं अकेली क्या करूँगी। मेरी कुसुम साथ चलेगी तब न।”

“जीजी दवा देना। वक्त हो गया है।”

सावित्री ने एक डोज़ दवा निकाल कर दे दी। कुसुम ने पीकर कहा, “पापा की तबीयत भी ठीक नहीं रहती है। अब के बहुत कमज़ोर हो गये हैं।”

“तेरी बीमारी के कारण। करुणा भी बहुत कमज़ोर है। सब एक से ही हैं। अभी-अभी महेश बाबू के कमरे में उसे ग़श आ गया था। अच्छा अब आराम कर।”

“जीजी।”

“क्या है री?”

“पीड़ा कम नहीं होती है। न जाने क्या बात है? वह घाव बहुत

दुखता है। बाहर से सबके सब समझते हैं, ठीक हो गया। अन्दर लगता है, चुभ रहा हो।”

“यह तेरा भ्रम है।”

“तब क्या मैं झूठ बोल रही हूँ? जाने दो। अपनी बात अब तुझ से भी नहीं कहूँगी।”

“कुसुम!”

“सच बात है वह! भारी पीड़ा होती है। पापा से कहते डर लगता है।”

“डर!”

“पापा बहुत दुखी हैं, सावित्री जीजी।”

“कुसुम!”

“मैं उनको ठीक सुख नहीं देती हूँ। क्या करूँ? उनको इस उम्र में क्या इतनी मेहनत करनी चाहिए थी?”

“तू अच्छी हो जा। यही उनकी खुशी है। और अब चिन्ता की कोई बात भी नहीं है। सो जा तू।” कहकर सावित्री चली आयी। उसके दिल में भारी उमस उठ रही थी।

सावित्री अब डॉक्टर साहब के कमरे में पहुँची। देखा, वह माइक्रोस्कोप से कुछ देख रहे थे। सावित्री को देखकर बोले, “यह देख।” और यंत्र उसके हाथ में दे दिया।

“देख लिया तूने? वह हरे रंग की धरती पर, गुलाबी टी० बी० के कीटाणु हैं। तू तो उनको रँगने का तरीका जानती होगी। लेकिन एकाएक टी० बी० भी उनको नहीं कहा जा सकता है। आजकल तो एक रोग और दूसरे रोग के कीटाणु मिलकर, और नए-नए रोग पैदा कर रहे हैं, ठीक सा अन्दाज़ लगना कभी-कभी, इसी लिए मुमकिन नहीं होता है।”

सब सुनकर सावित्री बोली, “कुसुम ने जान कर कुत्ता नहीं मारा है।”

“यह तो मेरा भी अन्दाज है। लेकिन वह स्वप्न में भी अब चलती है। यह नया रोग शुरू हो गया है, अचैतन्य अवस्था में घबड़ा करके उसने उसका गला घोट डाला। जब चैतन्य हुई तो भौचक्की रह गई, यह हाल है न !”

“बात आखिर क्या है ?”

“कोई भी आश्चर्य नहीं, परसों रात वह निद्रा-अवस्था में ही उठ कर, महेश के कमरे तक गई थी। शायद उससे पहले भी वह उसी तरह कमरों को ढूँढ़ती हुई वहाँ पहुँची होगी। भीतर न जा सकी, दरवाज़ा बन्द था। यह रोग भी हो जाता है। कुछ भी असाधारण बात नहीं। कुत्ता मारने के बाद वह उससे अब मुक्त हो गई है।

डॉक्टर और सावित्री बँगले पर पहुँचे। बेबी का रोग सुना, करुणा उसे डाँट रही थी। भीतर पहुँच कर डॉक्टर बोला, “वही बात है। करुणा का मिजाज खराब हुआ नहीं कि, बच्चे की मरम्मत शुरू हो जाती है। बच्चों की आदतें कहीं आज तक मारने से भी सुधरी हैं ? इससे उनका स्वभाव भी चिड़चिड़ा पड़ जाता है।”

ऊपर पहुँच कर डॉक्टर ने पूछा, “महेश बाबू कहाँ हैं ?”

“लेट गये हैं।”

“तभी तुमने यह बिना टिकट के तमाशा शुरू करने का मौक़ा ढूँढ़ा है न, जीजी।” सावित्री ने चुटकी ली। बच्चा उससे अपनी गोदी में लेकर बोली, “बेबी राजा है ! वह सो जायगा !!” उसे सुलाने लगी। डॉक्टर नीचे चले गये थे। करुणा बैठी रह गई।

अगले दिन को दोपहर में करुणा ने महेश से कहा, “ऑफ़िस में फ़ोन से पता पूछ लो न।”

“अच्छा, फ़ोन मँगवा देना।”

“नौकर ने फ़ोन लगा दिया था। महेश ने डायरेक्टरी में नम्बर देखकर फ़ोन किया। पूछा कि उनका कोई खत आया है। पता लगने पर कि एक महीने की और छुट्टी बढ़वा ली है, पता पूछ कर, उसने लिख लिया।

अब करुणा के दिल का भार उतरा। वह हल्की हुई, उसने एक पत्र लिखा और डाक में छुड़वा दिया। वह बहुत खुश थी। महेश पलंग पर लेटा हुआ था। करुणा ने उदास महेश की ओर देखा। वह बोला, “करुणा, मेरे कारण तुमको बहुत तकलीफ़ उठानी पड़ी है।”

“मुझे !” करुणा ने भिन्न कर महेश की ओर देखा। और बात कह नहीं सकी।

“न जाने क्यों यह सब तुमको देखना लिखा हुआ था ? अब मैं तुम्हें जल्दी ही खाना कर देना चाहता हूँ। भोला को बुलवा कर अपना सारा सामान वगैरह ठीक करवा लेना। मैं जल्दी ही अपने मकान पर चले जाने की सोच रहा हूँ। तुम यहाँ सावित्री के साथ रहना। यह उचित भी होगा।”

“लेकिन आपको डॉक्टर साहब नहीं जाने देंगे।”

“उनका यह इतना श्रृण ही क्या कम है ?”

“उनको भी दुख पहुँचाना ठीक नहीं होगा। उधर कुसुम की हालत बहुत शोचनीय है। मैं अभी तक उसे नहीं देख सकी हूँ। तुम्हारी यह ज़िन्दगी भी अपनी नहीं है—कुसुम की है। तुम्हारे और मेरे लिए वह लड़की यह करने उतारू हो गई। भगवान से रोज़ उसकी आरोग्यता के लिए प्रार्थना करती हूँ।”

“करुणा, क्या फिर कभी मेरे घर आओगी ?”

“तुम्हारी शादी में—ज़रूर !”

“मेरी मौत के बाद न।” महेश फीकी हँसी हँसा।

“क्या ?”

“यह गणना कभी मत करना, करुणा । कभी फिर पति के साथ ज़रूर आना । ज़रूरत पड़ने पर, दुनिया में जब बहुत थक जाऊँगा, तब तुम अपनी गृहस्थी में जगह दोगी न ?”

“तुम बावले तो नहीं हो गये ?”

“अक्सर सोचता था, कोई स्वस्थ गृहस्थ मिल जाता; वहीं चैन से पड़े रहने की चाहना मुझे थी । आकांक्षाहीन जीवन से ऊब गया था । अपने को बहुत टटोलने के बाद, मैंने कमज़ोर पाया । अपने से ढूँढ़ने की चेष्टा की, असफल रहा । किसी से मेल खाना नामुमकिन है । अपनी अस्वस्थता में अनायास तुम मिल गयीं । यह मेरा सौभाग्य था ।”

“महेश बाबू !”

“सामर्थ्य होती, करुणा, तुमको बेड़ियाँ डालकर अपने पास रख लेता । इस समाज का ख्याल तभी अनायास मुझे हो आता है । एक नैतिक रुकावट भी उसमें है । तुम मुझे पार्षी तो नहीं समझती हो करुणा ? कुछ समझ लेना । मैं प्यार को नहीं मानता । प्रेम भी अमीरों के चक्कलस की चीज़ है । मुझे अपनी सी एक लड़की चाहिए, उसके लिए, अब तक ढ़ढ़ नहीं की, अब आगे ही भला क्यों करूँगा ?”

“मैं भीतर आ सकती हूँ ।” कह कर, सावित्री भीतर चली आई । करुणा को उसने उबार लिया । महेश क्यों इस तरह अपने को उसके आगे समर्पित कर रहा था, वह न जान सकी । पूछा, “क्या है सावित्री !”

“दिन भर कितनी बातें करते रहोगे, जीजी ?”

“तेरी और कुसुम की शादी की सोच रहे थे ।”

“हम तो अपना स्वयंवर कर चुकी हैं । जीजी तुम्हारा तो और काम थोड़े ही है । बेबी को रलावोगी । उसे धमकाने की विद्या भी सीख गयी हो । मैं सब बातें जानती हूँ । यह सब करतब अब मुझे नहीं सुहाते हैं । आज बाज़ार चलोगी ?”

“क्यों ?”

“यों ही घूमने ।”

“वहाँ क्या होगा ? मैं न जा सकूंगी ।”

“यों क्यों नहीं कहती हो, घर छोड़ने का तबीयत नहीं करती है ?”
चलना पड़ेगा तुमको । बाज़ार से बेबी को कपड़े भी लाने हैं ।”

करुणा कुछ जवाब दे कि महेश बोला, “चली न जाओ । रोज़ काँई थोड़े ही जाना होता है ।”

मन में अपनी समूची बात दबा, करुणा तैयार हो गयी । जल्दी-जल्दी कपड़े बदले और दोनों कार पर बैठ भी न पायी थीं, कि डॉक्टर आ पहुँचा । पूछा, “कहाँ जा रही हो सावित्री ?”

“बाज़ार ।”

“मुझे भी चलना है ।” और साथ हो लिए ।

फिर वही डॉक्टरों बातें । करुणा तो उस सब से ऊब जाती है । वे सब बाज़ार पहुँच गये ।

सावित्री ने कई चीज़ें खरीद लीं । करुणा चुप थी । डॉक्टर ने पूछा,
“तू कुछ नहीं लेगी करुणा ? यह भी अच्छी बात है ।”

और सावित्री अपनी जीजी के लिए खुद ही खरीदारी करने में मशगूल हो गयी । करुणा के मना करने पर भी, उसके लिए बहुत सी चीज़ें जमा हो गयी थीं । डॉक्टर के आगे वह मना नहीं कर सकी । उनके मान और आदर का सवाल था । वह तो उम्र में बहुत छोटी है । डॉक्टर को भी वह भली-भाँति पहचान गयी थी । यही उनका अब बचा हुआ उत्साह था । कुसुम यदि साथ होती ………

कि डॉक्टर बोला, “करुणा, अब से हर साल तू यहाँ कम से कम दो-तीन महीने ज़रूर चली आना । कै साल मुझे और जीना है ?”

“जीजी, जब हमारी छुट्टियाँ हों तब आना । न हो कि सारा माल अकेले-अकेले उड़ा जाया करो ।”

करुणा भी हँस पड़ी। ज़वाब दिया “सिर्फ़ पेट ! क्या खावेगी तू ? तेरी शादी के भार से भी अभी हमें बरी होना है न।”

“मैं तो अपने-आप ढूँढ़ लूँगी जीजी, तुम चिन्तित क्यों होती हो।” सावित्री मुस्करायी।

“दुर पगली, बेहया कहीं की। जो मन में आया कह दिया। शील और लिहाज जैसे कि कुछ है ही नहीं।”

“महेश के लिए कुछ !” डॉक्टर ने पूछा ही था, कि करुणा ने बात काटी “कुछ नहीं चाहिए।”

सावित्री भला मानने वाली थी। बोली “गुड्डा ले जावेंगी।”

करुणा हँस पड़ी। डाक्टर चुप न रह, मुस्कराकर बोले “वही वेल्स की दुनिया की बात सोच रही है।”

“और गुड्डे की ज़रूरत तो तेरे लिए है सावित्री। “करुणा ने कहा।

“मैं तो ले जाऊँगी। आप लोग चाहे जो कहें।” और कह कर, सावित्री ने दूकान पर से एक खिलौना खरीद लिया।

मन ही मन करुणा हँसी। सावित्री का यह व्यवहार अच्छा लगा। अपने उत्तरदाइत्व की अपेक्षित बातों को वह भली भाँति पहचानती थी। सब लोग घर लौट आए।

रात को डाक्टर साहब महेश के कमरे में बैठे हुए थे। महेश चुपचाप लेटा ही रहा। अब बोला “मुझे तो आप मकान जाने की इज़ाजत दे दीजिए।”

“क्यों, बात क्या है ?”

“काफी मेहमानदारी हो ली।”

“अभी नहीं।”

“करुणा यहीं रहेगी।”

“तुम दोनों को यहीं रहना पड़ेगा। वहाँ का डेरा-झण्डा छोड़ दो।”

महेश चुप हो गया। वह सारी बातें कह सकता, ठीक होता, अभी नहीं कहेगा। करुणा के पति के आने पर सावित्री की मज़ाक उड़ाने यही एक सही हथियार उसके पास है। उधर सावित्री का कुछ भी काम नहीं था। करुणा कितनी हँसे। वह कालेज़ में पढ़नेवाली लड़की और कहाँ करुणा ! उसकी बात-चीत में जीवन भरा हुआ था। और महेश उस कुसुम को कब पहचानता था। वह कुसुम कैसी होगी ? क्यों कुसुम ने उसे व्यर्थ जीवित रखना चाहा है ? यह कैसा तमाशा है। वह उस जाल के बीच फँसता-फँसता जा रहा है। जैसे कि करुणा के माफ़त हर एक तक वह सहज ही पहुँच सकता है। उसे कोई भय अब क्यों नहीं !

—अगले दिन तड़के, महेश हाथ-मुँह धोकर लेटा हुआ था। सावित्री उसी ओर आ रही थी। वह आँखें मूँद कर लेट गया। सावित्री ने नौकरानी से कमरा ठीक करवा, दवा वगैरह सँवार कर रखवा ली। एक बार टकटकी लगा, महेश को देखा। एक होशियार डाक्टरनी की तरह वह उसे पढ़ रही थी। फिर चुपचाप अखबार उठा सोफ़ा पर बैठ कर पढ़ने लग गई। आखिर महेश ने करवट बदल, आँखें खोल डालीं। सावित्री बोली, डॉक्टर साहब इन्जक्शन देने को कह गये हैं।

“तो तुम डॉक्टरनी की हैसियत से आयी हो।”

“हाँ।” कह कर उसने सब समान ठीक कर लिया और इन्जक्शन दे दिया।

कि करुणा कमरे में आकर बोली “क्या हो रहा है, सावित्री ?”
“फ़ीस तुम ही वसूल कर लेना जीजी।” और अखबार पढ़ने लगी।

महेश ने पूछा “कुसुम कैसी है ?”

“डॉक्टर साहब के कहने के मुताबिक फ़ायदा है।”

“क्या बीमारी है ?”

“ठीक अन्दाज़ कोई भी नहीं लगा पाया है। इसलिए इलाज बदलने पड़ते हैं। फ़िलहाल वैसे डरने की बात नहीं है। कुछ दिन अच्छे होने में लगेंगे। एक रोग अच्छा होता नहीं है कि दूसरा पकड़ लेता है।”

नौकरानी आकर बोली “नाश्ता ले आऊँ।”

“ज़रूर।” सावित्री ने कहा और कहती रही, “अभी आपको बहुत परवाह करनी पड़ेगी। रोग के दिनों से, रोग के बाद अधिक होशियारी चाहिए। ज़रा असावधानी हो जाने पर ही और नये रोगों को नहीं तो पैदा होते कै दिन लगते हैं।”

“तू डॉक्टरनी है फिर हमें कुछ भी डर नहीं। घर के डॉक्टर से यही फायदा होता है।” करुणा ने मौक़ा पा कहा।

“लेकिन जीजी वे मेरे मरीज़ नहीं हैं। तुम्हारे होंवेंगे या डॉक्टर साहब के। हम दूसरों के मरीज़ों को अपने हाथ में कम लेती हैं। यह हमारे पेशे के शान के खिलाफ़ बात है। और फ़ीस भी हमारी बहुत होती है।

“उसका कोरा दस्तख़त चेक मैं डॉक्टर साहब के आते ही दिलवा दूँगी।” यह कह करुणा चुप हो गई। अधिक बातें करने की आदत जैसे कि भूल गयी हो। और न छेद-छेद कर बातें निकालने का उत्साह ही उसे था।

सावित्री फिर बोली “तुम तो अभी नहायी नहीं हो न जीजी वैसे चाय पीने में अपत्ति न होनी चाहिए। फैशन का तकाज़ा है।”

“तुम मलेच्छों के साथ भला क्या नीति-नियम चल सकता है। तुम्हारे मज़हब को मैंने भी अपना लिया है।”

“तो अब सब एक से हो गये।” महेश उत्साह से बोला।

अब करुणा ने कहा ही “कल रात बेबी के कारण नींद नहीं आयी।”

“क्यों ?” महेश का सवाल था ?

“जुकाम लग गया है ।”

“मौसम बदल रहा है । नौकरानी दिनभर हवा में उसे फिराती रहती है । कुछ देखती तो हो नहीं ।”

“मैं ?”

“तब क्या हम देखेंगे ।”

“सावित्री रानी का काम है यह ।” करुणा मुस्करायी ।

“महेश बाबू जीजी आपके लिए एक चीज़ खरीद कर लायी हैं ।”

“मेरे लिए ?”

“कल हम बाज़ार गए थे ।”

“क्या लाई हो करुणा ।”

“क्या लाती और । एक खड़ का गुड्डा है ।” सावित्री खिलखिलाकर हँस पड़ी ।

इस हँसी से महेश अप्रतिभ नहीं हुआ ।

“यह दबाने से जीभ बाहर निकालता है ।”

“चल दुत्ती कहीं की” करुणा उठकर बाहर चली गयी ।

चलचित्र की तरह, छोटी-छोटी घटनाओं से बननेवाले दिनों का हाल, वैसे किसी भी तमाशे से कम नहीं है उसको व्यर्थ और अर्थहीन कह, अपने को धोखा देना ठीक नहीं होता है। अपना सारा स्वार्थ संवार लेने पर ही आदमी व्यवहार कुशल होता है। इसीलिए रोज़ाना जीवन का हिसाब उसे टटोलना ज़रूरी हो जाता है। और उसके पास कुछ भी बाकी नहीं बचा हुआ है। करुणा को पति का कोई भी ज़याव नहीं मिला। वह उदभ्रान्त हो उठी थी। पति को सारा भेद लिख देने के बाद अब उसके पास कुछ बाकी नहीं बच गया था। कई बार घबड़ाहट और परेशानी में चकित हो, वह कुछ ठीक-सी बात जान लेना चाहती थी। लेकिन सब कुछ लगती, केवल एक कहानी। इस सारे आश्चर्य-पूर्ण बरताव पर वह खिन्न हो उठती। शायद पत्र नहीं पहुँचा हो। पता भी गलत तो नहीं था। सन्देह क्यों वह करती है। वह फिर दूसरा पत्र लिखेगी। इस तरह पराये घर में अब एक मिनट भी रहने के लिए वह तैयार नहीं है। यह अब नहीं हो सकेगा।

उस दिन महेश चुपचाप बाग़ में बैठा हुआ था। सावित्री कुछ ज़रूरी ख़रीददारी करने के लिए बाज़ार चली गई थी। चिन्तित-सा महेश न जाने क्या सोच रहा था। करुणा ने उसके जीवन में पसर अपने लिए घोंसला बना लिया था। उसने कभी भी उसे मना नहीं

किया । लेकिन करुणा वहाँ सर्वदा नहीं रह सकती थी । उसका चला जाना ही उचित है । वह करुणा फिर इतनी तीव्रता से उसके जीवन में क्यों आयी है । उसे जीवन देकर, अब खुद भागकर चली जावेगी । आगे फिर वही-वही जीवन ! वही पुराना रोग उभर आया—बेकली और छुटपटाहट ? वह यदि चाहे, फिर भी करुणा को रोक नहीं सकता है । उसका यह अधिकार नहीं है । यह मान्य कब है । वही उसका पुराना जीवन—ऑफिस, भोला और..... ।

“ओस पड़ रही है । यहाँ क्यों बैठे हो ।” करुणा आकर बोली ।

महेश क्या जवाब देता !

“चिट्ठी का जवाब भी नहीं आया है ।”

“शायद वे खुदही चले आवें । अब तुम्हारे जाने का इन्तजाम होना चाहिए ।”

“कुछ दिनों के लिए तुम भी न साथ चले चलना ।”

“मैं ! नहीं—नहीं ।”

“क्यों क्या बात है ?”

“आगे फिर आ जाऊँगा । फिलहाल सब ठीक है ।”

“कब तक आओगे ।”

“कैसे वादा कर लूँ ।”

“कुछ दिनों में हम ही यहाँ लौट आवेंगे ।”

“तुम्हारे यहाँ क्या कभी आना ज़रूरी होगा, करुणा !”

“क्या वह तुम्हारा घर नहीं ? मैं गैर हूँ । इतने दिनों तक व्यर्थ तुम्हारे यहाँ पड़ी रही हूँ ।”

“सब मिथ्या था ।”

“क्या ?”

“आदमी को ज्यादा नहीं फैलना चाहिए । वह सब दुरुस्त नहीं । अपनी पहचान जितनी कम हो, दुरुस्त है । उससे अधिक पीड़ा मन में नहीं होती है ।”

“अब तो दार्शनिक बन गये हो । अब के जाड़ों में अब भगोया पहनना छूट जावेगा । कोई ठीक-सी लड़की नज़र नहीं पड़ती । डॉक्टर साहब से कुसुम का जिक्र पीछे करूँगी ।”

“कुसुम !”

“उसी के अहसान से तुम ज़िन्दा हो । भारी दुख में उसी ने मुझे भी सहारा दिया है । सावित्री और कुसुम न होतीं तो एक दिन भी काटना नामुमकिन हो जाता । मुझे फिर भी भारी डर लग रहा है । कुसुम बहुत बीमार है ।

वह कुसुम कहाँ है । इसका कोई भी ज्ञान महेश को नहीं था । न उसका कोई चित्र बनाने में ही वह सफल होता । कुसुम और सावित्री ! वह दोनों डॉक्टर की गृहस्थी की कुतूहल थीं । वह जीवन की पैठ लगा, उसी का निरर्थक स्वप्न देखना नहीं चाहता था । आँधी के बीच, तिनके कि तरह वह करुणा उसके जीवन में आयी । वह तिनका अब उसके दिल की भावुकता के बीच तैर रहा था । भारी खलबली मचती । अब आगे वह जगह खाली रहेगी । वह खुद ही वहाँ तैरेगा । दुनिया में उसका अपना कोई भी नहीं है । वह भारी एक भूल की तरह हर एक को अपना नहीं कहेगा । इस करुणा को, उसका पति आकर अपने साथ ले जावेगा । वही इसका आदर है । एक महीने से अधिक उसने महेश को संभाला था । वह उस नारित्व को पहचानता है । वह जिन्दा रहने का आदी है ।

वह सावित्री ! फिर वह आ गयी । बोली “करुणा जीजी कैरम खेलोगी ।”

“खेलने की उम्र अभी तेरी ही है ।”

“और तुम तो जैसे कि दिन भर पंखा भलती रहती हो।”

“यह तो कोई खेलने का वक्त है नहीं।” करुणा खीजकर बोली।

“मैं अभी खरीद कर लाई हूँ। अच्छा मुहूर्त है ही। खेलना पड़ेगा।”

“बिना खेले मुहूर्त टलेगा नहीं।”

“अच्छा महेश बाबू आप जीजी को इज़ाज़त दे दें, वह आपका हुकम मान लेगी। ऐसे तो उठने की नहीं है।”

महेश ने कुछ नहीं कहा। करुणा ने तब ज़वाब दे दिया, “यही क्यों नहीं ले आती है, तुम दोनों खेलना।”

“दलील करने के अलावा और तुम्हारा कोई काम थोड़े ही है।”

सावित्री खड़ी ही थी कि नर्स आकर बोली, “डॉक्टर साहब ने बुलाया है।”

“वे कहाँ हैं?”

“ऑफिस में।”

“क्या कोई नया ऑपरेशन होने वाला है।”

“नहीं।”

“और कौन साथ है?”

वे अकेले ही बैठे हुए हैं।

सावित्री वहाँ पहुँची। डॉक्टर साहब अकेले बैठे हुए थे। बोले, “मैंने तुमको बुलाया है।”

“क्या बात है डॉक्टर?”

“तुम बाज़ार से कब लौटी हो।”

“अभी आयी हूँ।”

“एक बात सुनानी थी।”

“क्या डॉक्टर?”

“करुणा महेश की पत्नी नहीं है।”

“तब ?”

“यह भेद कोई भी नहीं जानता है ।”

“डॉक्टर !”

“अभी-अभी कुसुम ने मुझसे यह बात कही । यह बात वह पहले से ही जानती थी । महेश बाबू के नौकर से मालूम हुआ था ।”

“कुसुम क्या कहती है ?”

“अधिक वह भी नहीं जानती ।”

“यह बात ठीक होगी डॉक्टर ! इसी वजह से जीजी भीतर बहुत दुखी है । वह कुछ नहीं कहती । मज़ाक करने पर बार-बार कुम्हला जाती है । मन-ही-मन जैसे कि बात कुरेदती हो । तब क्या है यह सब ?”

“वे दोनों उसे छुपाकर रखना शायद न भी चाहते हैं । या कहने मौका ढूँढ़ रहे होंगे । यही मैं सोचता हूँ । नहीं, यह करुणा महेश की इतनी अधिक परवाह न करती ।”

“डॉक्टर कुसुम का क्या हाल है ?”

“फिर ऑपरेशन करना पड़ेगा ।”

“ऑपरेशन !”

“मेरा अपना यही इरादा है । उस जगह पर वह बहुत दर्द बतलाती है । बिना चीर-फाड़ के वह हटेगा नहीं । और लोग इसके खिलाफ़ हैं । उनका कहना है कि वह बहुत कमज़ोर है । एक और वज़ह है । यदि ऑपरेशन ज़ल्दी नहीं होगा, तो ज़हर सारे शरीर में फैल सकता है । फिर सारे दिमाग़ को भी वह ज़हरीला बना देवेगा और मौत अनिवार्य है ।”

“ऑपरेशन ! उसका टेम्परेचर तो कम नहीं हो रहा है ।”

“कोई हर्ज नहीं। उसे हम ‘नार्मल’ कर सकते हैं। मुझे ज़रा भी दिक्कत इन सब में मालूम नहीं हो रही है। यह बहुत नाज़ुक केस है। इसीलिए मैं खुद ही ऑपरेशन करने की सोच रहा हूँ।”

“डॉक्टर !”

“क्यों सावित्री ! क्या डर लग रहा है ? इस पेशेवाले को सेन्टि-मेन्टों और बहम को भुला देना चाहिए। हजारों मरीज़ों के ऑपरेशन के बाद, यह भी करना पड़ेगा। कोई बड़ी बात नहीं। हर एक सर्जन अपना पूरा-पूरा उत्तरदाइत्व जानता है।”

“कुसुम क्या कर रही है ?”

“रेडियो पर गाने सुन रही थी।”

“अकेली !”

“नहीं, छोटा डॉक्टर साथ है।”

“मैं उसे देख आती हूँ।”

“तब छोटे डॉक्टर को यहाँ भेज देना अभी मैं फोन से और डॉक्टरों की राय भी लेना चाहता हूँ।”

छोटे डॉक्टरों को भेजकर, सावित्री कुसुम के पास बैठ गयी।

कुसुम ने बात शुरू की, “मैं जानती हूँ जीजी, तुम क्या पूछने आयी हो ?”

“क्या कह रही है तू कुसुम ?”

“महेश और करुणा की बातें...।”

“करुणा की !”

“महेश उसका पति नहीं है। वह किसी मज़बूरी के कारण उनके साथ चली आयी है। महेश खुद बहुत घबड़ा गया है। करुणा का पति जीवित है।”

“ज़िन्दा !”

“अन्यथा वह अपना सुहाग क्यों बनाये रहती ।”

“तब महेश उसका कौन है ?”

“मैं खुद नहीं जानती हूँ ।”

अब सावित्री ने सारी परिस्थितियों पर दृष्टि फेरी । कुछ समझ में बात नहीं आ रही थी ।

सावित्री को चुप देखकर, कुसुम बोली “लेकिन अब वे एक-दूसरे को ठीक-ठीक पहचान गये हैं । मैंने जानकर भी करुणा से कोई बात नहीं पूछी । मैं उनके बीच झगड़ा नहीं डालना चाहती हूँ ।”

“जाने दे उन बातों को । अब तेरी पीड़ा तो ठीक है न ।”

“मेरी पीड़ा कम नहीं होती । घाव भीतर ही भीतर दुखता चला जा रहा है ।”

“बहुत पीड़ा होती है ।”

“सब सह नहीं सकती हूँ । मैंने पापा से आपरेशन करने को कहा है ।”

“उनसे ?”

“वे ही मेरी पीड़ा को ठीक-ठीक पहचान सकते हैं । और किसी पर मेरा विश्वास नहीं है ।”

“कुछ दिन बाद वह होगा ।”

“लेकिन जीजी करुणा और महेश से यह बात मत कहना । पापा से भी मना किया है ।”

सावित्री उठकर चली आयी । वह क्या कहे । करुणा और महेश के बीच बार-बार वह एक स्नेह और संगापन पाती थी । वे दोनों किस समझौते के बल पर खड़े हैं—यह वह नहीं जान सकी ।

करुणा के पति का ज़वाब आ गया । करुणा खुश थी । उसके मन का सारा बहम हट गया । आजकल हरवक्त वह हँसती ही रहती

है। सावित्री ने सारा अन्तर भांप कर भी कुछ नहीं कहा। वह अपने आप सवाल उठाना नहीं चाहती थी।

कुसुम का टेम्परेचर कम नहीं हो रहा था। एक दिन महेश कुसुम के पास गया। उसका ऑपरेशन होने वाला था। वह सुस्त चारपाई पर लेटी हुई थी। महेश को देखकर बोली, “बैठिए।”

महेश बैठ गया। एक बार उसने कुसुम को अच्छी तरह देखा। फिर कहा, “आपका श्रृणु आजीवन नहीं चुका सकूंगा।”

“वह तो मैंने अपना कर्तव्य किया है। अच्छा एक बात पूछूँ, आप सही सही ज़वाब देंगे!”

“क्या?”

“जीजी से आपका क्या रिश्ता है?”

“कुछ भी नहीं।”

“फिर वह आपके साथ कैसे चली आयी है।”

महेश ने सब कुछ कह सुनाया। और कुसुम तपाक से अब बोली, “मुझे माफ़ कीजिए।”

“क्यों।”

“मैंने कुछ और ही सोचा था।”

“फिर भी मुझे जीवित रखना आपने मुनासिब समझा।”

“जीजी की वजह से।”

“करुणा की!”

“वह आपके लिए बहुत चिन्तित थी।”

“मेरी……!”

“उसी के लिए मैंने यह सब किया है। समझा वह उसकी कोई विवशता होगी। आपके लिए मेरे दिल में बिल्कुल भी दया नहीं थी। नारी-नारी को पहचान कर, उसके लिए अपने को निछावर कर सकती

है। आपके लिए भारी धृणा मेरे मन में पैदा ही गयी। तब भी मैं लाचार थी। और यह मेरा अहसान नहीं है।”

“तुमको अच्छा हो जाना चाहिए कुसुम, यही हर एक की इबादत है। करुणा भी अब चली जावेगी।”

“मैं खुद ही रोगी हुई हूँ। बार-बार मुझे बुरे स्वप्न होते थे। हर बार पाती कि आप मेरा गला घोट रहे हैं।”

“मैं !”

“आपके प्रति जो भावना मेरे मन में पैदा हुई थी, उसको आकार बनते अधिक देरी न लगी। जब आप बेहोश टेबुल पर पड़े थे, तब मैंने आप का खून देखा था।”

“कुसुम !” डॉक्टर भीतर आकर बोला।

“क्या है पाप ?”

“ऑपरेशन नहीं होगा।”

“क्यों पापा ?”

“सब की यही राय है। वे नहीं चाहते कि मैं ऑपरेशन करूँ !”

“तब पापा मैं मर जाऊँगी। जब तुमको मेरी जिन्दगी का भरोसा नहीं, तब क्यों व्यर्थ का धीरज बँधाया करते हो।”

“आगे फिर ऑपरेशन की देखेंगे।”

“मैं यह पीड़ा नहीं सह सकती हूँ पापा। आप ऑपरेशन करें। क्या अब आपको अपने हाथों पर विश्वास नहीं रह गया है।”

“मुझे कुसुम !”

“हाँ पापा।”

“तब मैं ऑपरेशन करूँगा। परसों होगा।”

महेश बुत की तरह खड़ा का खड़ा ही रह गया था !

उस दिन ऑपरेशन होने वाला था। सब लोग एक भारी फैसला सुनने को तैयार थे। सुबह की गाड़ी से करुणा का पति आ पहुँचा। उसे देखकर, डॉक्टर और सावित्री किसी को भी आश्चर्य नहीं हुआ।

दिन को सब चुपचाप बैठे हुए थे। एकाएक डॉक्टर कमरे में आया तेज़ी से बोला, “कुसुम मर गयी है।”

“मर गयी !” सावित्री ने आश्चर्य से दुहराया।

“उसका टेम्परेचर एकाएक बढ़ गया। वह ऑपरेशन टेबुल पर पड़ी है।

सावित्री उठकर बाहर चली गयी। वहाँ से वह दौड़ी-दौड़ी ऑपरेशन रूम में पहुँची। कुसुम को नर्स ने सुफेद चादर के ढक लिया था।

डॉक्टर बोला, “तुम भी जा रही हो करुणा।”

करुणा चुप !

“ठीक है चली जाओ। अब यहाँ रहना बेकार है। मुझ में किसी की भी हिफाज़त करने की सामर्थ्य बाकी नहीं है।”

सच ही एक दिन करुणा अपने पति के साथ जा रही थी। डॉक्टर, सावित्री और महेश उसे स्टेशन पर पहुँचाने चले आये। गाड़ी पर चढ़ने से पहिले करुणा ने डॉक्टर के पाँवों की धूल माथे से लगा ली। डॉक्टर ने पूछा “अब कब आओगी करुणा।”

“सावित्री और महेश की शादी में।”

डॉक्टर ने पागल की तरह सिर हिलाते कहा, “ज़रूर आना !” सावित्री ने महेश को देखा !

वह मौत के प्रतीक की तरह अवाक़ खड़ा था।



मूल्य १)

